Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Ravinder Ki Khaniya

रवीन्द्र की कहानियां

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की

सर्वोत्तम कहानियों का

संग्रह

Robinder nath Takur

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

Rajpal

राजपाल एण्ड सन्ज़

अनारकली — लाहौर

Rajpal and Sons Lahore

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशकः—

श्री विश्वनाथ एम० ए०

राजपाल एण्ड सन्ज

अनारकली लाहौर।

Acc: No 15907

Rs 3-3-0

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

169

मुद्रक—

मि० जे० ऐस० पाल,

बसन्त प्रिंटिंग प्रेस,

गणपत रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

587
A157

कहानी-क्रम

संख्या	नाम	पृष्ठ संख्या
१.	प्रेम पुजारिन	५ 25
२.	मालिक	३० 17
३.	काबुली वाला	४७ 16
४.	अनारकली	६३ 30
५.	अतिथि	९३ 36
६.	मास्टर साहिब	१२९ 48
७.	परित्यक्त	१७७ 18

63
47
5

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१. प्रेम पुजारिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेम-पुजारिन

दार्जिलिङ्ग गया तो देखा, बदली छाई है, पानी बरस रहा है। न तो घर के बाहर पैर रखने की इच्छा होती है और न घर रहने को ही जी चाहता है।

प्रातः होटल में भोजन करके पैर में मोटा बूट और सिर से पैर तक मैकिण्टश् पहनकर घूमने बाहर निकला। टप्-टप् पानी बरस रहा है; चारों ओर घना बादल छाया रहने से जान पड़ता है मानों विधाता हिमालय समेत सारे भूचित्रको रबड़ से रगड़-रगड़ कर मिटा डालने की चेष्टा कर रहे हैं।

सूनी कलकत्ता रोड पर टहलते हुए मैं सोच रहा था कि इन अवलम्बन रहित मेघों के राज्य में अब तो अच्छा नहीं लगता।

इसी समय पास ही किसी स्त्री के रोने की आवाज सुन पड़ी। रोग-विषाद-पूर्ण इह लोक में रोने की ध्वनि कुछ विचित्र नहीं है; तो भी सम्भवतः कहीं और अन्य समय होता तो शायद मैं उधर ध्यान भी न देता—किन्तु इस बरसात की रिमझिम में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
उस रोने की ध्वनि में सारे संसार का एक स्वर रुदन की तरह कानों में आकर प्रवेश किया। उसे मैं मामूली न समझ सका। शब्द को लक्ष्य करके पास जाकर देखा; एक स्त्री गेरुए कपड़े पहने है। सुनहरी केशराशि है। वह राह के किनारे एक शिला-खंड पर बैठी हुई धीरे-धीरे रो रही है। यह ताज़े शोक का रुदन नहीं है। बहुत दिनों की दबी हुई नीरव श्रान्ति और विषाद आज वर्षा-ऋतु के निर्जन अन्धकार में जैसे उमड़ पड़ा है।

मैंने सोचा कि यह तो ठीक उपन्यासों जैसी घटना है। किसी पहाड़ की चोटी पर संन्यासिनी का रोना देखने की आशा इन हाड़-मांस की आंखों को स्वप्न में न थी। मैं यह निश्चय न कर सका कि स्त्री किस जाति की है। मैंने दया भाव से हिन्दी में पूछा तुम कौन हो? क्यों रो रही हो?

पहले उसने कुछ उत्तर नहीं दिया—उस बदली के अन्धकार में आंसू-भरे चमकीले नेत्रों से उसने एक बार मेरी ओर देखा।

यह सुनकर वह हँसी; फिर उसने स्पष्ट हिन्दी में कहा—बहुत दिनों से मेरा डर जाता रहा है, लज्जा भी नहीं रही। बाबूजी मैं एक समय जिस अन्तःपुर में थी वहां प्रवेश करने के लिये मेरे सगे भाई को भी आज्ञा लेनी पड़ती थी। किन्तु आज सारे संसार में मुझे किसी से भी पर्दा नहीं है।

पहले तो यह सोच कर मुझे कुछ क्रोध आया कि मेरा रंग-ढंग और पोशाक सब साहबों सी है, फिर यह अभागिन बिना किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संकोच के मुझे बाबू जी क्यों कहती है। मैंने सोचा कि यहीं पर इस उपन्यास को इति कहकर सिगरैट का धुँआ उड़ाकर साहबी फ़ैशन की रैलगाड़ी की तरह वेग और दर्प से यहां से चल दूँ। किन्तु अन्त को कौतूहल की जीत हुई। मैंने कुछ उच्च भाव धारण करके, गर्दन टेढ़ी करके पूछा—क्या मैं तुम को कुछ सहायता दे सकता हूं ? तुम्हें कुछ चाहिए ?

उसने निश्चल आंखों से मेरे चेहरे की ओर देखा। पल भर बाद संक्षेप में उत्तर दिया-मैं बदायूं के नवाब गुलाम क़ादिरख़ाँ की बेटी हूं।

बदायूं कहाँ है, गुलाम क़ादिरख़ाँ कौन नवाब हैं और उनकी लड़की किस दुःख से योगिनी वेष धारण कर दार्जिलिंग में कलकत्ता रोड के किनारे बैठी रो रही है, सो मुझे कुछ भी नहीं मालूम था और सच पूछो तो उस पर विश्वास भी न था, तथापि मैंने बीच में मज़ा किरकिरा करना ठीक न समझा।

उसी समय मुख का भाव गम्भीर करके एक लंबी सलाम के बाद मैंने कहा बीबी साहबा माफ़ करना, मैंने तुम को पहचाना न था।

पहचान न सकने के कई एक कारण थे। उन में सब से बड़ा कारण यह था कि अब से पहले कभी मैंने उस स्त्री को देखा न था। और फिर ऊपर से कुहासा इतना था कि अपने हाथ-पैरों को देखना भी कठिन था।

उस स्त्री ने भी न पहचानने के कारण मुझे अपराधी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ठहराया और दाहने हाथ से एक शिला खण्ड की ओर इशारा करके मुझ से मधुर स्वर में कहा—बैठिए।

मैंने देखा, उस स्त्री में आज्ञा देने की शक्ति है। उस काईदार भीगे हुए शिला-खण्ड पर बैठने की अनुमति पाकर मैंने अपने को अपूर्व सम्मान से सम्मानित समझा। होटल से मैकिंटश पहनकर बाहर निकलते समय मुझे यह ख्याल भी न था कि बदायूं के गुलाम क़ादिरख़ां की बेटी नूरुन्निसा या नूरुलमुल्क दार्जिलिङ्ग में कलकत्ता रोड के किनारे अपने पास ही बैठने का अधिकार देंगी।

हिमालय की एक चट्टान पर एकान्त में दो परदेसी स्त्री-पुरुषों की स्वतन्त्र बातचीत एकाएक रस से ओत प्रोत काव्य-प्रथा के समान जान पड़ती है—पाठकों के हृदयमें दूरी पर गिरते हुए निर्जन गिरिकन्दरा के झरने की सुमधुर ध्वनि और कालिदास-रचित "मेघदूत" और "कुमारसम्भव" का विचार संगीत गूंज उठता है। उस दिन घनघोर कुहासा चारों ओर छाया हुआ था, इसलिए दुनियां वालों से लजाने का कहीं कोई भी विषय नहीं था। उस अनन्त मेघों के राज्य में केवल बदायूं के नवाब गुलाम क़ादिरखां की बेटी और मैं—एक नवीन बंगाली साहब—दोनों दो शिला-खण्डों पर जगत् के दो प्रलयावशेषों के समान थे। इस असदृश मिलन का परिहास केवल हमारे ही भाग्य में बदा था, उसे देखने वाला और कोई न था।

मैंने कहा—बीबी साहबा, तुम्हारा यह हाल किसने किया?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाब-कुमारी ने अपने करम को ठोका और कहा—मैं क्या जानूं, यह सब कौन करता है ! इतने बड़े पत्थर के हिमालय को किस ने कुहासे की आड़ में कर रक्खा है ?

किसी तरह की दार्शनिक बहस में न पड़ कर मैंने सब स्वीकार कर लिया। कहा— सो तो ठीक ही है, यह कौन जान सकता है कि भाग्य में क्या बिदा है !

मैं इस पर तर्क करता, तो सहज ही में बीबी को छुटकारा न देता मगर भाषा की कमी से लाचार था। नौकरों-चाकरों के संसर्ग से जितनी हिंदी का मुझे अभ्यास हो गया है उतनी हिन्दी सीखकर कलकत्ता-रोड के किनारे बदायूं की अथवा किसी अन्य स्थान की नवाबज़ादी के साथ प्रारब्ध और स्वाधीन इच्छावाद के सम्बन्ध में स्पष्ट भाव से आलोचना करना मेरे लिए असम्भव था।

नवाब-कुमारी ने कहा—मेरे जीवन की विचित्र कहानी अभी समाप्त नहीं हुई। आप कहें तो मैं सुना सकती हूं।

मैंने कहा—मैं खुशी से सुनने को तैयार हूं। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

पाठक यह न समझ लें कि मैं ठीक ऐसी साफ हिन्दी में बात-चीत कर रहा था; इच्छा रहने पर भी सामर्थ्य न थी। नवाब-कुमारी जब बात-चीत करती थी तब मुझे जान पड़ता था कि ओस से नहाये हुए पके सुनहरी चोटी वाले स्निग्ध श्यामल धान के खेत के ऊपर से सवेरे की धीमी हवा हिलोरें लेती हुई चल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रही है। उसकी बातचीत के प्रत्येक पद में ऐसी ही सहज नम्रता, सौन्दर्य और शब्दों का सिलसिला था। और मैं बहुत ही संक्षेप में टुकड़े-टुकड़े कर के मामूली शब्दों में, टूटी-फूटी हिन्दी में, बात-चीत का सिलसिला बनाये रखने की चेष्टा करता था। मुझ को कभी मालूम न था कि भाषा में वैसी सुसम्पूर्ण सहज शिष्टता हो सकती है। नवाब-कुमारी से बात-चीत करने में आज ही पहले-पहल मुझे अपनी इस दीनता का अनुभव हुआ।

नवाब-कुमारी ने कहा—मेरे बाप दिल्ली के शाही घराने के थे। इसी घराने की इज्जत के खयाल से ऐसे आदमी का मिलना कठिन हो गया जिससे मेरी शादी की जाती। लखनऊ के नवाब के साथ मेरी शादी का पैगाम आया था, मेरे वालिद उसे मंञ्जूर करने में कुछ टाल-मटोल कर रहे थे, इसी समय दाँत से टोटा काटने की बात पर सिपाहियों ने गदर मचा दिया। सरकार और सिपाहियों में लड़ाई ठन गई। तोपों के धुएँ से हिन्दुस्तान में अँधेरा छा गया।

स्त्री के मुँह से—खास कर किसी ऊँचे घराने की स्त्री के मुंह से—मैंने कभी हिन्दी नहीं सुनी थी। आज सुन कर मुझे स्पष्ट जान पड़ने लगा कि यह भाषा अमीरों की भाषा है। यह जिस दिन की भाषा है वह दिन आज नहीं है। आज रैलवे-टेलीग्राफ़ के ज़माने में, काम-की धूम-धाम में, कुल की श्रेष्ठता मिट जाने से सभी कुछ मानों कम, छोटा और अलङ्कार-हीन हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाबज़ादी की भाषा सुनते ही उस अँगरेज़-रचित आधुनिक पहाड़ी दार्जिलिङ्ग के बीच घने कुहासे के भीतर मेरी मानसिक दृष्टि के आगे मुग़ल-सम्राटों की पुरी का चित्र स्पष्ट रूप से अङ्कित सा हो उठा। वे सङ्ग-मरमर की आकाश को चूमनेवाली बड़ी-बड़ी इमारतें, राह में लम्बी पूँछवाले सुसज्जित घोड़ों की क़तारें, हाथियों की पीठ पर ज़रतारी की झालर वाले हौदे, पुरवासियों के सिर पर विचित्र रङ्ग की पगड़ियां, बड़े घेरे के रेशमी पायजामे, कमरबन्द में लगी हुई टेढ़ी तलवारें, मुड़ी हुई नोक के कामदार जूते और तत्कालीन लोगों के लम्बे अवकाश, लम्बी पोशाक भारी शिष्टाचार मानों आंखों के आगे नाचने लगा।

नवाबज़ादी ने कहा—हमारा क़िला नदी-किनारे था। हम लोगों की फ़ौज का सुखिया या सिपहसालार एक हिन्दू—ब्राह्मण—था। उसका नाम था सुन्दरलाल।

उस स्त्री ने 'सुन्दरलाल' शब्द के ऊपर स्त्री-कण्ठ की सारी मिठास जैसे ढाल दी। मैं कुछ अचरज से उसके मुँह की ओर देखने लगा। वह कहने लगी—

"सुन्दरलाल कट्टर हिन्दू था। मैं रोज़ सवेरे उठकर ज़नान-खाने के झरोखे से देखती थी कि वह छाती भर पानी में खड़ा घूम-घूमकर हाथ जोड़े सिर उठाये सूर्य को जल की अञ्जलि देता था। उसके बाद गीली धोती पहने घाट पर बैठ कर एकाग्र मन से जप समाप्त करके भैरवी में भजन गाता हुआ क़िले में आता था।

"मैं मुसलमान की बेटी थी। लेकिन मैंने अभी अपने धर्म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बात नहीं सुनी थी और अपने धर्म के माफ़िक उपासना करने की विधि भी मैं न जानती थी। उन दिनों भोग-विलास, शराबख़ोरी और मनमाने काम करने की प्रवृत्ति के कारण हमारी जाति के मर्दों में धर्म का बन्धन ढीला हो चुका था। ज़नानख़ाने के रङ्गमहल में भी धर्म मुर्दा हो रहा था।

"मेरे बाप-दादों में से कोई कभी एक ब्राह्मण की लड़की को ज़बरदस्ती ब्याह लाया था। महल के एक कोने में बैठकर मैं अपने शरीर में उसी ब्राह्मण-कन्या के पवित्र रक्त के होने का अनुभव करती और उसी सम्बन्ध से सुन्दरलाल के साथ कुछ-कुछ अपना मेल मान लेने से मुझे एक प्रकार की आन्तरिक तृप्ति होती थी।

"मैं अपनी उसी हिन्दू बांदी के मुंह से हिन्दू धर्म के आचार-व्यवहार, देवी-देवताओं की विचित्र कथाएँ, रामायण-महाभारत की अपूर्व ऐतिहासिक बातें बहुत ही मन लगाकर सुनती थी। उसी महल के एक किनारे बैठी हुई मैं इन बातों को जब सुनती तब हिन्दू-संसार का सुन्दर दृश्य मेरी आंखों के आगे नाचने लगता था। मूर्त्ति, प्रतिमूर्त्ति, शङ्ख-घण्टा आदि की ध्वनि, स्वर्ण-कलशमण्डित देवमन्दिर, धूप का सुगन्धित धुआं, अगर-चन्दन और फूल-माला की सुगन्ध, योगी-सन्यासियों की अलौकिक शक्ति, ब्राह्मणों का अलौकिक महात्म्य, मनुष्य का बनावटी रूप धारण किये देवताओं की विचित्र लीला इत्यादि बातें मिलकर मेरे मन में एक अति पुरातन, अति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विस्तृत और अत्यन्त दूरवर्ती असाधारण मायालोक की सृष्टि कर देती थीं—मेरा चित्त उस छोटे पक्षी की तरह, जो सन्ध्या के समय अपने घोंसले को भूल गया हो, इधर-उधर उड़ा-उड़ा फिरता था'। मुझ बालिका को हिन्दू संसार परम सुन्दर और चाह की चीज़ जान पड़ता था।

"मुझमें विधाता की दी हुई स्वाभाविक धर्म-भक्ति थी या और कोई छिपा हुआ कारण था, सो तो मैं ठीक नहीं कह सकती; किन्तु नित्य सवेरे उषा की लाली में स्थिर नीली नदी की जनशून्य सीढ़ी के ऊपर सुन्दरलाल की पूजा-उपासना के दृश्य को देखकर मेरा उसी समय सोकर उठा हुआ हृदय एक अव्यक्त भक्ति की माधुरी से भर जाता था।

"निरन्तर संयम और शुद्ध आचरण के कारण सुन्दरलाल का गोरा सुडौल शरीर बिना धुएं की दीपक-शिखा के समान जान पड़ता था। ब्राह्मण की पुण्य-महिमा अपूर्व श्रद्धा के बोझ से मुझ मुसलमान की लड़की के मूढ़ हृदय को नम्र बना देती थी।

"मेरी एक बांदी हिन्दू थी। वह रोज़ जाकर सुन्दरलाल को प्रणाम करती और उसके पैरों की रज अपने माथे में लगाती थी। यह देखकर मुझे खुशी भी होती और ईर्ष्या भी। कभी-कभी वह बांदी ब्राह्मण-भोजन कराती और ब्राह्मणों को दक्षिणा भी देती थी। मैं खुद उसे धन देकर कहती थी कि क्या तू सुन्दरलाल को न्यौता न देगी? वह दांतों तले जीभ दबाकर कहती थी सुन्दरलाल महाराज न दान-दक्षिणा लेते हैं और न किसी का अन्न खाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"इस तरह प्रकट रूप से या छिपाकर किसी तरह सुन्दर-लाल को कुछ भक्ति का चिह्न न दिखा सकने के कारण मेरा हृदय मानो क्षोभ से भरा और भूखा सा बना रहता था।

"इसी समय कम्पनी के साथ सिपाहियों की लड़ाई छिड़ गई। हमारे बदायूं के छोटे क़िले में भी ग़दर की आग सुलग उठी।

"सुन्दरलाल ने कहा—अबकी गोसांसभक्षक गोरों को आर्यावर्त से मार भगाकर फिर हिन्दू और मुसलमानों को राजपद के लिये पांसा फेंकना पड़ेगा।"

"मेरे पिता गुलाम क़ादिरखां बड़े सावधान आदमी थे। उन्होंने अंगरेज़ जाति के लिए ख़ास नाते का उल्लेख करके कहा—वे असाध्य को सिद्ध कर सकते हैं। हिन्दुस्तान के लोग उनसे पेश नहीं पा सकते। मैं अनिश्चित आशा पर अपने इस छोटे से क़िले को हाथ से गँवा नहीं सकता। मैं कम्पनी बहादुर के ख़िलाफ़ लड़ नहीं सकता।

"जिस समय हिन्दुस्तान के सब हिन्दू-मुसलमानों का ख़ून खौल उठा था उस समय मेरे पिता का यह बनियापन देखकर हम सबको बड़ी लज्जा लगी। बेगमें तक यह देखकर विचलित हो उठीं।

"इसी समय सेना-सहित हथियार-बन्द सुन्दरलाल ने आकर मेरे पिता से कहा—नवाब साहब, आप जो हम लोगों का साथ न देंगे तो जब तक लड़ाई रहेगी, आपको क़ैद रखकर इस क़िले को मैं अपने हाथ में रक्खूँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

"पिता ने कहा—यह झंझट तुमको करना न पड़ेगा। मैं तुम्हारी तरफ़ रहूंगा।

"सुन्दरलाल ने कहा—तो फिर आपको ख़ज़ाने से कुछ रुपया निकालना पड़ेगा।

"पिता ने उसे विशेष कुछ नहीं दिया। कहा, जब जितने रुपये की ज़रूरत हो तब उतना रुपया मैं दूँगा।

"मेरे पास सिर से पैर तक का जितना ज़ेवर था, सब कपड़े की पोटली से बाँधकर उसी हिन्दू बाँदी के हाथ, चुपके से मैंने सुन्दरलाल के पास भेज दिया। सुन्दरलाल ने वह मेरी भेंट स्वीकार कर ली। आनन्द के मारे आभूषणहीन अङ्ग-अङ्ग में रोमाञ्च हो आया।

"सुन्दरलाल मोर्चे से भरे हुए बन्दूक के चोंगे और तलवार को मांज-घिसकर साफ़ करने लगा। उसी समय एका-एक एक दिन तीसरे पहर ज़िले के कमिश्नर साहब लालकुर्ती वाले गोरों को साथ लिये धूल उड़ाने हमारे क़िले में दाखिल हुए।

"मेरे पिता गुलाम क़ादरिख़ां ने चुपके से उनको सिपाही-विद्रोह की ख़बर दे दी थी।

"बदायूँ की फ़ौज सुन्दरलाल को इतना मानती थी कि उसके कहने से सब सिपाही टूटी बन्दूक और कुन्द तलवार लेकर ही लड़ने-को तैयार हो गये।

"विश्वासघाती पिता का घर मुझे नरक के समान जान पड़ने लगा। क्षोभ, दुःख, लज्जा और घृणा के मारे मेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
हृदय जैसे फटने लगा, तो भी आंखों से आंसू का एक बूँद नहीं गिरा। अपने डरपोक भाई की पोशाक पहन कर मैं नक़ली वेष में घर के बाहर निकल पड़ी। मुझे देखने का किसी को अवकाश ही न था।

"उस समय धूल और बारूद का धुआं, सिपाहियों की चिल्लाहट और बन्दूकें दगने का शब्द थम गया था। चारों ओर मृत्यु की भयानक शान्ति विराजमान थी। नदी के जल को अपनी ललाई सेरँगकर सूर्य अस्त हो चुका था। सन्ध्या समय आकाश में पूर्ण चन्द्रमा का उदय हो चुका था।

"रणभूमि में चारों ओर मृत्यु का विकट दृश्य दिखाई पड़ रहा था। और समय होता तो करुणा के कारण मेरा-हृदय व्यथित हो उठता, किन्तु उस दिन स्वप्न के आवेश में मोहित मनुष्य की तरह मैं रणभूमि में इधर-उधर घूम रही थी। मैं असल में सुन्दरलाल को खोज रही थी। उसके सिवा और किसी बात का मुझे ध्यान न था।

"खोजते-खोजते आधी रात के समय मैंने साफ़ चाँदनी के प्रकाश में देखा कि रणभूमि के पास नदी के किनारे, आम के बाग में सुन्दरलाल और उसके भक्त चाकर देवकी नन्दन की लाशें पड़ी हुई हैं। मैंने समझ लिया कि गहरी चोट लगने पर स्वामी नौकर को या नौकर स्वामी को यहां लाद कर ले आया है और शान्ति के साथ दोनों ने मौत को आत्मसमर्पण कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पहले मैंने अपने बहुत दिनों की भूखी भक्ति को चरितार्थ किया। मैं सुन्दरलाल के पैरों पर लोट गई। मैंने अपने बिखरे लम्बे बालों से उसके पैरों की धूल पोंछी। अपने गर्म मस्तक पर उसके दोनों ठण्डे पैर रक्खे। उसके चरणों को चूमते ही बहुत दिनों के रुँधे हुए आँसू उमड़ पड़े।"

"इसी समय सुन्दरलाल का शरीर हिला। एकाएक उसके मुँह से कराहने की आवाज़ सुनते ही मैं उसके पैर छोड़ कर चौंककर उठ खड़ी हुई। मैं ने देखा, उसका गला सूख रहा है। उसने आँखें बन्द किये ही एक बार कहा—पानी।"

"मैं उसी समय दौड़ी हुई गई और नदी में अपना कपड़ा भिगो कर पानी ले आयी। कपड़ा निचोड़ कर मैंने सुन्दरलाल के मुँह में पानी दिया; और उसकी बाईं आँख को नष्ट करती हुई उसके मस्तक में गहरी चोट लगी थी उस जगह पर मैंने वही गीला कपड़ा फाड़कर बांध दिया।"

"इसी तरह कई बार नदी से जल लाकर सुन्दरलाल के मुँह और आँख में डालने से धीरे-धीरे उसे होश आया। मैंने पूछा—"और पानी दूँ?" सुन्दरलाल ने पूछा—"तुम कौन हो?" मुझ से रहा नहीं गया। मैंने कहा—"मैं आपकी भक्त दासी। नवाब गुलाम क़ादिरखां की बेटी हूं।" मैंने समझा था कि मरते समय अपने भक्त का परिचय पाकर सुन्दरलाल अप्रसन्न न होगा। इस सुख से मुझे कोई वञ्चित न कर सकेगा। लेकिन यह मेरी भूल थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
"मेरा परिचय पाते ही सुन्दरलाल ने सिंह की तरह गरजकर कहा—'बेईमान की लड़की, विधर्मी ! मरते समय म्लेच्छ का पानी देकर तूने मेरा धर्म नष्ट कर डाला !' और ज़ोर से मेरे मस्तक पर उसने अपना दाहिना हाथ दे मारा । मैं अचेत सी होकर चक्कर खा गई—आंखों के आगे अँधेरा छा गया ।

"मैं उस समय सोलह वर्ष की थी । पहले-पहल महल से बाहर पैर रक्खा था । उस समय तक बाहरी आकाश के गर्म सूर्य ने अपनी किरणों से मोहित मनुष्य की तरह, मेरे सुकुमार कपोलों की सुर्खी और सुन्दरता को हर नहीं लिया था । घर से बाहर निकलते ही संसार से—अपने संसार के देवता से—मुझे यह प्रथम-संभाषण प्राप्त हुआ ।"

मेरी सिगरेट बुझ गई थी और मैं मोह-मुग्ध हो चित्र-लिखित सा बैठा हुआ था । यह होश न था कि मैं कहानी सुन रहा हूं, या भाषा, अथवा सङ्गीत । मेरे मुँह में मानों भाषा ही न थी । इतनी देर के बाद मुझसे रहा न गया । मैं एकाएक कह उठा—आदमी नहीं जानवर था ।

नवाबज़ादी ने कहा—किसे जानवर कहते हो ? जानवर क्या मौत के समय मुँह तक पहुँचे हुए दो बूँद पानी को भी धर्म के ख़याल से अस्वीकार कर सकता है ?

मैंने शरमाकर कहा—ठीक है, जानवर नहीं, उसे देवता कहना चाहिए ?

नवाबज़ादी ने कहा—देवता कैसा ! एकाग्र चित्त से की हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
अनन्य भक्त की सेवा को क्या देवता लात मार सकता है ?
यह भी ठीक है।" कहकर मैं चुप हो रहा।

नवाबज़ादी फिर कहने लगी—"पहले तो मुझे बहुत बुरा लगा। जान पड़ा, सारा आकाश और ब्रह्माण्ड चूर-चूर होकर मेरे सिर पर पड़ा है। किन्तु दम भर में सचेत होकर उस कठोर, निठुर, निर्विकार, पवित्र, वीर ब्राह्मण के पैरों के पास दूर से मैंने प्रणाम किया। मैंने कहा, ब्राह्मण! तुम हीन की सेवा, पराया अन्न, धनी का दान, युवती की जवानी, रमणी का प्रेम कुछ भी नहीं ग्रहण करते। तुम स्वतन्त्र हो, अकेले हो, निर्लिप्त हो; तुम मुझ से बहुत दूर हो। तुम को आत्मसमर्पण करने का अधिकार भी मुझे नहीं।

"नवाबज़ादी को इस तरह ज़मीन पर माथा रखकर प्रणाम करते देख सुन्दरलाल ने क्या समझा, सो तो मैं नहीं कह सकती, किन्तु उसके चेहरे पर विस्मय या कोई दूसरा भाव नहीं देख पड़ा। उसने शान्त भाव से एक बार मेरे मुख की ओर देखा। इसके बाद वह धीरे-धीरे उठा। मैंने उसके इस साहस से चौंक कर सहारा देने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाया—पर उसने चुप चाप सहारा लेना अस्वीकार कर दिया। वह बड़े कष्ट से धीरे-धीरे चलकर नदी घाट में उतरा। वहां एक नाव बँधी हुई थी न कोई पार जाने वाला ही था। उसी नाव पर चढ़कर सुन्दरलाल ने बन्धन खोल दिया। देखते ही देखते नाव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बीच धारा में [illegible] हो गई। मेरा जी चाहा कि हृदय का; जवानी का और अनादृत भक्ति का सारा बोझ लेकर उस अदृश्य नाव की ओर हाथ जोड़कर उस आधी रात के सन्नाटे में, चांदनी से उज्ज्वल तरंगहीन नदी के जल में डण्ठल से झड़ पड़ी पुष्पमञ्जरी की तरह अपने व्यर्थ जीवन को विसर्जन कर दूँ। किन्तु वैसा न कर सकी! आकाश का चन्द्रमा, नदी पार के वन की घनी काली रेखा, नदी का घना नीला सुस्थिर जल, दूर पर आम के बाग के ऊपर हमारे चांदनी में चमक रहे किले की चोटी—ये सब नीरव गम्भीर एकतान से मौत का गीत गाने लगे। उस आधी रात के समय ग्रह-चन्द्र-तारा-मण्डित तीनों लोकों ने मिलकर एक स्वर से मरने के लिए कहा। केवल तरङ्ग रहित प्रशान्त नदी के भीतर जा रही एक अदृश्य पुरानी नाव उस चांदनी रात के सौम्य सुन्दर शान्त शीतल अनन्त भुवनमोहन मृत्यु की फैली हुई दोनों भुजाओं के बीच से घसीटकर मुझे जीवन के मार्ग में खींच ले चली। मैं मोह-मुग्ध मनुष्य की तरह नदी के किनारे-किनारे उसी नाव की ओर लक्ष्य करके चली। राह में कहीं कास के जङ्गल, कहीं बालू के ढेर, कहीं कठिन फटे हुए कगारे, कहीं घनी घास और झाड़ियों से दुर्गम जङ्गल मिले।"

नवाबजादी इतना कहकर चुप हो गई। मैं भी चुप रहा। बहुत देर बाद उसने फिर यों कहना शुरू किया—

15907

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"इसके बाद की घटना बड़ी पेचीली है। उसे किस तरह साफ़ करके कहूँ। एक घने जङ्गल के बीच होकर मैं जा रही थी, किस रास्ते से किधर गई, सो भला कैसे ठीक-ठीक बतलाऊँ! कहां से आरम्भ करूँ और कहां समाप्त? किसे कहूँ और किसे छोड़ूँ? सारे किस्से को किस उपाय से इस तरह स्पष्ट प्रत्यक्ष कर दिखाऊँ कि कुछ भी असाध्य असम्भव और अलौकिक न जान पड़े?

"किन्तु इतने से जीवन में मैंने यह समझ लिया है कि असाध्य और असम्भव कुछ भी नहीं है। नवाब के महल की बालिका के लिए महल के बाहर का जगत् ही दुर्गम जान पड़ सकता है, लेकिन यह विचार ठीक नहीं है। घर से बाहर निकलने पर चलने के लिए एक-न-एक राह निकल ही आती है। वह राह नवाबी की राह न होने पर भी राह है। उस राह में मनुष्य सदा से चला आ रहा है। वह ऊसर विचित्र और सीमाहीन है। उसमें अनेक शाखें फूटी हैं, वह सुख-दुःख और बाधा-विघ्नों से जटिल है किन्तु फिर भी वह राह है।

"उसी साधारण मनुष्य-मार्ग में अकेली नवाबज़ादी का लम्बा-चौड़ा भ्रमणवृत्तान्त सुख से सुनने योग्य नहीं हो सकता। और, यदि वह वैसा हो भी तो उसके कहने के लिए मुझे कुछ भी उत्साह नहीं है। मैं साधारणतः यह कह सकती हूँ कि दुःख-विपत्ति-अनादर बहुत कुछ भोगना पड़ा, तो भी जीवन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
असह्य नहीं हुआ। आतिशबाज़ी की तरह जितना जलन बढ़ती थी उतना ही घूमने का वेग बढ़ता था। जब तक गति का वेग था तब तक यह नहीं जान पड़ता था कि मैं जल रही हूँ। आज अचानक उस परम दुःख या चरम सुख की ज्योति बुझ जाने के कारण मैं इस राह के किनारे धूल पर जड़ पदार्थ की तरह पड़ गई हूं। आज मेरी यात्रा समाप्त हो गई। यहीं पर मेरी कहानी समाप्त है।"

नवाबज़ादी चुप हो गयी। मैंने मन ही मन में कहा कि नहीं यहां पर तो किसी तरह समाप्त नहीं हो सकती। तनिक चुप रहकर टूटी-फुटी हिन्दी में मैंने कहा - बेअदबी माफ़ हो, पिछले हिस्से का हाल और कुछ खुलासा करके कहने की कृपा कीजिए तो मेरे मन की व्याकुलता कुछ कम हो जाय।

यह सुनकर नवाबज़ादी हंसी। मैंने समझ लिया कि मेरी प्रार्थना का कुछ असर हुआ। जो मैं शुद्ध और स्पष्ट हिन्दी में बातचीत कर सकता तो शायद नवाबज़ादी की लज्जा रुकावट डालती लेकिन मैं उसकी मातृभाषा को अच्छी तरह नहीं जानता था, इसी से उसने फिर कहना शुरू किया—

"मैं सुन्दरलाल की ख़बर अक्सर पाती थी किन्तु किसी तरह उससे भेंट नहीं कर सकी। वह तांत्याटोपे के दल में मिल कर उस ग़दर के ज़माने में कभी पूर्व में कभी पश्चिम में, कभी इधर और कभी उधर, दम भर में वज्रपात की तरह लूट-मार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर गायब हो जाता।

"मैं उस समय संन्यासिनी का वेष बनाकर काशी के शिवानन्द स्वामी को पिता कहकर उनसे, संस्कृत-शास्त्र पढ़ रही थी। हिन्दोस्तान की सारी खबरें उनके पास पहुंचती थीं। मैं भक्ति के साथ शास्त्र पढ़ती और हार्दिक उद्वेग के साथ युद्ध की खबरें सुना करती थी।

"धीरे-धीरे अंगरेज़ों ने हिंदोस्तान के विद्रोह की आग को पैरों से कुचलकर बुझा दिया। तब एकाएक सुन्दरलाल की खबरें मिलना बन्द हो गईं। भयानक प्रलय-प्रकाश की रक्तरञ्जित किरणों में भारतवर्ष के स्थान-स्थान पर, घड़ी घड़ी पर, जो वीर मूर्तियाँ दिखाई पड़ती थीं वे एकाएक अंधेरे में अदृश्य हो गईं।

"तब मुझसे रहा नहीं गया। गुरु का आश्रय छोड़कर, भैरवी का वेश बनाकर, मैं वहां से चल दी। हर एक राह, हर एक तीर्थ, हर एक मन्दिर में घूमी, पर कहीं सुन्दरलाल का पता न चला। दो-एक आदमियों ने, जो सुन्दरलाल का नाम जानते थे, कहा—'वह या तो युद्ध में मारा गया या राज-दण्ड से उसकी जान गई।' लेकिन मेरी आत्मा ने कहा—कभी नहीं, सुन्दरलाल की मृत्यु अभी नहीं हुई। वह ब्राह्मण—वह दुस्सह जलती हुई आग कभी नहीं बुझी। मेरी आत्मा की आहुति लेने के लिए वह अभी तक किसी दुर्ग निर्जन यज्ञ-वेदी में जल रही होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हिन्दुओं के शास्त्र में लिखा है कि ज्ञान के द्वारा, तपस्या के द्वारा, शूद्र ब्राह्मण हो गये हैं। लेकिन इस बात का कहीं उल्लेख नहीं कि मुसलमान ब्राह्मण हो सकता है या नहीं। इसका एकमात्र कारण यही है कि उस समय मुसलमान थे ही नहीं। मैं जानती थी कि सुन्दरलाल के साथ मेरे मिलने में बहुत विलम्ब है। क्योंकि उससे पहले मुझे ब्राह्मण होना होगा। एक-एक करके तीस वर्ष बीत गये। भीतर-बाहर, आचार-व्यवहार और मन-वाणी-काया से मैं ब्राह्मण हो गई। मेरी उसी—ब्राह्मण जाति की बेटी—दादी का रक्त विशुद्ध भाव से मेरे सब शरीर में दौड़ने लगा। मैंने उस अपनी जवानी के आरम्भ के प्रथम ब्राह्मण, अपनी जवानी की समाप्ति के शेष ब्राह्मण के चरणों में बिल्कुल निसंकोच होकर अपने को स्थापित कर दिया। उस समय मुझे परम सुन्दर तेज प्राप्त हो गया।

"ग़दर के समय सुन्दरलाल की बहादुरी की बहुत सी बातें मैंने सुनीं हैं; किन्तु वे मेरे हृदय में अङ्कित नहीं हुईं। मैंने जो देखा था कि चुपचाप चाँदनी रात में सन्नाटे से परिपूर्ण नदी की धारा में एक छोटी सी नाव पर अकेला सुन्दरलाल जा रहा है, वही चित्र मेरे मन में अंकित था। मैं नित्यप्रति केवल देखती थी कि वह ब्राह्मण शून्य प्रवाह में दिन-रात किसी अनिर्दिष्ट भारी रहस्य की ओर चला जा रहा है। उसका न तो कोई साथी है न सेवक। उसे किसी की आवश्यकता भी नहीं। वह निर्मल और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने ही में डूबा हुआ पुरुष आप ही अपने में सम्पूर्ण है। आकाश के ग्रह-चन्द्र और तारागण चुपचाप उसकी ओर ताक रहे हैं।

"इसी समय ख़बर मिली कि सुन्दरलाल राजदण्ड के भय से नैपाल भाग गया है। मैं नैपाल गई। वहाँ बहुत दिन रहने पर ख़बर मिली कि सुन्दरलाल, बहुत दिन हुए, नैपाल से भाग कर न जाने कहाँ चला गया।

"तब से मैं पहाड़-पहाड़ घूमती-फिरती हूं। यह हिन्दुओं का देश नहीं है। यहाँ भूटिया, लेप्चा और म्लेच्छ ही रहते हैं। आहार-व्यवहार की दृष्टि से इनमें ज़रा भी आचार-विचार नहीं है। इनके देवता और इनकी उपासना-पूजा की विधि बिल्कुल जुदी है। बहुत दिन साधना करके मैंने जो विशुद्ध पवित्रता प्राप्त की है उसमें कहीं दाग़ न लग जाय, यही डर मुझे लगा रहता था। मैं बहुत चेष्टा करके अपने को सब प्रकार के मलीन संसर्ग से बचाये रह कर चलने लगी। मैं जानती थी कि मेरी जीवन-नैया किनारे लगना चाहती है, मेरे जीवन का चरम तीर्थ बहुत ही निकट है।

"इसके बाद और क्या कहूं! बाकी बातें बहुत थोड़ी हैं। दीपक जब बुझता है तब एक ही फूँक में बुझ जाता है। इस घटना की अधिक व्याख्या करने की जरूरत नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अड़तीस बरस बाद इसी दार्जिलिंग में आकर आज सवेरे सुन्दरलाल के मैंने दर्शन पाये थे।"

नवाबज़ादी को यहीं पर चुप रहते देखकर मैंने उत्सुकता के साथ पूछा—किस दशा में देखा ?

"देखा, वृद्ध सुन्दरलाल भूटियों की बस्ती में भूटिया स्त्री और उसके गर्भ से पैदा लड़के-पोते लिये मैले कपड़े पहने भुट्टों से जुनहार के दाने अलग कर रहा है।"

कहानी समाप्त हो गई। मैंने सोचा, सान्त्वना के लिए कुछ कहना आवश्यक है। मैंने कहा—अड़तीस वर्ष तक जिसे जान बचाने के लिए विजातीय लोगों के बीच रहना पड़ा वह किस तरह अपने आचार-विचार को बनाये रख सकता था ?

नवाबज़ादी ने कहा—मैं क्या यह समझती नहीं ? लेकिन इतने दिनों तक मैं किसी मोह में फँसी पड़ी थी ! मैं क्या जानती थी कि जिस धार्मिक ब्राह्मण ने मेरे हृदय को बचपन में ही हर लिया उसका वह अभ्यास केवल संस्कारमात्र है ! मैं जानती थी कि उसका वह आचरण धर्म है—वह अनादि और अनन्त है। यदि ऐसा न समझती तो सोलह बरस की अवस्था में पहले पहल पिता के घर से निकल कर क्यों आती और चाँदनी रात में अपने खिले हुए भक्ति-पूर्ण हृदय के देने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं ब्राह्मण के हाथ से जो दुस्सह अपमान पाया था उसे भक्ति के साथ क्यों ग्रहण कर लेती ? हाय ब्राह्मण ! तूने तो अपने एक अभ्यास के बदले दूसरा अभ्यास प्राप्त कर लिया; किन्तु मैं अपनी एक जवानी और एक जीवन के बदले दूसरी जवानी और जीवन कहाँ पाऊँ ?

अब वह उठ खड़ी हुई और बोली—सलाम बाबूजी।

इस मुसलमानी के प्रणाम के द्वारा मानों उसने जीर्ण-शीर्ण और मिट्टी में मिले हुए ब्राह्मण-भाव से भी आखिरी विदा माँग ली। मैं कुछ कहने भी न पाया था वह स्त्री हिमाचल के शिखर पर घने कुहासे के भीतर बादल में चन्द्रमा की तरह अदृश्य हो गई।

मैं घड़ी भर तक आँखें मूँदे सब घटनाओं पर मन ही मन विचार करता रहा। पहले मसनद पर नदी-तट के झरोखे के पास सुख-पूर्वक बैठी हुई षोडशी नवाबज़ादी को देखा। उसके बाद तीर्थमन्दिर में सन्ध्याकाल की आरती के समय तपस्विनी की भक्ति से गद्‌गद् एकाग्र मूर्त्ति देखी। उसके उपरान्त दार्जिलङ्ग में कलकत्ता रोड के किनारे कुहासे में नवाबज़ादी की निराशा-पूर्ण मलिन मूर्त्ति भी देखी।

आँखें खोलीं तो देख पड़ा कि एकाएक सब कुहासा मिट गया है, बादल भी नहीं हैं। निर्मल आकाश में सूर्य का उज्ज्वल प्रकाश चमक रहा है। ठेलकर चलाई जानेवाली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गाड़ियों पर अँगरेज़ लेडियाँ और घोड़ों पर अँगरेज़ लोग हवा खाने बाहर निकले हैं। बीच-बीच में मुख-मण्डल पर गुलूबन्द लपेटे हुए दो-एक बंगाली भी जाते देख पड़े। मैंने देखा, वे लोग कौतुक-पूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखते जा रहे हैं।

मैं जल्दी से उठ खड़ा हुआ। इस सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित खुले हुए जगत् के दृश्य में वह बदली की गुप्त कहानी सच न जान पड़ी। मुझे विश्वास है कि मैंने पहाड़ के कुहासे के साथ अपनी सिगरेट का बहुत सा धुआँ मिलाकर एक कल्पना-खण्ड की रचना की थी। वह मुसलमान-ब्राह्मणी, वह वीर ब्राह्मण और वह नदी-तट का क़िला कुछ भी सच नहीं।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२. मालिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालिक

रायचरन को जब नौकरी मिली तब वह कुल बारह साल का था। मालिक अपनी ही बिरादरी के थे। रायचरन का काम था उनके बच्चे को पालना।

धीरे-धीरे वह बच्चा बड़ा हुआ। रायचरन की गोद छोड़ कर स्कूल जाने लगा। स्कूल के बाद कालेज की तालीम लेने गया, और फिर एक अच्छे पद पर नौकर हुआ। लेकिन जब नई मालकिन ने घर में क़दम रक्खा तो रायचरन पर दोनों की हकूमत आ पड़ी। अब दुलहिन के सामने रायचरन की कुछ न चलती।

अन्त में यह कमी भी एक दिन भगवान् ने पूरी कर दी। अनुकूल के एक पुत्र हुआ था। रायचरन का असीम दुलार पा कर बच्चा उससे खूब हिल-मिल गया। रायचरन उसे गोद में लेकर उछालता, तुतला कर उससे बातें करता, उसके मुँह पर मुँह रख देता, और फिर दाँत निकाल कर तरह-तरह की हँसी हँसता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कुछ दिनों के बाद बच्चा घुटनों के बल चलने लगा, घर की देहरी लाँघ कर बाहर निकलने लगा। अब जो रायचरन उसे पकड़ने दौड़ता, तो वह खिलखिला कर हँस पड़ता और बच कर भाग जाता। रायचरन उसकी चालाकी और दूरदर्शिता देख कर आश्चर्य में पड़ जाता। वह मालकिन से डरता-डरता एक भेद-भरी दृष्टि फेंकता हुआ कहता—"बहू जी, आपका बेटा किसी दिन जज बनेगा जज !"

और नित्य नये आश्चर्य रायचरन के सामने आते। जब बच्चा पैरों चलने लगा तब रायचरन को लगा कि मानो अब उसका जीवन प्रारम्भ हुआ है। फिर जब बच्चा पिता को 'बा', माँ को 'मा' और रायचरन को 'चन-ना' कहने लगा तब तो रायचरन के आनन्द की सीमा न रही। इस बात को वह दुनिया भर से से कहता-फिरता।...

अब रायचरन के ऊपर एक और काम आ पड़ा है। कभी उसे घोड़ा बन कर मुँह में लगाम लगानी पड़ती है, और चारों हाथ-पैरों से चलना पड़ता है। और कभी उसे अपने छोटे मालिक से कुश्ती लड़नी पड़ती है, और जब वह उसे नहीं पछाड़ पाता है, तो फिर नाराजगी भी होती है।

इन्हीं दिनों अनुकूल का तबादला हुआ। पद्म के किनारे किसी शहर में वह आ गया। यहाँ आते समय रास्ते में कलकत्ते से अनुकूल ने बच्चे के लिए गाड़ी खरीदी, सुनहरी कामदार टोपी, कंगन, पायजेब सभी कुछ। रायचरन बच्चे को टहलाने ले जाता,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

तब वे ही सब नीलों उसे पहिनाता और मन ही मन में जाने कैसा एक अभिमान कर लेता।

वर्षा के दिन आये। रोज़ ही मूसलाधार पानी गिरने लगा। नदी एक भयंकर साँप की तरह, खेत के खेत और गाँव के गाँव निगलती चली गई। और बड़े-बड़े मैदान उस पानी में डूब गये। थोड़ी-थोड़ी देर बाद तट पर मिट्टी नदी में 'छपाक्-छपाक्' गिरती थी। धार की निरन्तर गड़गड़ाहट मीलों दूर सुनाई पड़ती। नदी पर फेन के ढेर दौड़े चले जाते थे।

एक दिन दोपहर के बाद आसमान कुछ खुला। बादल इधर-उधर फिर रहे थे। ठण्डी पुरवैया चल रही थी और चारों ओर प्रकाश फैला था। रायचरन के छोटे मालिक को ऐसे समय में घर में बैठे रहना भला नहीं लगा। वह अपनी गाड़ी में जा चढ़े। रायचरन गाड़ी में जुता, और गाड़ी धीरे-धीरे चलने लगी। थोड़ी देर में नदी के किनारे धान के खेतों के पास पहुँच गये। वहाँ कोई नहीं दीख पड़ा। नदी में भी कोई नाव नहीं दीख पड़ी। दूर पच्छिम में बादल बिखर गये थे। सूर्य की अन्तिम आभा तेज़ी से चमक उठी। ऐसे सन्नाटे में एकाएक बच्चे ने सामने की ओर उँगली उठा कर कहा—"चन्-ना! अम्! बो!"

रायचरन ने देखा, पास ही पानी में एक कदम का पेड़ फूलों से लदा खड़ा था। छोटा मालिक उसकी ओर ललचाई आँखों से देख रहा था। रायचरन इसका मतलब जानता था। कुछ ही दिन पहले उसने इन्हीं गोल फूलों की एक गाड़ी बनाई थी, और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसमें एक डोरी बाँध दी थी। खुली के मारे बच्चा दिन भर उसे चलाता रहा था, और रायचरन की उस दिन की छुट्टी रही थी।

लेकिन इस समय रायचरन का जी, घुटनों तक कीचड़ में 'छप्-छप् करके, वहाँ तक जाने को नहीं हो रहा था। सो उसने दूसरी ओर अंगुली उठा कर कहा—"वह देखो, वह! चिड़िया!" और ऐसी ही बहुत सी बातें बकता हुआ वह गाड़ी को दूसरी ओर ले चला। लेकिन छोटा मालिक—वह जो किसी दिन जज होगा—भला, ऐसे कब मानने वाला था! सचमुच वहाँ कोई ऐसी चीज़ न थी, जो उसका ध्यान आकृष्ट करती। बेपर की—बेरङ्ग की चिड़िया कब तक ठहरती! छोटा मालिक ज़िद कर रहा था, और रायचरन की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे।

"अच्छी बात है,"—उसने कहा—"चुपचाप बैठे रहना। मैं अभी फूल ले कर आता हूँ। वहाँ मत जाना, उधर पानी के पास, अच्छा!"

यह कह कर उसने घुटनों तक धोती चढ़ाई, और धीरे-धीरे कीचड़ में पैर रखता पेड़ की ओर गया।

उधर रायचरन ने पीठ फेरी कि छोटा मालिक फ़ौरन गाड़ी ले चला और गाड़ी पानी के पास जा पहुँची। नदी का पानी 'छप्-छप्' 'गड़्-गड़्' करता लुढ़कता चला जा रहा था। उसे लगा कि छोटी-छोटी लहरें असंख्य बच्चों की तरह ठट्ठा मारती, रायचरन के पास से दूर भागी जा रही हैं। उनकी शैतानी देख कर बच्चे का जी कुलबुला उठा। क्या करे?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

तब वह चुपचाप गाड़ी से उतरी, और पानी के किनारे जा कर खड़ा हो गया। रास्ते में से उसने एक छोटी-सी लकड़ी उठा ली, और उसे पानी में डाल कर ऐसे बैठ गया, मानो मछली का शिकार कर रहा हो। लेकिन नदी की चपल लहरें, तो मानो उसे भी अपने साथ खेलने को बुला रही हैं !...

रायचरन ने दोनों हाथ भर के फूल तोड़े, और धोती के छोर में उन्हें रख कर चला। मुस्कराहट से उसके मुँह पर झुर्रियाँ दीख रही थीं। लेकिन जब वह गाड़ी के पास पहुँचा, तो वहाँ कोई न था। उसने चारों ओर घूम-घूम कर देखा—कोई नहीं, कोई नहीं ! गाड़ी में देखा—कोई नहीं ! इस भयंकर क्षण में उसे लगा जैसे उसका सारा ख़ून जम गया हो। उसके चारों ओर अँधेरी दुनिया घूमती नज़र आती थी। टूटे दिल से सारी शक्ति लगाकर रायचरन ने पुकारा—"मालिक !...मालिक !...मेरे मालिक !" लेकिन उत्तर में 'चन् ना' की कोई आवाज़ नहीं आई—किसी बच्चे की शैतानी से भरी हँसी नहीं सुनाई दी, लौट आने की ख़ुशी में किसी बालक की वाणी सुनाई नहीं दी।

केवल नदी का पानी पहले की तरह 'छप्-छप्' 'गड़्-गड़्' करता बहा जा रहा था। वह कुछ भी नहीं जानता। उसके पास एक बालक की मृत्यु जैसी छोटी बात पर ध्यान देने के लिये समय नहीं है !...

जब शाम होने लगी तो रायचरन की मालकिन की उत्सुकता भी बढ़ने लगी। उन्होंने चारों ओर उसे ढूँढ़ने को आदमी भेज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दिये। लालटेन ले कर घर के सामने नौकर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पद्मा के किनारे पहुँचे। उन्होंने देखा, रायचरन आँधी की तरह खेतों में दौड़ रहा है और अजीब स्वर में पुकार रहा है—"मालिक !... मालिक !...मेरे मालिक !" वे रायचरन को घर ले आये, तो वह मालकिन के पैरों पर लोट गया। उन्होंने उसे हिलाया-डुलाया और पूछा कि वह बच्चे को कहाँ छोड़ आया है। पर रायचरन एक ही बात कहता था कि वह कुछ नहीं जानता !...

सब जान गये कि बच्चा नदी में बह गया है, फिर भी सन्देह बना ही रहा; क्योंकि उसी दिन शाम सांसियों का एक गिरोह वहाँ आया था, और अनुमान था कि शायद उन्हीं लोगों का यह काम हो। मालकिन शोक से पागल थीं, उनकी बुद्धि ठिकाने नहीं थी। उन्होंने तो यहाँ तक सोच डाला कि हो न हो, रायचरन ने ही उनके बच्चे को चुरा लिया है। उन्होंने उसे एकान्त में बुला कर विनय के स्वर में कहा—"रायचरन ! मेरा बच्चा मुझे लौटा दो ! तुम मेरे लाल को मुझे दे दो ! जितना रुपया चाहो, मुझ से ले लो, पर मेरा बच्चा मुझे लौटा दो !"

रायचरन ने अपना सिर पीट लिया।

फिर मालकिन ने आज्ञा दी कि वह निकल जाय।

अनुकूल ने उन्हें बहुतेरा समझाया कि रायचरन पर सन्देह करना अन्याय है।

उन्होंने कहा—"इतना बड़ा अपराध आखिर वह क्यों करता ?" पर स्वामिनी ने केवल कहा—"बच्चा सोने की चीजें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिने था। कौन कह सकता है...?" मालकिन को समझाना असम्भव हो गया।

(२)

रायचरन फिर अपने गाँव लौट आया। अब तक उसके कोई बेटा नहीं हुआ था, और न आशा ही थी कि वह कभी किसी का पिता होगा। लेकिन साल के भीतर ही पत्नी के एक पुत्र हुआ। उसके बाद वह मर गई।

इस बालक पर पहले तो रायचरन को बड़ा क्रोध आया। क्रोध के मारे उसे लगा, मानों यह बच्चा छोटे मालिक की जगह छीनना चाहता है। और उसकी यह अनधिकार चेष्टा रायचरन को बहुत खलने लगी। रायचरन सोचता, जब उसके स्वामी के बेटा नहीं है, तब वह अपने बेटे को प्यार करे, यह बहुत बुरी बात होगी, रायचरन की विधवा बहिन न होती, तो शायद वह बच्चा बहुत दिन न जीता।

लेकिन धीरे-धीरे रायचरण की धारणा बदलने लगी। एक और आश्चर्य की बात हुई। रायचरन का बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा और घुटनों चलने लायक हुआ। तब देहरी लांघ कर बाहर पहुँचने लगा, और उसके मुंह पर शैतानी के चिह्न दीखने लगे। वह बच कर भाग जाने में भी बड़ा चालाक था। उसकी आवाज़, हँसी, रोना, सारी की सारी हरकतें हू-बहू उसी छोटे मालिक की तरह थीं। अब जब कभी रायचरन उसकी आवाज़ सुनता, तभी उसका दिल धड़कने लगता, और लगता कि मानो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका छोटा मालिक किसी अज्ञात लोक से अपने खोये 'चन्-ना' को पुकार रहा है !

पङ्कज धीरे-धीरे बोलने लगा। तुतला-तुतला कर वह 'बा', 'मां' कहता। जब रायचरन के कानों ने ये चिर-परिचित शब्द सुने, तो उसकी समझ में सब बातें आ गईं।

छोटा मालिक रायचरन की प्यार की गोद नहीं छोड़ सका, और शायद इसीलिए उसी के घर में उसने जन्म लिया है।

अपने अनुमान पर रायचरन को पूरा भरोसा हो गया, क्योंकि उसका लड़का छोटे मालिक के मरने के कुछ ही दिन बाद पैदा हुआ था। उसकी स्त्री इतनी बड़ी आत्मा को अपने उदर से और सो भी इतनी अवस्था में जन्म नहीं दे सकती थी। उसके लड़के की यही चाल थी, उसी तरह 'बा', 'मां' कहता था, और भविष्य में उसके जज बनने के भी चिह्न दिखाई देते थे।

फिर एकाएक उसे मालकिन के लगाए अपराध की याद आई। 'ओह !' आश्चर्य से उसने सोचा—'मालकिन का ख्याल ठीक था। उन्हें मालूम था कि उनका बच्चा मैंने चुराया है।' जब यह निश्चय हो गया; तो रायचरन को अपनी लापरवाही पर पश्चात्ताप होने लगा। अब उसने अपने बच्चे की सेवा में तन-मन लगा दिया, और उसी की नौकरी बजाने लगा। वह उसे ऐसे पालने लगा, मानो वह एक रईस का बेटा हो। बच्चे के लिए एक गाड़ी एक मखमली कोट और सुनहरी जरी की एक टोपी—यह सब वह ख़रीद लाया। मृत पत्नी के गहने गलवा कर बच्चे के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कंकन और पायजेब बनवा ली। उसने पड़ोसियों के बच्चों के साथ उसका खेलना बन्द करा दिया, और स्वयं दिन-रात उसके साथ छाया की तरह रहने लगा।

जब बच्चा बड़ा हुआ, वह लाड के मारे इतना बिगड़ गया था कि इतनी शान से रहने लगा कि पड़ोसी बच्चे उसे 'लाट साहब' कहते और उसकी खिल्ली उड़ाते और बुड्ढे लोग रायचरन को बच्चे के बिगड़ने का दोष लगाते।

आख़िर बच्चा स्कूल जाने लायक हुआ। तब रायचरन ने अपनी ज़मीन बेच दी और कलकत्ता गया। वहां उसे बड़ी मुश्किलों से एक नौकरी मिली। पङ्कज स्कूल जाने लगा।

रायचरन इसको उत्तम शिक्षा, उत्तम वस्त्र और उत्तम भोजन देने में कोई कसर उठा नहीं रखता। वह स्वयं मुट्ठी भर चावल चाब कर रह जाता, और अकेले में कहता—'आह! मेरे छोटे मालिक! तुमने मुझे इतना प्यार किया कि तुम फिर मेरे ही घर में आ गए। मेरी ओर से तुम्हें कभी कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा!'

इसी तरह बारह साल बीत गए। पङ्कज अच्छी तरह पढ़ने-लिखने लगा था। पढ़ने में वह तेज़ था, उसका स्वास्थ्य और सौन्दर्य भी साधारण न था। वह अपनी वेष-भूषा का बहुत ख्याल रखता था, और सँभाल कर बालों की मांग निकलता था। वह खूब खुल कर खर्च करता, खूब शान से रहता। उसने रायचरन को कभी अपना पिता नहीं समझा, क्योंकि पिता होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
हुए भी रायचरन के रङ्ग-ढङ्ग नौकर के से थे। एक बात और ख़राबी की यह थी कि रायचरन ने कभी किसी से नहीं कहा कि मैं ही उसका बाप हूं। पङ्कज के होस्टल के साथी रायचरन के गँवारपन से खूब मनोरञ्जन करते, और सच तो यह है कि रायचरन के पीछे पङ्कज भी उन्हीं में मिल जाता। पर मन ही मन सब उस भोले-भाले बुड्ढे को प्यार भी करते थे। और पङ्कज को भी वह बहुत अच्छा लगता, पर वह रायचरन को कभी ऊँची दृष्टि से नहीं देख सका।

रायचरन बुड्ढा होने लगा। अब नये स्वामी उसके काम में कुछ न कुछ ख़राबी निकालते रहते। उन्हीं के कारण रायचरन को सब दुःख सहने पड़ रहे थे और इसी से उसका स्वास्थ्य भी गिरने लगा। उसकी अक़ल काम न देती, कभी-कभी उसकी स्मृति उसे धोखा दे जाती। बेचारा रायचरन समझ न पाता कि क्या करे। पर उसका स्वामी यह सब बहाने क्यों मानने लगा! नये मालिक तो उससे पूरे आदमी का काम लेना चाहते थे! ज़मीन की बिक्री का रुपया अब निपट गया था। लड़का सदा ही कपड़ों के लिये बड़बड़ाता रहता, और पैसा मांगता रहता।

(३)

रायचरन ने निश्चय कर लिया! उसने नौकरी छोड़ दी, और पङ्कज को कुछ रुपया देकर बोला—"गांव में कुछ काम से जा रहा हूं। जल्दी ही लौटूँगा।"

वह सीधा बरासात पहुँचा। बरासात में अनुकूल मैजिस्ट्रेट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। अनुकूल की पत्नी का शोक अब भी कम न हुआ था, क्योंकि उसके बाद फिर उनके कोई सन्तान नहीं हुई।

एक दिन कचहरी के काम से थक कर शाम को वे आराम कर रहे थे। पत्नी एक क़ीमती बूटी ख़रीद रही थी—बूटी उन्हें सन्तान देगी!—कि दहलीज़ में किसी के 'नमस्कार' की आवाज़ सुनायी दी! अनुकूल देखने चले। "ऐ! रायचरन!"

मैजिस्ट्रेट ने जब अपने बुड्ढे नौकर को देखा, तो उनका जी मोह से भर आया। बहुत सी बातें उन्होंने पूछीं, और फिर से नौकरी करने को भी कहा।

रायचरन केवल मुस्करा दिया, और बोला—"मालकिन से मिलना चाहता हूं।"

अनुकूल उसे लेकर भीतर पहुँचे, पर उनकी पत्नी ने रायचरन की ऐसी आवभगत नहीं की, जैसी मालिक ने की थी। रायचरन ने इसका कुछ ख़्याल नहीं किया। वह हाथ जोड़ कर कहने लगा—"आप के बच्चे को नदी ने नहीं, मैंने चुराया था!"

अनुकूल ने चिल्ला कर कहा—"ओह! परमात्मा!... ओह!...क्या?...वह कहाँ है?"

रायचरन ने जवाब दिया—"वह मेरे पास है। मैं उसे परसों यहाँ ले आऊँगा।"

रविवार का दिन था। आज कचहरी बन्द थी। अनुकूल और उनकी पत्नी की प्यासी आँखें सड़क पर आने-जाने वालों को देख रही थीं। सवेरे से ही वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दस बजे के क़रीब रायचरन आगे-आगे, और पीछे-पीछे पङ्कज उसकी अँगुली पकड़े आया।

मालकिन ने कोई बात नहीं पूछी, केवल बच्चे को अपनी बाँहों में कस कर छाती में दबा लिया। वे खुशी से पागल हो गई थीं। कभी हँसती और कभी रोती थीं! बच्चे को पुकारतीं, उसका मस्तक चूमतीं, उसकी आँखों में अपनी प्यासी अधीर आँखें डाल देतीं। लड़का बड़ा सुन्दर है, एक भले आदमी के बेटे की तरह कपड़े पहिने है! अनुकूल का हृदय दुलार से लबालब भर उठा। फिर मैजिस्ट्रेट की हैसियत से पूछा—"तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण है?"

रायचरन ने उत्तर दिया—"सरकार! ऐसी बात का प्रमाण क्या हो सकता है? ईश्वर के सिवा और कोई नहीं जानता कि मैंने ही आप का बच्चा चुराया था।"

अनुकूल ने देखा कि हृदय के सम्पूर्ण प्यार से उनकी पत्नी बच्चे को बार-बार चिपटा रही है। अब उन्होंने प्रमाण माँगना व्यर्थ समझा। विश्वास करना ही ठीक समझ में आया। और फिर रायचरन-जैसा बुड्ढा ऐसा सुन्दर बच्चा कहाँ से लाता? उनका स्वामिभक्त नौकर उन्हें व्यर्थ ही क्यों धोखा देने लगा?

"लेकिन"—मैजिस्ट्रेट ने कठोर हो कर कहा—"रायचरन, तुम यहाँ हरगिज़ मत रहो!"

"मैं कहाँ जाऊँ मालिक?" रुँधे स्वर में रायचरन ने हाथ जोड़ कर कहा—"मैं बूढ़ा हूं। इस बुढ़ापे में मुझे कौन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकरी देगा ?"

मालकिन बोलीं—"उसे रहने दो, मेरा बच्चा खुश रहेगा। मैंने उसे माफ़ कर दिया।

लेकिन मैजिस्ट्रेट की अक़ल में यह बात धँसी नहीं। उन्होंने कहा—"नहीं, ऐसे काम के लिये क्षमा नहीं किया जा सकता!"

रायचरन ने अनुकूल के चरण पकड़ लिये—"मालिक!" उसने विह्वल हो कर कहा—"यह सब मैंने नहीं, ईश्वर ने किया था।" जब मैजिस्ट्रेट ने देखा कि रायचरन अपना अपराध ईश्वर के मत्थे मढ़ रहा है, तो उनके दिमाग़ का पारा और भी ऊपर चढ़ गया।

उन्होंने कहा—"नहीं, मैं तुम्हें नहीं रख सकता। मैं अब तुम पर विश्वास नहीं कर सकता। तुमने विश्वासघात किया है।"

रायचरन खड़ा हो गया और बोला—"मैंने यह सब नहीं किया था।"

"फिर किसने किया ?" अनुकूल ने पूछा।

रायचरन ने कहा—"यह मेरे भाग्य ने किया था।"

लेकिन कोई भी पढ़ा-लिखा आदमी यह बहाना नहीं मान सकता था। अनुकूल अपने निश्चय पर डटे रहे।

इधर जब पङ्कज ने देखा कि वह रायचरन का नहीं, एक धनी मैजिस्ट्रेट का बेटा है, तो वह बहुत नाराज़ हुआ कि अब तक उसे अपने जन्म-सिद्ध अधिकार से क्यों वंचित रक्खा गया ? फिर भी रायचरन को मुसीबत में देख, उसने बड़ी उदारता से पिता से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"उसे क्षमा कर दीजिये। अगर आप उसे हम लोगों के साथ नहीं रहने देना चाहते, तो कम से कम उसके लिये कुछ मासिक पेन्शन ही बाँध दीजिये।"

रायचरन के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। उसने अन्तिम बार अपने बेटे के चेहरे को देखा, अपने पुराने मालिक और मालिकिन को नमस्ते किया। तब वह उठा और बाहर चला गया और दुनिया के असंख्य जन-समूह में मिल गया।...

महीने के अन्त में मैजिस्ट्रेट ने उस गाँव के पते पर कुछ रुपये भेजे; लेकिन रुपये लौट आये। गाँव में रायचरन नाम का कोई आदमी नहीं है।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३. काबुली वाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काबुली वाला

मेरी लड़की मुन्नी पांच बरस की है। वह बातें किए बिना तो कभी रह नहीं सकती। मेरा तो यह ख्याल है कि सारी उमर में उसने चुपचाप बैठकर कभी एक क्षण नहीं खोया। माँ उसकी इस आदत पर प्रायः नाराज़ रहती है और उसे चुप कराने की भी कोशिश करती है। लेकिन मैंने उसे कभी नहीं रोका। मुन्नी का चुपचाप बैठना एक अस्वाभाविक सी बात है और मैं उसे ज्यादा देर चुपचाप नहीं देख सकता। इसीलिए मेरी और मुन्नी की बात-चीत बड़ी मनोरञ्जक होती है।

एक दिन सवेरे जब मैं अपने नए उपन्यास के सत्रहवें अध्याय में लगा हुआ था, तो मुन्नी चुपचाप मेरे कमरे में आ गई और मेरे हाथ पर हाथ रख कर कहने लगी—"पिता जी, चपरासी रामदयाल कौए का कव्वा कहता है। वह कुछ नहीं जानता। क्यों पिता जी?

इससे पूर्व कि मैं उसे संसार की अलग अलग भाषाओं के भेद समझाता, कि मुन्नी एक नए विषय पर चर्चा करने में लीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
हो गई। कहने लगी—"आप का क्या विचार है, पिताजी ? भोला कहता है कि बादलों में एक हाथी बैठा हुआ है जो अपनी सूँड से पानी निकाल कर फैंकता है और फिर बरसात पड़ती है।"

फिर अपने प्रश्न का उत्तर सोचती हुई, मैं चुपचाप ही था कि एक नई बात पूछने लगी—"पिता जी, आपका माता जी से क्या सम्बन्ध है ?" मैंने ज़रा रोब वाली शकल बना कर कहा—"जाओ—मुन्नी, भोला से खेलो में काम में लगा हूँ।"

मुन्नी टेबिल के निकट मेरे पैरों के पास बैठकर एक विलायती सचित्र सूचीपत्र उलट-पलटकर देखने लगी। मैंने सत्रहवाँ परिच्छेद लिखना शुरू किया। वहाँ पर का विषय यह था कि नायक प्रतापसिंह नायिका मनोरमा को लेकर अँधेरी रात में मकान की ऊँची खिड़की से नीचे फाँदने को तैयार है।

मेरा घर सड़क के किनारे पर था। मुन्नी एकाएक सूचीपत्र के चित्र देखना छोड़कर बरामदे में दौड़ी गई और "काबुली, ओ काबुली" कहकर चिल्लाने लगी।

मैला-ढीला, मोटे कपड़े का कुर्त्ता पहने, साफ़ा बाँधे, कन्धे पर मेवे की झोली डाले, हाथ में दो-चार अंगूर की पिटारियाँ लिये, लम्बे डील-डौल का एक काबुली सड़क पर धीमी चाल से जा रहा था। मालूम नहीं, उसे देखकर मेरी मुन्नी के मन में किस प्रकार का भाव उत्पन्न हुआ। मुन्नी ने ज़ोर-शोर से उसे पुकारना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, मेरा सत्रहवाँ परिच्छेद पूरा होना कठिन है; अभी झोली कन्धे में डाले बला आकर हाज़िर होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किन्तु मुन्नी के पुकारने से ज्यों ही हँसमुख काबुली ने फिर कर देखा, त्यों ही मुन्नी का भाव कुछ बदल गया और उस काबुली को फाटक के भीतर आते देखकर तो वह जान लेकर भीतर भाग गई। अपनी माँ के कथनानुसार मुन्नी को यह विश्वास था कि वह बच्चों को पकड़कर झोली में रख लेता है।

इधर हँसमुख काबुली आकर मुझे सलाम करके खड़ा हो गया। मैंने सोचा, यद्यपि इस समय प्रतापसिंह और मनोरमा, मेरे उपन्यास के नायक-नायिका, उलझन में हैं, तथापि पुकार कर बुलाये गये सौदे वाले से कुछ न ख़रीदना भी अच्छा न होगा।

कुछ मेवा उससे ख़रीदा। उसी सिलसिले में कुछ इधर-उधर की भी बातें हुईं। बातों-बातों में काबुल, रूस और अँगरेज़ों का ज़िक्र छिड़ गया। सीमान्त की रक्षा की पालिसी पर भी कुछ चर्चा हुई।

अन्त को उठकर जाते समय काबुली ने पूछा—बाबू जी। वह बच्ची कहाँ गई?

मैंने मुन्नी के अकारण भय को दूर करने के इरादे से उसे भीतर से बुलवाया। वह बिलकुल मुझ से सटकर खड़ी हुई और बारम्बार काबुली के चेहरे और झोली को सन्देहभरी दृष्टि से देखने लगी। काबुली अपनी झोली से किशमिश और ख़ूबानी निकालकर मुन्नी को देने लगा। मुन्नी किसी तरह लेने पर राज़ी नहीं हुई। उसका सन्देह और भी बढ़ गया; वह मुझ से चिमट गई। उस काबुली से पहला परिचय इस तरह हुआ।

कुछ दिन बाद एक दिन सबेरे मुझे कहीं जाने की ज़रूरत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
पड़ी। घर से निकलते समय मैंने देखा कि दरवाज़े के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठी मुन्नी मौज से मनमानी बातें कह रही है और उसके पैरों के पास बैठा हुआ वही हँसमुख काबुली सुन रहा है। बीच-बीच में वह भी अपनी राय ज़ाहिर करता जाता है। मुन्नी को इस पाँच वर्ष की अवस्था में मेरे सिवा ऐसे धैर्य के साथ उसकी बातें सुनने वाला दूसरा नहीं मिला। मैंने देखा, मुन्नी अपनी धोती के आँचल में बहुत-से बादाम और किशमिश लिये हुए है। मैंने काबुली से कहा—"उसे यह सब क्यों दिया? अब इस तरह न देना।" यह कह कर मैंने जेब से निकाल कर एक अठन्नी उस काबुली को दी। काबुली ने बिना किसी संकोच के वह अठन्नी लेकर अपनी जेब में डाल ली।

काम से लौटकर घर आया। देखा, उस अठन्नी के कारण बड़ा गोलमाल मचा हुआ है।

मुन्नी की माँ वह अठन्नी हाथ में लिये डाँटकर मुन्नी से पूछ रही है—तूने यह अठन्नी कहाँ पाई?

मुन्नी कहती है—काबुली ने दी है।

उसकी माँ ने और भी ज़ोर से डाँटकर कहा—काबुली से तूने अठन्नी क्यों ली?

मुन्नी ने आँखों में आँसू भरकर कहा—मैंने उससे माँगी नहीं; वह आप ही दे गया!

मैंने आकर मुन्नी को विपत्ति से बचाया और उसे लेकर बाहर चला आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम हुआ, काबुली का यह दूसरा ही फेरा नहीं है। वह रोज़ आता है और पिस्ते-बादाम देकर उसने मुन्नी के कोमल हृदय पर बहुत कुछ अधिकार कर लिया है।

काबुली का नाम रहमत था। रहमत और मुन्नी की अवस्था में ज़मीन-आसमान का अन्तर था, तब भी दोनों का हृदय मिल गया। इन दोनों दोस्तों में कुछ प्रश्नोत्तर बँधे हुए थे। जैसे, रहमत को देखते ही मुन्नी हँसते-हँसते पूछती थी—काबुली, ओ काबुली, तुम्हारी झोली के भीतर क्या है?

इसके उत्तर में रहमत एक नाक के स्वर में कहता था—हाँथी।

उसकी इस दिल्लगी का सूक्ष्म मर्म यही था कि उसकी झोली के भीतर एक हाथी है। यह दिल्लगी किसी सूक्ष्म रहस्य से भरी हुई न थी तो भी दोनों दोस्तों को इससे बड़ा आनन्द मिलता था। शरद्-ऋतु के प्रातःकाल में एक बच्चे और एक सयाने-बच्चे के चेहरे पर सरल हँसी की रेखा मुझे भी बड़ी अच्छी लगती थी।

दो-एक बातें और भी ऐसी ही थीं। रहमत मुन्नी से कहता था—मुन्नी, तुम ससुराल जाओगी?

मुन्नी नहीं जानती थी कि ससुराल किसे कहते हैं। लेकिन किसी बात का कुछ जवाब न देकर चुप रहना मुन्नी के स्वभाव के विरुद्ध बात थी। वह उलटकर रहमत से पूछती थी—तुम ससुराल जाओगे?

रहमत अपने कल्पित ससुर के लिए घूँसा तानकर कहता था—मैं ससुर को मारूँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
यह सुनकर, ससुर नाम के किसी अपरिचित जीव की दुर्गति का अनुमान करके, मुन्नी खूब हँसती थी।

इन दिनों साफ़ शरद्-ऋतु है। प्राचीन काल में राजा लोग इसी समय दिग्विजय के लिए यात्रा करते थे। मेरा जन्म कलकत्ते में ही हुआ है। मेरे बाबा युक्तप्रान्त से यहाँ रोज़गार करने आये थे। मैं कलकत्ता छोड़कर, दूकान छोड़कर, कभी कहीं नहीं गया। लेकिन इसी कारण मेरा मन सदा पृथ्वीमण्डल भर में घूमा करता है। किसी देश का नाम सुनते ही मेरा मन कल्पना के सहारे वहाँ दौड़ जाता है। मैं एक स्वतन्त्र रोज़गार करके भी बन्धन में था। दूकान की देख-रेख करने वाला कोई दूसरा आदमी न था इसके सिवा किसी पर पूरा विश्वास करना भी मेरे स्वभाव के विरुद्ध था।

इसके अलावा कलकत्ते में भी मैं घूमने न जाता था। दूकान घर से मिली हुई थी। सवेरे मैं अपने कमरे के बरामदे में कुर्सी डालकर बैठता था और घण्टों उस काबुली से बातें हुआ करती थीं। काबुली के वर्णन से मेरे आगे उसके देश का चित्र-सा अङ्कित हो जाता था। दोनों ओर हरियाली से शून्य दुर्गम ऊँचे पहाड़, बीच में तंग घाटी, लदे हुए ऊँटों की क़तारें, ऊँटों पर और पैदल जा रहे साफ़ा बाँधे हुए सौदागरों और मुसाफ़िरों के झुण्ड इत्यादि दृश्य मानो आँखों के आगे आ जाते थे।

मुन्नी की माँ के स्वभाव में शङ्का की मात्रा कुछ अधिक थी। सड़क पर ज़रा .गुल सुन पड़ते ही उन्हें जान पड़ता था कि शहर भर के सब पागल और मतवाले उन्हीं के घर में घुसने के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
आ रहे हैं। इस पृथ्वी पर इतने दिनों (बहुत अधिक दिन नहीं) से रहने पर भी यह ख़ौफ़ उनके मन से दूर नहीं हुआ कि पृथ्वी भर पर सब जगह चोर-डकैत, मतवाले, साँप, बाघ आदि भरे पड़े हैं।

रहमत काबुली की ओर से भी वे निश्चिन्त न थीं। उस पर खास नज़र रखने के लिए वे मुझसे कई बार कह चुकी हैं। मैंने जब उनके सन्देह को हँसी में उड़ा देने की चेष्टा की तब उन्होंने एकदम सिलसिलेवार कई प्रश्न करके मुझे चुप करा दिया। यथा—"क्या कभी किसी का लड़का चुराया नहीं गया? काबुल में क्या गुलाम नहीं बिकते? एक लम्बा-तड़ङ्गा काबुली क्या छोटी-सी लड़की को चुराकर—फुसलाकर—नहीं ले जा सकता?"

मुझे यह मानना ही पड़ा कि ऐसा होना असम्भव नहीं है; किन्तु विश्वास करने के योग्य नहीं है। विश्वास करने की शक्ति सब की समान नहीं होती, इसी से मेरी स्त्री का ख़ौफ़ दूर नहीं हुआ। लेकिन उसके लिए बिना किसी अपराध के रहमत को घर न आने देने का इरादा मैं न कर सका।

हर साल माघ के महीने में रहमत अपने देश को चला जाता है। इस समय अपना लहना वसूल करने में उसे बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। वह मेवा बेचता है, महाजनी करता है और उधार कपड़ा भी देता है। आज कल उसे घर-घर तगादा करने जाना पड़ता है, तो भी एक बार वह मुन्नी से जरूर मुलाक़ात कर जाता है। जिस दिन सवेरे नहीं आ सकता उस दिन शाम को आता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। किसी-किसी दिन अन्धकार में ढीलाढाला पाजामा और कुर्त्ता पहने, कंधे में झोली डाले—लम्बे-तड़ंगे रहमत को देखकर सचमुच हृदय के भीतर एक खटका-सा पैदा हो जाता है।

किन्तु जब देखता हूँ कि "काबुली, ओ काबुली" कह कर हँसती हुई मुन्नी दौड़ी आती है और दोनों जुदी-जुदी अवस्था वाले दोस्तों में सरल स्वभाव की हँसी-दिल्लगी होने लगती है तब मेरा हृदय प्रसन्न हो उठता है।

मुझे कुछ साहित्य-सेवा का भी शौक़ था। कुछ न कुछ लिखता ही रहता था। मेरी एक नई पुस्तक छप रही थी। एक दिन मैं बैठा हुआ उसी का फ़ाइनल प्रूफ़ देख रहा था।

जाने के पहले आज दो-तीन दिन से जाड़ा खूब कड़ा पड़ रहा है, सब अंग जैसे गले जा रहे हैं। खिड़की से होकर सवेरे की धूप टेबिल के नीचे मेरे पैर के ऊपर पड़ रही है, उस धूप की गर्मी बहुत भली मालूम पड़ती है। शायद आठ बजे होंगे। गले में गुलूबन्द लपेटे हवा खाने के लिए निकले हुए लोग अपने-अपने घर लौटे जा रहे थे। इसी समय रास्ते में बड़ा गुलगपाड़ा सुन पड़ा।

खड़े होकर देखा, रहमत को दो सिपाही बाँधे हुए लिये आ रहे हैं, पीछे बहुत-से लड़कों और राहगीरों का झुण्ड चला आ रहा है। रहमत के कुर्त्ते में खून के दाग थे, और एक सिपाही के हाथ में खून से तर छुरी थी। मैंने जल्दी से फाटक के बाहर जाकर सिपाहियों को रोककर पूछा—क्या मामला है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ सिपाहियों से और कुछ रहमत से सुनकर मैंने जाना कि मेरे परोसी एक चपरासी ने रहमत से एक लोई ली थी। उसके कुछ दाम उस पर बाक़ी थे। वह अब दाम देने से मुकरता है। इसी पर झगड़ा होते-होते रहमत को गुस्सा चढ़ आया और उसने चपरासी को एक छुरी मार दी है।

रहमत उस झूठे बेईमान चपरासी को सैकड़ों बुरी गालियाँ दे रहा था, इसी बीच में "काबुली, ओ काबुली" पुकारती हुई मुन्नी वहाँ पर आकर उपस्थित हुई।

रहमत का चेहरा दम भर के लिए खुशी से खिल उठा। आज रहमत के कन्धे पर झोली न थी, इस कारण उसके बारे में कोई बातचीत हो न सकी। मुन्नी ने आते ही उससे पूछा—क्या ससुराल जा रहे हो?

रहमत ने हँसकर कहा—वहीं जाता हूं।

रहमत ने देखा, इस उत्तर से मुन्नी को हँसी नहीं आई, तब उसने घूँसा दिखाकर कहा—ससुरे को मारता, लेकिन क्या करूँ, हाथ बँधे हैं।

सांघातिक चोट पहुँचाने के अपराध में रहमत को सात साल की सज़ा हो गई।

उसका ख़याल बिलकुल जाता रहा। हम लोग जिस समय अपने घर में बैठे नित्य के अभ्यास के अनुसार सब काम-काज करते थे उस समय, एक स्वाधीन पहाड़ी आदमी जेलखाने की दुर्भेद्य दीवार के भीतर किस तरह सज़ा के दिन काटता होगा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह खयाल भी हमें न होता था।

और मुन्नी ? वह भी उसे भूल गई। उसने पुराने दोस्त को भुलाकर नये बच्चों से दोस्ती कर ली। इसके बाद ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ने लगी त्यों-त्यों मित्रों के बदले सखियाँ जुटने लगीं। यहाँ तक कि अब वह मेरे लिखने-पढ़ने के कमरे में भी नहीं देख पड़ती। मैंने तो आजकल एक तरह से छुट्टी कर ली है।

अब मुन्नी की अवस्था तेरह वर्ष की है। इस साल उसके ब्याह का पक्का प्रबन्ध हो गया है। एक सुशील लड़का कलकत्ते में ही मिल गया है। अगहन में ब्याह होगा।

धीरे-धीरे अगहन आगया। आज ही ब्याह का दिन है। आज का प्रातःकाल बहुत ही सुहावना जान पड़ा। न्यौते में आये हुए लोगों से घर भरा हुआ है। चारों ओर उत्साह और आनन्द की छटा छाई हुई है। मैं अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में बैठकर हिसाब-किताब देखने लगा। इसी समय रहमत ने आकर मुझे सलाम किया।

पहले मैं उसे पहचान नहीं सका। न उसके कन्धे में झोली है, न सिर पर लम्बे-लम्बे बाल हैं और न शरीर में पहले का-सा तेज ही है। अन्त को उसकी हँसी से मैंने पहचाना।

मैंने कहा—क्यों रहमत, कब आया ?

उसने कहा—कल शाम को जेल से छूटा हूं।

उसका यह उत्तर मेरे कानों में जैसे खटक गया। मैंने किसी खूनी को कभी प्रत्यक्ष नहीं देखा; उसे देखकर मेरा हृदय जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

very good
Best

४. अनारकली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनारकली

महाराज अकबर के राज-प्रसाद की दासी की लड़की नादिरा 'अनारकली' के नाम से प्रख्यात थी। एक बार अकबर ने हँसी में उस को इस नाम से पुकारा था। उस समय से उसका यही नाम पड़ गया था।

अनारकली एक बहुत सुन्दर और प्यारी लड़की थी। वह अनार की कली ही के समान सुन्दर तथा सुकुमार थी। राज-प्रसाद की स्त्रियों को वह बहुत प्यारी थी। राज-प्रसाद के नियन्त्रित क्षेत्र में वह 'इसी प्रकार हँसती, खेलती, दौड़ती फिरती थी जैसे आनन्दभरी तितली फूलों के कुञ्ज में'।

'किन्तु एक कली कब तक वे खिली रह सकती है। सूर्य की स्वर्ण किरणें धीरे २ उसके सौन्दर्य तथा सौरभ के आगार को चारों ओर फैला देती हैं। यही दशा इस समय अनारकली की थी।

युवावस्था के आगमन ने उसके सौन्दर्य में एक छटा पैदा कर दी थी और उसको लड़की से एक रमणी के रूप में परिवर्त्तित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दिया था। कैसा आश्चर्यजनक परिवर्त्तन! उसके बचपन खिल कूद का समय व्यतीत हो गया उसके सादा मुसकान एक आश्चर्यजनक जादू था। उसकी काली २ चमकदार आँखों एक चित्ताकर्षक सौन्दर्य था। यौवन का आवेग उसे निचला बैठने देता था। प्रतिक्षण नई अदा देखने में आती थी।

राज-प्रसाद की सब स्त्रियें अनारकली को देख कर ठंढी सें भरती थीं, क्योंकि उसको देख कर उन्हें अपनी यौवनावस्था की याद आ जाती थी। उसकी सखियां उसे छेड़तीं र कहतीं—"आहा! अब तो कली खिलने लगी" तो वह दा से मुस्करा कर जवाब देती "क्यों न खिलेगी?"। अस्तु, च्चे से जवान और लड़की से अनारकली एक मोहनी रमणी गई। राज-प्रसाद में किसी प्रकार का पर्दा न था। अनारकली सौन्दर्य तथा जादू पर सब से पहले जिसकी दृष्टि पड़ी वह अकबर का पुत्र तथा उत्तराधिकारी जहांगीर था।

अनारकली की अदायें ऐसी चित्ताकर्षक थीं कि उसको एक दृष्टि देख लेना मात्र उसके प्रेम को अपने हृदय में स्थान देने के समान था। उसके सौन्दर्य ने सलीम के सुकुमार हृदय को अपने वश में कर लिया था और वह अपने हृदय के भावों को प्रकट करने के लिये उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में था।

एक दिन सायङ्काल का सुहावना समय था। मेंह की झड़ी लगकर खुल गई थी। उद्यान की क्यारियां धुल कर साफ़ हो गई थीं। मोतियों के ताजे फूलों की भीनी २ सुगन्ध मन्द समीर

चार पृष्ठों के बाद देखलीजिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
संकुचित हो गया। मुझे यह मालूम पड़ा कि आज इसका यहाँ से चला जाना ही अच्छा होगा।

मैंने उससे कहा—आज मेरे यहाँ एक काम है, मैं उसमें फँसा हुआ हूं। आज तुम जाओ।

मेरी यह उक्ति सुनकर वह लौट पड़ा। लेकिन बरामदे से नीचे उतरने के पहले ही फिरकर उसने संकोच के साथ कहा—बाबू जी, मुन्नी कहाँ है?

शायद उसको यह विश्वास था कि मुन्नी उतनी ही बड़ी होगी। वह शायद समझता था कि मुन्नी पहले की तरह "काबुली, ओ काबुली" कहती दौड़ी आवेगी और उन दोनों में उसी ढंग से प्रश्नोत्तर होंगे। वह मुन्नी के लिए दो-तीन अंगूर की पिटारियाँ और एक पुड़िया में किशमिश-बादाम वगैरह, किसी स्वदेशी मित्र से माँगकर, लेता आया था।

मैंने कहा—आज घर में काम है; मुन्नी से भी मुलाक़ात नहीं हो सकती।

उसे मानो कुछ बुरा मालूम हुआ। उसने सन्नाटे में आकर स्थिर दृष्टि से एक बार मेरी ओर देखा। उसके बाद "बाबू साहब, सलाम" कहकर वह चल दिया।

मेरे हृदय में एक तरह की चोट-सी लगी। इच्छा हुई, उसे बुला लूँ। इतने में देखा कि वह खुद लौटा आ रहा है।

पास आकर उसने कहा—ये अंगूर और कुछ किशमिश-बादाम मुन्नी के लिए लाया था, उसे दे दीजिएगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कर दिया था। कैसा आश्चर्यजनक परिवर्त्तन! उसके बचपन के खेल कूद का समय व्यतीत हो गया उसके सादा मुसकान में 'एक आश्चर्यजनक जादू था'। उसकी काली २ चमकदार आँखों में एक चित्ताकर्षक सौन्दर्य था। यौवन का आवेग उसे निचला न बैठने देता था। प्रतिक्षण नई अदा देखने में आती थी।

राज-प्रसाद की सब स्त्रियें अनारकली को देख कर ठंढी साँसें भरती थीं, क्योंकि उसको देख कर उन्हें अपनी यौवनावस्था की याद आ जाती थी। उसकी सखियां उसे छेड़तीं और कहतीं—"आहा! अब तो कली खिलने लगी" तो वह अदा से मुस्करा कर जवाब देती "क्यों न खिलेगी?"। अस्तु, बच्चे से जवान और लड़की से अनारकली एक मोहनी रमणी हो गई। राज-प्रसाद में किसी प्रकार का पर्दा न था। अनारकली के सौन्दर्य तथा जादू पर सब से पहले जिसकी दृष्टि पड़ी वह अकबर का पुत्र तथा उत्तराधिकारी जहांगीर था।

'अनारकली की अदायें ऐसी चित्ताकर्षक थीं कि उसको एक दृष्टि देख लेना मात्र उसके प्रेम को अपने हृदय में स्थान देने के समान था'। उसके सौन्दर्य ने सलीम के सुकुमार हृदय को अपने बस में कर लिया था और वह अपने हृदय के भावों को प्रकट करने के लिये उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में था।

एक दिन सायङ्काल का सुहावना समय था। मेंह की झड़ी लगकर खुल गई थी। उद्यान की क्यारियां धुल कर साफ़ हो गई थीं। मोतियों के ताजे फूलों की भीनी २ सुगन्ध मन्द समीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
संकुचित हो गया। मुझे यह मालूम पड़ा कि आज इसका यहाँ से चला जाना ही अच्छा होगा।

मैंने उससे कहा—आज मेरे यहाँ एक काम है, मैं उसमें फँसा हुआ हूं। आज तुम जाओ।

मेरी यह उक्ति सुनकर वह लौट पड़ा। लेकिन बरामदे से नीचे उतरने के पहले ही फिरकर उसने संकोच के साथ कहा—बाबू जी, मुन्नी कहाँ है?

शायद उसको यह विश्वास था कि मुन्नी उतनी ही बड़ी होगी। वह शायद समझता था कि मुन्नी पहले की तरह "काबुली, ओ काबुली" कहती दौड़ी आवेगी और उन दोनों में उसी ढंग से प्रश्नोत्तर होंगे। वह मुन्नी के लिए दो-तीन अंगूर की पिटारियाँ और एक पुड़िया में किशमिश-बादाम वगैरह, किसी स्वदेशी मित्र से माँगकर, लेता आया था।

मैंने कहा—आज घर में काम है; मुन्नी से भी मुलाक़ात नहीं हो सकती।

उसे मानो कुछ बुरा मालूम हुआ। उसने सन्नाटे में आकर स्थिर दृष्टि से एक बार मेरी ओर देखा। उसके बाद "बाबू साहब, सलाम" कहकर वह चल दिया।

मेरे हृदय में एक तरह की चोट-सी लगी। इच्छा हुई, उसे बुला लूँ। इतने में देखा कि वह खुद लौटा आ रहा है।

पास आकर उसने कहा—ये अंगूर और कुछ किशमिश-बादाम मुन्नी के लिए लाया था, उसे दे दीजिएगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं उन्हें लेकर दाम देने के लिए तैयार हुआ। तब उसने जैसे जोश में आकर मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा—आप की मेहर्बानी को मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे दाम न दीजिए। बाबू, तुम्हारे जैसे एक लड़की है वैसे ही मेरे भी एक लड़की है। मेरी लड़की और आपकी लड़की का चेहरा और डील-डौल कुछ-कुछ मिलता-जुलता है। इसी से मुझे आपकी मुन्नी से मोहब्बत हो गई है और मैं कभी-कभी उसके लिए मेवा ले आता हूं।

इतना कहकर उसने कुर्त्ते के भीतर से—न जाने कहाँ से—एक मैले काग़ज की पुड़िया निकाली। बड़े यत्न से पुड़िया खोलकर उसने मेरे टेबिल के ऊपर रख दी।

मैंने देखा, काग़ज के ऊपर एक छोटे हाथ की छाप बनी हुई है। फ़ोटो नहीं है, तैल-चित्र भी नहीं है, हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर उसी की निशानी ले ली गई है। लड़की के इस स्मरण-चिह्न को छाती से लगाकर रहमत हर साल इतनी दूर से कलकत्ते में मेवा बेचने आता था। वह सुकोमल हाथ का चिह्न उसके हृदय को वियोग की व्यथा से बचाये रखता था।

देखकर मेरी आँखों में आँसू भर आये। उस समय मैं यह भूल गया कि वह काबुली सौदागर है और मैं एक प्रतिष्ठित अगरवाला बनिया हूं। मैंने समझा, जो मैं हूं वही वह है। मैं भी पिता हूं, वह भी पिता है। उसकी उस पर्वतवासिनी पहाड़ी लड़की के स्मृति-चिह्न ने मुझको मुन्नी की याद दिला दी। आज ही मुन्नी पराई हो जायगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने उसी दम मुन्नी को भीतर से बुलवाया। इस पर औरतों ने बहुत कुछ आपत्ति की। पर मैंने एक न सुनी। अच्छे गहने और कपड़े पहने मुन्नी आकर लज्जा के मारे मेरे पास खड़ी हो गई।

उसे देखते ही वह काबुली सकपका गया। पहले जैसी वह सरल बातचीत न कर सका। उसके बाद हंसकर उसने कहा—मुन्नी, क्या ससुराल जा रही है?

पर अब मुन्नी ससुराल के अर्थ समझती थी। इस समय वह पहले का-सा जवाब न दे सकी। रहमत के इस प्रश्न से लज्जा के मारे उसका मुँह लाल हो आया और उसने मुँह फेर लिया। जिस दिन पहले-पहल काबुली से और मुन्नी से जान-पहचान हुई थी उस दिन की बात मुझे याद आगई। हृदय में एक प्रकार की व्यथा होने लगी।

मुन्नी के चले जाने पर रहमत एक लम्बी गहरी सांस लेकर ज़मीन पर बैठ गया। एक दम उसके मस्तिष्क में यह विचार घूम गया कि उसकी लड़की भी अब तक बड़ी हो गई होगी और उसे नए सिरे से फिर उससे परिचितता प्राप्त करनी होगी इतना तो निश्चित था कि जैसे वह उसे छोड़ कर आया था वैसा उसे अब न पा सकेगा। और न जाने इन आठ वर्षों में उसमें कितना परिवर्तन आ गया होगा?

मुन्नी के विवाह की शनहाई बज रही थी और शरद् ऋतु के सूर्य की किरणें छन कर हमारे ऊपर पड़ रही थीं। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कलकत्ते की इस तंग गली में बैठे हुए रहमान की आंखों के सामने अफ़गानिस्तान की बंजर भूमि के पर्वत घूम गए।

मैंने एक सौ रुपये का नोट निकाला और रहमान को देकर कहा—"अपने बेटी को मिलने अपने देश लौट जाओ, रहमान! और दुआ देना कि मेरी बच्ची सुखी रहे।"

यह रुपये रहमान को दे देने के कारण मुझे दावत के सामान में कमी करनी पड़ी। मिलट्री बैंड भी न मंगवा सका। इससे घर की स्त्रियां कुछ नाराज़ भी हुईं। परन्तु मुझे हार्दिक आह्लाद था कि दूर देश में एक चिर से बिछुड़े हुए पिता का अपनी इक-लौती सन्तान से मिलाप हो सका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के साथ मिल रही थी। पत्तियों से मेंह की बूँदों के टप २ गिरने से मनोमोहन गाने की ध्वनि पैदा हो रही थी। आकाश साफ़ होता जाता था। चांद का प्रकाश वृक्षों की आड़ में से छन २ कर गिर रहा था। अनारकली संगमरमर की पटड़ी पर अपने पालतू हिरनी के बच्चे की खोज में धीरे २ टहल रही थी। 'आरा! आरा!!'

ये शब्द उसने हिरन के बच्चे को पुकारने के लिये अपनी मीठी तथा सुरीली आवाज़ में कहे। इस के उत्तर में सोने के घुंघरुवों की एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी।

'आरा! आरा?!'

फिर वही झंकार सुनाई देने लगी। किन्तु झंकार बहुत दबी हुई थी। कभी तो बहुत दूर सुनाई देती थी और कभी बहुत निकट। इस से प्रतीत होता था कि हिरन के बच्चे ने अवश्य उसकी आवाज़ सुन ली है। अन्यथा वह उसकी आवाज़ का जवाब क्योंकर दे रहा था। किन्तु वह कहां था? यदि कहीं स्वतन्त्र होता तो एक ही आवाज़ के साथ प्रसन्नता से चौकड़ियां भरता हुआ उसके पास पहुंच जाता। अनारकली ने फिर पुकारना आरम्भ किया। फिर वही झंकार कर्णगोचर हुई। अन्त में उससे न रहा गया और वह उस ओर को चलदी जहां से झंकार आ रही थी। अन्त में वह उद्यान के एक निर्जन कोने में पहुंच गई और अत्यन्त थकी हुई तथा दुःख भरी आवाज़ से पुकारने लगी—"आरा! तू है कहां अभागे?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतने में वह मृग-शिशु एक वृक्ष के पीछे से छलांग मारता हुआ निकला और प्रसन्नता तथा अल्हड़पने से चौकड़ियां भरता हुआ अनारकली के पास आ पहुंचा। सायंकाल की निस्तब्धता में उसके गले तथा पांव में पड़े हुए छोटे घुंघरुओं की झनकार से समय और भी सुहावना हो रहा था। अनारकली उसको चुपकार कर प्यार से कहने लगी—"अरे तू अब तक कहां था? तुझे किसने पकड़ रक्खा था?"

"मैंने।"

अनारकली भयभीत होकर इधर-उधर देखने लगी। पीछे से एक युवा मन्द २ मुसकाता हुआ बोला—

"मैंने ही तुम्हारे हिरन को पकड़ रक्खा था।"

अनारकली के मुख पर लज्जा की ललिमा दौड़ गई। लज्जा से उसके कपोल गुलाबी होगये। मुख को घूंघट में छिपा लिया और झुक कर प्रणाम किया।

"मैं आपसे क्षमा चाहती हूं।" अनारकली ने लड़खड़ाती हुई आवाज़ से कहा—"मुझे मालूम न था कि……।"

बात पूरी भी न होने पाई थी कि सलीम मुसकाता हुआ बोल उठा—"नहीं बल्कि मुझे चाहिए कि मैं तुमसे क्षमा मांगूं" मैंने अब तक तुम्हारे हिरन को रोककर इतनी देर तक तुमको तंग किया। तुम जानती हो कि मैंने तुम्हारे हिरन को किस लिए रोक रक्खा था?" फिर स्वयं ही मुसकाते हुए आगे बढ़ कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उत्तर दिया—"केवल इसलिए कि उसकी आंखें भी तुम्हारे ही समान हैं।"

अनारकली चुपचाप खड़ी हुई सुनती रही। उसने पहिले भी यह सुन रक्खा था कि राजकुमार उस पर मोहित है। अब सलीम के शब्दों ने संशय के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा।

अनारकली एक अज्ञात प्रसन्नता के कारण चुपचाप खड़ी थी। सलीम उसके पास खड़ा था, अनारकली ने दृष्टि ऊपर को उठाकर सलीम को देखा। दोनों की आंखें चार हुईं-सलीम मुसकाता हुआ उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था।

सलीम की मुसकान ने अनारकली के ओठों पर भी लज्जा-मिश्रित मुसकान की लहरें पैदा कर दीं।

सलीम ने धीरे से अपने हाथ अनारकली की गरदन में डाल दिये और उसको अपनी ओर खैंचा।

सलीम जोश से बोल उठा—"अनारकली! तू मेरी है और केवल मेरी है।"

साथ ही धीरे से दोनों के अधर एक दूसरे से मिल गए। अनारकली कुछ लड़खड़ाई। सलीम की बाहें उसके गले में पड़ी हुई थीं। वह एक ओर को खिसक गई।

वह मृग-शिशु अचानक चौंक पड़ा, मानो किसी बुरे स्वप्न से चौंक उठा हो। जैसे ही उसने ऊपर की ओर दृष्टि की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उसकी बड़ी २ आँखों से आँसू की दो बड़ी बूँदें चांद के शुभ्र प्रकाश में मोतियों के समान चमक उठीं।

[३]

उस रात को अनारकली सो न सकी। अवश्य आज उसका भाग्य चमक उठा था। गत सायङ्काल की घटना ने उसको जागृत रक्खा। सलीम के उस अद्भुत, अचानक तथा खुल्लम-खुल्ला प्रेमोद्गार ने एक अवर्णनीय आनन्द-धारा उसके शरीर में पैदा करदी। वह एक विचार-सागर में डूबी हुई थी। आश्चर्य-जनक आनन्द के भावों से भरी हुई थी।

आँख बन्द किये हुए वह अपनी शय्या पर लेटी हुई थी किन्तु जाग रही थी। इस समय उसके मस्तिष्क में एकमात्र गत घटना के विचार थे। वह कल सायङ्काल की छोटी से छोटी घटना पर फिर से विचार कर रही थी।

सलीम ने उसे किस प्रकार पुकारा था ? उसकी वाणी में कैसी मिठास था ? उसने अपने मुख पर ललिमा का दौड़ जाना किस प्रकार अनुभव किया था ?

सलीम के प्रेमालिङ्गन से वह किस प्रकार लड़खड़ाकर खिसक गई थी। किस प्रकार दोनों की आँखें चार हुई थीं। सलीम के नेत्र कितने उत्सुकता तथा उत्प्रेक्षापूर्ण थे ? उसके नेत्रों से कैसी अल्पकालिक किन्तु अनुभव विनयपूर्ण क्षमा-याचना प्रगट होती थी जिसने उसको विवश कर दिया था ?

हाय ! फिर क्या हुआ आह ! वह आनन्दमय घड़ी जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
दोनों अचेतावस्था में आप ही आप मिल गये थे। इस याद से उसके सुकुमार कपोल गुलाब पुष्पों के समान प्रतीत होते थे। यही भाव था जो उसके शरीर में गुप्तरूप से कार्य कर रहा था। बार २ वह अनुभव करती थी कि उसका हृदय धड़क रहा है। फिर वही आनन्द-प्रद विजय का भाव आ जाता था। इन विचारों ने उसके मस्तिष्क पर अधिकार जमा रक्खा था। फिर भला वह कैसे सो सकती थी?

"प्रेम! हां यही, और एक मात्र यही।"

राजकुमार ने उस पर अपना प्रेम प्रकट किया। कैसी आश्चर्यजनक बात? वह भली भाँति न समझ सकी कि यह घटना किस प्रकार हुई?

क्या वह वास्तव में सुन्दरी थी? और अत्यन्त सुन्दरी? हां! उसको विश्वास हो गया कि वह वास्तव में सुन्दरी है। इस आनन्द-प्रद विचार, इस सौन्दर्यगर्व ने उसको पागल बना दिया।

'प्रेम तथा आनन्द-प्रमोद में जीवन व्यतीत करना—कैसा मनभावना विचार! एक क्षण के लिए आनन्दमय भविष्य जीवन का दृश्य उसके नेत्रों के सामने फिर गया।'

सलीम उसे अपनी हृदय-अधिष्ठात्री बनायेगा और यह प्रेम का जादू दोनों को आनन्द प्रमोद की ओर ले जायगा।

"आहा! अय शुभ घड़ी! ईश्वर के लिये आ और शीघ्र आ"।

इस प्रकार अनारकली विचार-सागर में डुबकियां ले रही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
थी। सुखद तथा आनन्दप्रद जलसागर से हर्ष का तूफ़ान उठा और उसके मस्तिष्क को घेर लिया।

वह प्रतिक्षण इन्हीं बातों पर बार २ विचार कर रही थी। तथा प्रत्येक बार एक नये आनन्द का अनुभव करती थी तथा प्रसन्नता के कारण आपे से बाहर हो जाती थी।

सलीम ने भी इसी प्रकार विकलता से रात काटी। अभी उसकी उठती जवानी थी। अभी यौवनावस्था ने पदार्पण किया ही था। किन्तु उससे अधिक और कौन प्रेम कर सकता है, जिसके हृदय में भोले भालेपन के साथ यौवन का जोश भी हो। इस आयु का प्रेम पवित्र तथा अद्भुत होता है। प्रेम-मार्ग में पग रखने का सलीम के लिये यह पहला ही अवसर था। केवल अनारकली ही से वह दो चार हुआ था। इससे पहले उसका दिल किसी और पर नहीं आया था।

सलीम अनारकली के सुन्दर नेत्रों की चित्ताकर्षिणीशक्ति, मीठी वाणी तथा लाल कपोलों तथा उसके साथ अपने प्रेम की कल्पना में डूबा हुआ था। इसी प्रेमावस्था में वह विकलता की नींद सो गया।

[४]

कुछ ही दिनों के बाद राज-प्रसाद के दरबार में आनन्द प्रमोद का एक जलसा हुआ। अकबर, जो संगीत-विद्या का बड़ा प्रेमी तथा सहायक था, बहुधा सायङ्काल के समय गाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
सुनकर मनोरञ्जन किया करता था। गाने और नाचने में अनारकली बड़ी कुशल थी। इसी कारण वह अकबर की आंखों में बस गई थी। गाने बजाने का कोई जल्सा उसके बिना पूर्ण नहीं होता था। जब राजाधिराज अकबर सायङ्काल राज-प्रसाद की बेगमों में व्यतीत करता था, तो अनारकली को उसके सामने नाचना और गाना पड़ता था।

आज शीशमहल चमकते हुए रंगबिरंगे क़न्दीलों के प्रकाश से जगमगा उठा था। असंख्य आइनों पर उनका अक्स पड़ने से महल जड़ाऊ आभूषण के समान चमक रहा था। कमख्वाब का फ़र्श बिछा हुआ था जिस पर अकबर शोभायमान था। सारी बेगमें गालीचों पर लगी हुई सुसज्जित मसनदों पर विराजमान थी।

गाना आरम्भ हो चुका था, कई गानेवाली रमणियों का नाच समाप्त हो चुका था, किन्तु अनारकली का कहीं पता न था, थोड़ी देर के बाद उसके गाने की बारी थी। वह अदा के साथ इठलाती हुई उपस्थित हुई। महाराज के सम्मान को झुकी और चुपचाप खड़ी हो गई।

आज अनारकली अनारी रंग के सुनहरे काम के वस्त्र पहिने हुए थी। बाल-बाल में मोती पिरोये हुए थी। सुराही के समान गरदन तथा उभरी हुई छाती पर मोती ही मोती झलक रहे थे। आजतक किसी ने उसको ऐसे तड़क भड़क के वस्त्रों में इस अदा के साथ नहीं देखा था यद्यपि उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सौन्दर्य को किसी प्रकार के आभूषणों की आवश्यकता नहीं थी किन्तु उस सायङ्काल को जवाहरात तथा भड़कीले वस्त्रों ने उस की सौन्दर्याग्नि को और भी प्रज्वलित करदिया था।

अकबर ने आंख उठाकर अनारकली की ओर देखा और मुस्करा दिया। उसने कहा—"पूर्ण चन्द्रमा को छोटे २ चमकदार तारों पर विजय प्राप्त करने के लिये हाले की आवश्यकता नहीं पड़ती। तो फिर अय सुन्दर लड़की! ये लड़क भड़क के वस्त्र किस लिए?

अनारकली के मुखारविन्द पर लज्जा की एक हल्की सी लहर दौड़ गई।

वह उन सब बातों को जो उस के हृदय में थी किस प्रकार प्रकट कर सकती थी? सलीम वहां उपस्थित था। फिर क्योंकर वह अच्छे से अच्छे वस्त्रों से सुसज्जित होकर न आती?

सारंगी के धीमे सुरों ने महल में समा बांध रक्खा था। अनारकली खड़ी हुई सुन रही थी। उसने बाजेवालों की ओर सिर हिलाकर चुप हो जाने का संकेत किया और स्वयं आगे बढ़कर अपने दायें पैर को गति दी। सोने के पायजेब के घुंघरुवों की कोमल झन्कार ने उस निस्तब्धता में एक लहर पैदा कर दी। धीरे से उसने पैर को आगे गति दी। फिर वही छम छम की मनोहर ध्वनि पैदा हुई और सारंगी के सुर में लय हो गई। उसने बहुत धीमे तथा बारीक राग में गाना आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

किया। यह धीमी किन्तु सुरीली आवाज़ बातों की आवाज़ में घुल मिल गई। अनारकली की आवाज़ कभी तो इतनी धीमी होती थी कि केवल उसके हिलते हुए होंटों ही से प्रगट होता था कि वह गा रही है। धीरे २ आवाज़ साफ़ होती जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि कोई मधुर-कण्ठ पक्षी चान्दनी रात में मस्त कर देने वाला राग अलाप रहा है।

उस सायङ्काल को गाते समय अनारकली के दिल में एक विशेष आनन्द का भाव लहरें ले रहा था। 'उसको मालूम होता था कि सचमुच वह कोई स्वप्न देख रही है। वास्तव में यह केवल 'प्रेम' ही था जो उसके रोम २ में रम रहा था। उसने अपने चारों ओर एक दृष्टि डाली'।

सलीम से आंखें चार हुईं। वह भी इसकी ओर देख रहा था। उस की बड़ी २ आंखों से चाव टपका पड़ता था। 'गुप्त भटों❀ की याद अनारकली के दिल में ताज़ा हो गई'। उसके नेत्रों तथा मुखारविन्द से अपार आनन्द का भाव प्रगट होने लगा और सलीम—उसकी आंखों में अनारकली के सौन्दर्य की प्रतिमा थी। वह सोचने लगा। "अनारकली की आंखों में कैसा सौन्दर्य तथा प्रेम भरा हुआ है।"

अनारकली गाने लगी:—

मन तो शुदम् तो मन् शुदी, मन् तन् शुदम् तो जां शुदी।

❀ जिस सायंकाल का पहले वर्णन किया गया है उसके बाद भी कई बार अनारकली और सलीम एक दूसरे से मिल चुके थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

ता कस न [illegible] ॥

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गाने के ये शब्द अनारकली के किसी ऐसे भाव को प्रकट कर रहे थे जिस को उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। 'प्रेम-सागर में डुबकी लगाते हुए अपने प्रेमी के सम्मुख गाना' और फिर उन रागनियों का गाना जिनके भाव उसके हृदय में समाये हुए थे—वह सब कुछ भूल गई। उसको इसका भी ध्यान न रहा कि वह अकबर के सम्मुख गा रही है। उसको केवल एक बात का ज्ञान था, 'उसको प्रतीत होता था कि केवल दो ही प्राणी उपस्थित हैं—एक तो वह स्वयं और दूसरा उस का प्रेमी।' वह नाच गा रही थी, किन्तु आंखें सलीम की आंखों ही से मिला रही थी। उसके नेत्रों का प्रेम-भाव उसकी सौंदर्याग्नि को दहका रहा था। इसी समय एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी। यह अकबर की आवाज़ थी जिसने गाना बजाना सब बन्द करा दिया। चारों ओर भय तथा निस्तब्धता छा गई।

अकबर एकदम क्रोध में आ गया। उसकी भवें चढ़ गईं। क्रोध के मारे आंखें लाल हो गईं। वह कब से शीशों के प्रतिबिम्ब में प्रेम-आवेग के उन वाणीहीन सन्देशों को, जो सलीम की ओर से अनारकली के पास तथा अनारकली की ओर से सलीम के पास बराबर आ जा रहे थे, देख रहा था और शीशे में दोनों के विचार पढ़ने के प्रयत्न में लगा हुआ था। दोनों का आंखें लड़ाना इतना भाव-पूर्ण था कि अकबर को दोनों के हृदय के भाव पूर्णतया प्रकट होरहे थे निस्सन्देह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
उन दोनों में एक प्रकार का गाढ़ा सम्बन्ध था, जिससे अकबर अब तक अपरिचित था। वह बराबर ध्यानपूर्वक दोनों को ताड़ रहा था। प्रत्येक दृष्टि-क्षेप उसके सन्देह को बढ़ा रहा था। जब उसने अनारकली को मुसकाते देखा और मुसकान का उत्तर सलीम की ओर से भी दिया गया तो उसको पूर्ण विश्वास होगया कि अनारकली सलीम को अपने यौवन-पाश में फांसने का प्रयत्न कर रही है।

यद्यपि अकबर अविचल-प्रकृति का था और बड़ा धैर्यवान् था किन्तु इस समय उसका स्वभाव भी बिगड़ गया। वह क्रोध में आकर आपे से बाहर हो गया। क्या सलीम उसका बेटा तथा उत्तराधिकारी होकर एक दासी की लड़की से प्रेम करेगा? एक ऊँची आवाज़ में शहर के दारोगा को बुला कर अपनी उंगली को झटका देते हुए अनारकली की ओर संकेत करके कहा—"इस स्त्री को यहाँ से ले जाओ और राज प्रसाद के बन्दी-गृह में बन्द करदो जिससे उन सब नीच जात की स्त्रियों को जो अकारण बिना अवसर के इस प्रकार का बनाव सिंगार करती हैं, भय हो तथा उपदेश मिले।"

अकबर के शब्द राजप्रसाद की वायु में गूँज रहे थे तथा सारे जलसे में सन्नाटा छाया हुआ था।

अनारकली अकबर के मुख को आश्चर्य से ताक रही थी। किन्तु जब उसने अकबर की उंगलियां अपनी ओर उठती देखीं तो उसके शरीर में भय की एक लहर फैल कर रह गई। महा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
राजा के इस आज्ञा देने का क्या आशय ? उसने अपने दिल से पूछा—"क्या स्वयं मेरे ही लिए यह आज्ञा निकली है ?" वह किससे पूछे ? उसने एक भयानक आवाज़ सुनी। उसका सर झुक गया। उसके नेत्रों की ज्योति जाती रही। जो कुछ भी उसने सुना था, उसे पूर्ण रूप से न समझ सकी।

अचानक उसे मालूम हुआ उसके हाथ को किसी ने छुआ। यह एक ख्वाजासरा था जो उस को बन्दीगृह की ओर ले जाने को आया था। उसके मुख तथा नेत्रों से शोक तथा आतुरता टपक रही थी। पागलों के समान उसने ख्वाजेसरा से अपने आपको छुड़ा लिया और जोर से चिल्लाकर अकबर के पैरों पर गिर पड़ी। पतझड़ के दले-मसले पुष्प के समान वह वहां पर पड़ गई। अन्धकार ! निस्तब्धता तथा 'ऐसा अन्धकार जो किसी दीपक के बुझ जाने से बहुत अधिक फैल जाता है। ऐसी निस्तब्धता जिसमें पक्षियों के पर फड़फड़ाने का शब्द भी नहीं सुनाई देता है।' अत्यन्त भयानक दृश्य था, दीपक बुझ गया था। चारों ओर निस्तब्धता थी। इस सुनसान अन्धकार में अनारकली को होश आया।

आँखें फाड़ फाड़ कर उसने देखना आरम्भ किया और विचार-सागर में डूब गई। उसको प्रत्येक वस्तु अन्धकारमय दीखती थी। अचानक फिर वही 'रक्त को जमा देने वाली याद उसके मस्तिष्क में आई। 'आह ! कैसे भय का सामना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
था ! एक बन्दी अवस्था में मृत्यु के अतिथि के रूप में पत्थर के फ़र्श पर पड़ी हुई थी।

उसका दिल बैठ गया जब उसने उस भयानक मृत्यु का विचार किया जिससे प्रातःकाल को वह आलिंगन करने वाली थी। केवल कतिपय घण्टे और जीवित रहने के पश्चात् उसका आनन्दमय जीवन समाप्त हो जायगा।

प्रत्येक वस्तु का अन्त कर देने वाली मृत्यु प्रतिक्षण उससे निकटतर होती जाती थी। वह कांप रही थी तथा अत्यन्त निराशा की दशा में हाथ मल रही थी। आह ! निर्दय तथा क्रूर मृत्यु !! कितनी भयानक तथा कराल मृत्यु अनारकली की ओर बढ़ रही थी। मृत्यु की प्रतीक्षा में रहना तथा मृत्यु आने के क्षणों को गिनना स्वयं मृत्यु से सहस्र गुण अधिक बुरा है।

अनारकली बैठी हुई थी किन्तु सर में चक्कर आ रहे थे। वह ऊँचे नीचे फर्श पर किसी घायल के समान सर के बल गिर पड़ी। हृदय के घाव तथा व्यथा से रोने लगी। वहां उस को कोई बचाने वाला न था। सहानुभूति दिखाने वाला न था। न था। ढारस बंधाने वाला कोई न था। सलीम, जिसके लिए इस बेचारी को ऐसी भयानक मृत्यु का सामना करना पड़ा, कहां था ? सलीम का विचार आते ही एक लम्बी आह उसके दिल में पैदा हुई और इतना रोई कि इससे अधिक रोना सम्भव न था। जब उसकी हिचकियां बन्द होगईं और सुध बुध आई तो उसने शान्ति से सोचना आरम्भ किया। उसका दिल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
फिर उसको उन्हीं घटनाओं की ओर ले चला जो उसकी मृत्यु का कारण हुई थीं। वह सोचने लगी उसने ऐसा कौनसा काम किया था जिससे वह इसकी अधिकारिणी ठहराई गई। उसने केवल राजकुमार से प्रेम किया। किन्तु क्या यह कोई बुरा काम है? कोई पाप है? उसे इस बात का विश्वास न होसका कि उसने वास्तव में कोई बुरा काम किया था।

"हे ईश्वर तू ने आशा क्यों उत्पन्न की जब कि उसका पूरा होना ही नहीं था। आह! फिर किस लिये? किस लिये?

"कोई वस्तु ऐसी न थी जो उसको शान्ति दे सकती। कोई पदार्थ ऐसा न था जो उसका भय दूर कर सकता। उसका ध्यान सलीम की ओर गया। क्या वह उसके लिए कुछ नहीं कर सकता। फिर एक विचार उसके दिल में आया। क्या वास्तव में राजकुमार को उससे प्रेम है? या राजकुमार का प्रेम केवल साधारण विचारों के समान था जिसको मनुष्य प्रति क्षण भुलाता रहता है। यह विचार मृत्यु के विचार से भी अधिक दुःखद था। इस अविश्वास में कि सलीम उसे सच्चे दिल से न चाहता था मृत्यु के समान कड़वापन थी। उसी समय उसने किसी के पैरों की आहट सुनी। द्वार खुला और एक सन्तरी हाथ में मशाल लिए हुए अनारकली की कोठड़ी में आया। उसके पीछे एक और मनुष्य भी आया। यह सलीम था।

अनारकली ने आंख उठा कर देखा तो सलीम को अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
पास खड़ा पाया। तत्काल उसके मुंह से एक चीख निकल गई। कोई एक क्षण के पश्चात् दोनों एक दूसरे से चिमट गये। सन्तरी मशाल को इस अंधेरी कोठड़ी के एक कोने में खड़ी करके चल दिया।

अनारकली और सलीम दोनों एकान्त में रोते रहे। हृदय की व्यथा के कड़वे आंसू बहाते रहे। बहुत समय के पश्चात् दोनों शान्त हो बातचीत करने के योग्य हुए।

सलीम ने धीरे से कहा—"मेरी अच्छी अनारकली! मैं तुझे बचा सकता हूं। मेरे साथ २ चली आ।"

अनारकली उत्सुकता से सलीम की ओर देखने लगी। सलीम ने कहा—मैंने सवारी के लिये दो घोड़ों का प्रबन्ध कर लिया है। तड़का होते २ हम कई मील दूर निकल जायेंगे। हम ऐसा भेस बदल लेंगे कि कोई भी हमें न पहचान सकेगा।"

अनारकली ने दुःख भरे शब्दों में कहा—"अवश्य हमारा पीछा किया जावेगा तथा पकड़ लिए जायेंगे। मेरे लिये तुम अपनी जान क्यों जोखों में डालते हो?"

मेरी प्यारी! मेरे साथी ऐसे हैं जो हमारा पीछा करने वालों को उल्टा पता बतायेंगे। हमारे घोड़ों के सुमों पर ऐसी चीजें लिपटी हुई हैं कि यदि हम पतातोड़ भी भागें तो भी उनका शब्द न सुनाई देगा। अच्छी अनारकली! शीघ्र निकल चलें। एक एक क्षण इस समय बहुमूल्य है तथा समय वृथा जा रहा है"।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
अनारकली असमंजस में पड़ गई। वह सोचने लगी कि सलीम की जान जोखों में डालने का उसको क्या अधिकार है ?

उसने ठण्डी सांस लेकर कहा—"प्यारे सलीम ! निस्संदेह मेरी मृत्यु आ गई है। ईश्वर तथा महाराज दोनों की यही इच्छा है तो मैं कैसे जीवित रह सकती हूं ? मैं इस तंग कोठड़ी को कदापि नहीं छोड़ूंगी जब तक मैं अपनी मृत्यु से आलिङ्गन करने के लिए यहां से न निकाली जाऊं।

सलीम ने आश्चर्य से कहा—"यह क्या पागलपन। मैं तुझे एक क्रूर तथा निर्दयी मनुष्य के हाथ से भयानक मौत मरने के लिये यहां कदापि नहीं छोड़ सकता "

सलीम ने अनारकली को ज़बदस्ती ले जाने के लिये अपनी ओर खैंचा, किन्तु उसने ज़ोर के साथ अपने को छुड़ा लिया। वह भर्राये हुये शब्दों में बोली—"मेरे प्यारे ! मेरे दिन अब पूरे हो चुके हैं। मौत के सामने किसी की नहीं चलती। अब जीते बचने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। महाराज जो कुछ भी हैं हमारे स्वामी हैं। उनका प्रत्येक शब्द धर्मशास्त्र है। तुम मेरे साथ क्यों चलते हो जब कि इस बात का पूरा विश्वास है कि हमारा पीछा अवश्य किया जायगा। क्या तुमने उन सब बातों के विषय में जो हमारे पकड़े जाने का कारण हो सकती हैं, अच्छी प्रकार सोच लिया है "।

सलीम ने विकल हो शीघ्रता से उत्तर दिया—"इस समय मैं उन बातों की व्याख्या नहीं कर सकता। यह समय व्याख्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
करने की नहीं है। मेरा पिता बड़ा क्रूर तथा निर्दयी है अब मैं क्रूर आदेशों का पालन करना नहीं चाहता। वह मुझे मेरी इच्छा के अनुसार रहने देना नहीं चाहता, प्रत्युत अपनी क्रूरता तथा आज्ञा के आधीन रखना चाहता है। सदैव के लिये कोई भी दिल्ली के सिंहासन का अधिकारी नहीं रह सकता। मैं भी शीघ्र या कुछ काल पश्चात् उसका स्वामी हूंगा।"

अनारकली चुपचाप सलीम की बातें सुनती रही। सलीम न समझ सका कि अनारकली की इस अस्वीकृति का क्या कारण है? वह किस लिये बन्दी-गृह से मुक्त होने के लिये अनिच्छा प्रगट कर रही है और इस प्रकार मृत्यु की बाट जोह रही है?

यह देखकर कि यह बहुमूल्य का समय इस प्रकार वृथा नष्ट हो रहा है, सलीम ने इस अन्धकारमय बन्दीगृह को छोड़ देने तथा उसके साथ चलने की प्रार्थना की, किन्तु अनारकली यह समझ कर कि महाराज की रुष्टता सलीम की जान जोखों में डालने वाली है, प्रत्येक बार अस्वीकृति प्रगट करती रही।

अन्त में सलीम से न रहा गया। वह आवेग में आकर बोल उठा—

"अनारकली! यह अस्वीकृति किस लिये? तेरे बिना मैं किस प्रकार जीवित रहूंगा? यदि तू मरना चाहती है तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं भी मरने के लिये तैयार हूँ। तू जब तक मेरे साथ न चलेगी मैं कदापि यहां से न टलूंगा।"

अनारकली के विचारों में यकायक परिवर्त्तन हो गया। वह घबराकर बोल उठी—'तो क्या अभी बहुत समय नहीं हुआ? क्या अब भी हम यहां से निकल सकते हैं?" सलीम ने उस को विश्वास दिलाया—"किसी प्रकार का भय नहीं है। अब भी समय है।" यह कहकर वह अनारकली का हाथ पकड़कर बन्दीगृह से बाहर ले चलने को खड़ा हो गया।

उसी समय ज़ोर से द्वार के खड़खड़ाने का शब्द सुनाई दिया और तत्काल द्वार खुल पड़ा। एक मनुष्य जल्दी से उस कोठड़ी में आया तथा चढ़े हुए सांस को रोक कर बड़ी शीघ्रता से कहने लगा—"राजकुमार! महाराज इस मार्ग से आ रहे हैं।"

सलीम बोल उठा—"अब क्या होगा?"

आगन्तुक ने उत्तर दिया—"आप समय न खोयें और इसी समय इस कोठरी को छोड़ दें। जब महाराज लौट जायें फिर चले आयें।"

सलीम ने उस मनुष्य से कहा—"बाहर ठहरो, रहीमखां! मैं अभी आता हूँ।"

यह कह कर उसने एक रखवाले के वस्त्र, जिन को वह आते समय अपने साथ लेता आया था, पहन लिये। एक क्षण चुपचाप खड़े रहने के पश्चात् उसने अनारकली को लिपटा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कहा—"अच्छा प्यारी! मैं अभी थोड़ी ही देर में वापिस आता हूँ! तैयार रहना।" अनारकली ने निराशा की दृष्टि से सलीम की ओर देखा किन्तु एक शब्द भी मुँह से नहीं निकला।

सलीम ने उसके सर को ऊपर की ओर उठाया और झुक कर एक चुम्बन लिया। इसके पश्चात् दीपक को बुझाकर वहां से चल दिया।

अनारकली अपने स्थान से नहीं हिल सकी। न कोई शब्द मुँह से निकाल सकी। वह चुम्बन का उत्तर तक न दे सकी।

सलीम के चले जाने के बाद ही उसने अपने बच जाने की आशा को भी विदा कर दिया। अन्धकार ने फिर वही एकान्त तथा निराशा का भयानक दृश्य उपस्थित कर दिया।

[६]

कोई भी नहीं आया। रहीमखां ने झूठ ही कह दिया था। न महाराज और न कोई अन्य मनुष्य ही अनारकली के इस अन्धकारमय बन्दीगृह की ओर आ रहा था।

राजकुमार सलीम ने अपना एक गिरोह पृथक बना रक्खा था। उसकी स्वतन्त्र प्रकृति ने उसके हृदय में अपने पिता के जीवन-काल ही में स्वतन्त्रता तथा स्वाधीनता प्राप्त करने का विचार उत्पन्न कर दिया था। स्त्रियों के महल के छोटे से बन्दीगृह का दारोगा रहीमखां भी सलीम के अनुयायियों के गिरोह में था। उसी की सहायता से सलीम इस रात को बन्दीगृह में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनारकली से मिल सका था। रहीमखां यही समझे हुए था कि राजकुमार केवल अनारकली की अन्तिम भेंट तथा अन्तिम नमस्कार के लिये आया है। उसको इस बात का पता नहीं था कि अनारकली के साथ भागने की तैयारी में लगा हुआ है।

जिस समय सलीम अनारकली के पास आया था, रहीमखां हँसी में द्वार के बाहर खड़ा हुआ दोनों की बातें सुन रहा था। जब उसे यह मालूम हुआ कि राजकुमार उसकी संरक्षता में छोड़े हुए बन्दी को यहां से निकाल ले जाना चाहता है, तो उस के हाथ पांव फूल गये, क्योंकि वह जानता था कि यदि महाराज को इस बात का पता चल गया तो उसकी जान के लाले पड़ जायेंगे। साथ ही साथ सलीम को रोकना भी उचित न समझता था। क्योंकि यह बात निश्चित थी कि महाराज बूढ़े हो चुके हैं और उनके सिंहासन पर एक न एक दिन सलीम अवश्य बैठेगा। सांप मरे और लाठी भी न टूटे—यह विचार उसने एक उपाय सोचा जिससे वह सलीम को रुष्ट किये बिना ही वहां से निकालने में कृतकार्य हो गया।

जैसे सलीम अन्दर से निकला, रहीमखां ने उसको कुछ दूर पर दो लालटैनें दिखलाईं जो स्वयं उसके आदमियों ने जलादी थीं। किन्तु राजकुमार ने फिर उनकी ओर दृष्टि ही न की, क्योंकि पिता के डर से उसकी आंखें चौंधिया गई थीं! उसके साहस ने साथ न दिया कि उस समय वह अपने पिता के सामने प्रगट होकर खुल्लम-खुल्ला विरोध करे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उसी दशा में रहीमखां ने उसका हाथ पकड़ कर अन्तःपुर की गलियों में होते हुए उसके कमरे में पहुंचा दिया।

कुछ देर बाद सलीम ने पूछा, क्या तुम निस्संशय होकर कह सकते हो कि महाराज ही थे।"

रहीमखां ने विश्वास दिलाते हुए कहा 'हां हजूर" सलीम ने उत्सुकता से पूछा—"यहां आने का कोई कारण?" रहीमखां बोला—"हजूर मालूम ही होगा कि महाराज अकबर बहुधा रात्रि के समय अचानक यहां आकर निरीक्षण किया करते हैं। आज भी उनके आने की यही कारण हो सकता है।"

सलीम ने हंसकर कहा—"हां! प्रातःकाल जब वह यहां आयगा तो उसको मालूम हो जायगा"।

कुछ मिनट व्यतीत हो गये। रहीमखां की चिन्ता और बढ़ती गई क्योंकि राजकुमार की बातों से उसको विश्वास हो गया कि राजकुमार अभी अनारकली को यहां से लेकर भाग जायेगा। अब क्या करना चाहिये? यदि ऐसा हुआ तो प्रातःकाल उसकी जान की खैर नहीं है। किन्तु शीघ्र ही एक सुगम उपाय उसने सोच लिया।

रहीमखां ने निवेदन किया—"हुजूर थकान दूर करने के लिये शराब के दो एक प्याले पीलें"।

थकान के कारण सलीम का गला बिल्कुल सूख रहा था, इस कारण उसने कहां—"हां! शीराज की शराब का एक प्याला लावो"।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहीमखां शराब लेने के लिये पास के कमरे में चला गया उसने सुराही लेकर चुपके से अपने कमर बन्द में से एक पुड़िया निकाली और एक सफेद चूर्ण उसमें घोल दिया।

सलीम उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब रहीमखां शराब लाया तो वह तत्काल गट २ चढ़ा गया और दूसरा प्याला मांगा। रहीमखां ने दूसरा प्याला भर कर दिया जिसको राजकुमार बड़ी उत्सुकता से पीगया।

कुछ देर बाद सलीम सरूर में आकर बोला—"रहीमखां! मुझे अनारकली के पास ले चल"।

"मैं तो हुजूर की सेवा के लिये उपस्थित हूँ, किन्तु—"

"किन्तु क्या?"

"किन्तु महाराज अब तक वहीं होंगे"

"अरे भाई! महाराज को तो किसी चौकीदार के घर पैदा होना चाहिये था। वह हिन्दुस्तान का शासन करने के योग्य नहीं है। जावो देखो तो अभी वहीं है या टल गया?"

"जैसा हुजूर का हुक्म"

रहीमखां झुक कर प्रणाम करके वहां से चल दिया। वह इस बात से निश्चिन्त था कि औषधि अपना काम कर रही है और सलीम प्रातःकाल तक क्या उठ सकता है?

[७]

अनारकली सलीम के लौटने की बड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। किन्तु वह अब तक नहीं आया। अनारकली की विकलता का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ ठिकाना नहीं था। किन्तु अब भी आशा की आभा कुछ २ झलक रही थी कि शायद अब भी सलीम आजाय और उसको यहां से छुड़ा ले जाय।

प्रातःकाल के प्रकाश ने धीरे धीरे उस अन्धकारमय कोठड़ी के अन्धकार को, जिसमें अनारकली बन्द थी, दूर कर दिया। इस अन्धकारमय प्रकाश में उसको अपने सामने चमकती हुई एक वस्तु दृष्टिगोचर हुई। शीघ्र ही उसको याद आ गया कि यह उस अंगूठी के हीरे की चमक है जो उसकी माँ ने मरते समय उसको दी थी। अनारकली की माँ ने यह अंगूठी अनारकली के हाथ में पहिनाते हुए कहा था—"मुझे इसकी कभी आवश्यकता न पड़ेगी, किन्तु फिर भी यदि इस संसार में तेरे लिये शान्ति प्राप्त करने के लिये कोई स्थान न रहे, तो तत्काल इसको चूस लेना।"

अनारकली को अपनी माँ की अन्तिम वसीयत याद आ गई। उसने तत्काल अंगूठी में से उस हीरे को निकाल कर मुंह में डाल लिया। बचपन में दिन और अपनी माँ के विचार उसके मस्तिष्क में घूमने लगे। इस के बाद उसे सलीम के प्रेम की दुःखजनक याद फिर आगई।

इन्हीं विचारों में उसके दुःख भरे जीवन का अन्त हो गया। वह सर के नीचे अपने सुकुमार हाथ का तकिया लगाये ठण्डे, कठोर तथा ऊँचे नीचे पत्थर के फ़र्श पर लेटी हुई पड़ी थी। उसके मुख पर मन्द मन्द मुस्कान थी। होंठ कुछ कुछ खुले हुए थे। आंखें कुछ खुली कुछ बन्द थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब राजकर्मचारी महाराज की ओर से मौत का हुक्म लेकर आये और एक क्षण कुछ सोचने के बाद द्वार खोल दिया तो प्रातःकाल के सूर्य की किरणें कमरे में प्रवेश कर रही थीं और अनारकली के मुख-चन्द्र के चारों ओर हाले के समान मालूम देती थीं।

अब वह उस महाराजों के महाराज के दरबार में पहुंच गई थी जिस के सामने संसार के बड़े २ नृप भी कुछ नहीं हैं।

[८]

तैमूर के सब से बड़े तथा प्रसिद्ध राजाधिराज अकबर को ईश्वर के घर का बुलावा आ चुका था और अब उसके स्थान पर सलीम नूरूद्दीन मौहम्मद जहांगीर के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर सुशोभित था।

अनारकली की दुःख भरी मृत्यु की घटना अनारकली के प्रेमी सलीम ने दिल से भुला दी थी। अब वह एक दूसरे सौंदर्य-पुष्प का भ्रमर बना हुआ था। अब उसने मेहरउन्निसा को देख लिया था। अनारकली की याद उसके दिल से इस प्रकार जाती रही थी जिस प्रकार सूर्य की रोशनी में तारे का प्रकाश जाता रहता है। अब उसे प्रत्येक समय सोते जागते मेहरउनिसा उपनाम नूरजहां ही का ध्यान रहता था।

एक दिन सायंकाल का समय था। जहांगीर अपने राजप्रासाद के उद्यान में टहल रहा था नूरजहां के साथ उसके प्रेम तथा अपनी बेवफ़ाई पर विचार कर रहा था। इसी बीच में कलियों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
लदे हुए एक अनार के वृक्ष के साथ में एक सुफेद छोटीसी टीकरी पर उसकी दृष्टि पड़ी। यह एक क़ब्र थी। इससे पहिले उसने कभी इसे नहीं देखा था। उसको आश्चर्य हुआ कि यहां कौन गाड़ा गया होगा ?

एक बूढ़ा माली कुछ दूर पर फूलों की क्यारियों में पानी दे रहा था। जहांगीर ने उस को बुला कर पूछा—"यह किस की क़ब्र है ?

माली ने क़ब्र की ओर देखा और फिर जहांगीर की ओर देखने लगा। किन्तु कुछ उत्तर न दे सका। वह भयभीत मालूम पड़ता था।

जहांगीर ने फिर पूछा—"यहां कौन सो रहा है ?" माली ने लड़खड़ाते हुए शब्दों में कहा—"अनारकली बेगम।"

अनारकली ! पिछले दिनों की याद ने जहांगीर को गहरे विचार सागर में डुबा दिया। उसने आकाश की ओर आंख उठा कर देखा। सायंकाल के अन्धकार में उसे पश्चिम की ओर क्षितिज में एक तारा चमकता हुआ दिखाई दिया उस चमकते हुए तारे के समान अनारकली की मूर्ति उसकी आंखों में घूम गई। थोड़ी देर के लिये वह मेहरउन्निसा को भूल गया। अनारकली की याद उसके दिल में फिर वैसी ही ताजा हो गई जैसी कई वर्ष पहिले थी। वह उसके दु:खान्त जीवन की एक २ घटना याद करने लगा। उसको अनारकली की वह मुस्कराहट याद आगई जिसके लिए वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी जान तक देने के लिए तैयार हो गया था। बन्दीगृह में अनारकली से भेंट, रहीमख़ां की क्रूरता तथा धोखेबाज़ी—सब घटनाएं एक २ करके उसकी आंखों के सामने आने लगीं।

जहांगीर इन विचारों में डूबा हुआ धीरे धीरे अपने महल को वापिस लौट गया।

दूसरे प्रातःकाल दरबार के राज को आज्ञा हुई कि अनारकली बेगम की क़ब्र पर एक सुन्दर तथा विशाल मकबरा बनवा दिया जाय और जवाहरों से जड़ी हुई पत्थर की एक पट्टी चढ़ाकर उस पर निम्नलिखित शेर खुदवा दिया जाय:—

ता क़यामत शुक्र गोयम किर्दगारे ख़ेशरा।
आह! गर मन बीनम रुवे यारे ख़ेशरा॥*

I shall praise you till eternity if Thee will let me see my beloved.

---

*यह शेर स्वयं जहांगीर का बनाया हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५. अतिथि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अतिथि

१.

काँठाल के ज़मींदार बाबू मोतीलाल नाव किराए करके अपने परिवार सहित स्वदेश जा रहे थे। रास्ते में दोपहर के समय उन्होंने नदी तट के एक बाज़ार के पास नाव बँधवा दी थी और वहीं रसोई आदि बनाने का आयोजन हो रहा था। इतने में एक ब्राह्मण बालक ने उनके पास आकर पूछा—"बाबू जी, आप लोग कहां जायँगे ?" बालक की अवस्था पन्द्रह सोलह वर्ष से अधिक न होगी।

मोती बाबू ने उत्तर दिया—"हम लोग काँठाल जायँगे।"

ब्राह्मण बालक ने पूछा—"क्या आप मुझे रास्ते में नन्दीगांव में उतार देंगे ?"

मोती बाबू ने उसे रास्ते में उतार देना मंज़ूर कर लिया और पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

ब्राह्मण बालक ने उत्तर दिया—"मेरा नाम तारापद है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोरे रङ्ग का वह बालक देखने में बहुत सुन्दर था। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों और हँसते हुए होठों से बहुत ही ललित सुकुमारता प्रकट होती थी। वह केवल एक मैली धोती पहने हुए था। उसका शेष सारा शरीर नङ्गा था। उसके सब अङ्ग बहुत ही सुडौल थे। ऐसा जान पड़ता था कि किसी बहुत अच्छे कारीगर ने बड़े यत्न से उसके सब अङ्ग बहुत ध्यानपूर्वक गढ़े हैं। मानों वह पूर्वजन्म में कोई तापस बालक था और निर्मल तपस्या के प्रभाव से उसके शरीर में से सारे शारीरिक विकार आदि बहुत अधिक परिमाण में निकल जाने से एक सम्मार्जित ब्रह्मण्यश्री उसमें से प्रस्फुटित हो उठी है।

मोती बाबू ने बहुत ही स्नेह-पूर्वक उससे कहा—"बेटा तुम जाकर स्नान कर आओ। तुम्हारा भोजन यहीं होगा!"

तारापद ने कहा—"अच्छा, आप भोजन बनाइये।"

इतना कहकर वह बालक बिना किसी प्रकार के सङ्कोच के रसोई बनाने में सहायता देने लगा। बाबू मोतीलाल का नौकर हिन्दुस्तानी था। कटहल चीरने और पकाने आदि के काम में वह उतना अधिक निपुण नहीं था। तारापद ने वह काम उसके हाथ से ले लिया और थोड़ी ही देर में उसे अच्छी तरह सम्पन्न भी कर दिया। इस के सिवा उस ने एक दो तरकारियां भी ऐसी अच्छी तरह पका दीं, जिस से जान पड़ता था कि वह इन कामों में अच्छा अभ्यस्त है। जब रसोई पक चुकी, तब तारापद ने नदी में स्नान कर के अपनी छोटी-सी गठरी खोल कर उस में से एक सफेद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
धोती निकाल कर पहनी, काठ का कंघा निकाल कर अपने सिर के बड़े बड़े बाल माथे पर से हटा कर पीछे, गर्दन की ओर डाल दिये और स्वच्छ यज्ञोपवीत धारण किये हुए वह नाव में बाबू मोती लाल के पास जा पहुँचा।

मोती बाबू उसे नाव के अन्दर ले गए। वहां मोती बाबू की स्त्री और नौ वर्ष की उसकी कन्या दोनों बैठी हुई थीं। इस सुन्दर बालक को देख कर मोती बाबू की स्त्री अन्नपूर्णा का हृदय प्रेम से भर गया। वह मन ही मन सोचने लगी—"आहा! यह किस का बालक है, कहां से आ रहा है—इसे छोड़ कर भला इसकी माँ कैसे सुख से रहती होगी—उस से कैसे रहा जाता होगा!"

थोड़ी देर में मोती बाबू और इस छोटे बालक के लिये पास ही पास दो आसन बिछ गए। बालक बहुत ही कम भोजन कर रहा है, यह देख कर अन्नपूर्णा ने मन में सोचा कि यह कुछ संकोच कर रहा है। उस ने उस से बहुत अनुरोध किया कि थोड़ा यह खा लो, थोड़ा वह खा लो। पर जब उस का पेट भर गया, तब फिर उस ने कोई अनुरोध नहीं माना। सब लोगों ने देखा कि यह बालक सब काम अपनी ही इच्छा से करता है और ऐसे सहज में करता है कि किसी को यह नहीं जान पड़ता कि वह ज़िद करता है या अपनी ही बात रखना चाहता है। उस के व्यवहार में कहीं लज्जा का नाम भी नहीं दिखाई देता था।

जब सब लोग भोजन कर चुके, तब अन्नपूर्णा ने उसे अपने पास बैठा कर बहुत सी बातें पूछीं और उस का विस्तृत इतिहास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जानना चाहा; पर उस कुछ बहुत अधिक पता नहीं चला। बस, इतना ही पता चला कि यह बालक सात आठ वर्ष की अवस्था में ही अपना घर बार छोड़ कर भाग आया है।

अन्नपूर्णा ने पूछा—तुम्हारी मां नहीं है?"

तारापद ने कहा—"है।"

अन्नपूर्णा ने फिर पूछा—"क्या वे तुम्हें नहीं चाहतीं?"

तारापद को मानो उस का प्रश्न अद्भुत जान पड़ा। वह ज़ोर से हँस पड़ा और बोला—"क्यों, चाहती क्यों नहीं?"

अन्नपूर्णा ने फिर पूछा—"तो फिर तुम उन्हें छोड़ कर चले कैसे आए?"

तारापद ने कहा—"उन के और भी चार लड़के और तीन लड़कियां हैं।"

बालक का यह अद्भुत उत्तर सुन कर अन्नपूर्णा बहुत ही दुखी हुई। उस ने कहा—"वाह, भला यह भी कोई बात है! हाथ में पांच अंगुलियां हैं तो क्या इसलिये एक अंगुली काट डाली जाय?"

तारापद की अवस्था कम थी और इसी लिये उस का इतिहास भी बहुत ही संक्षिप्त था पर फिर भी उसमें बहुत ही विलक्षणता और नवीनता थी। वह अपने पिता माता का चौथा पुत्र था और छोटी अवस्था में ही पितृहीन हो गया था। यद्यपि उस की माता की कई सन्तानें थीं, तथापि घर में उस का बहुत आदर था। मां, भाई, बहनें और पास पड़ोस में लोग सभी उस के साथ बहुत अधिक प्रेम करते थे। यहां तक कि गुरु जी भी कभी उसे मारते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
पीटते नहीं थे। यदि कभी वे उसे कुछ मार भी बैठते थे, तो उस से अपने-पराए सभी लोगों को बहुत अधिक दुख होता था। ऐसी दशा में उसके लिए घर छोड़ कर भागने का कारण नहीं था। जो लड़का उपेक्षित और रोगी-सा था, तथा सदा ही चुरा चुराकर पेड़ों के फल और उन पेड़ों के मालिकों से प्रतिफलस्वरूप चौगुनी मार खाकर इधर उधर घूमा करता था, वह तो अपनी परिचित ग्राम-सीमा में मारपीट करने वाली मां के पास पड़ा रह गया, और सारे गांव का प्यारा यह बालक, विदेशी रासधारियों के दल के साथ प्रसन्नतापूर्वक गांव छोड़कर भाग आया।

सब लोग उसे ढूँढ़कर फिर गांव में ले आये। माता ने उसे कलेजे से लगाकर रोते रोते आंसुओं से उसका सारा शरीर भिगो दिया। उसकी बहिनें भी रोने लगीं। उसके बड़े भाई ने पुरुष अभिभावक का कठिन कर्तव्य पालन करने के लिए उसे पहले तो बहुत ही साधारण रूप से कुछ डांटते डपटने की चेष्टा की और अन्तमें बहुत ही दुखे हृदय से उसे समझाया, पुचकारा। पास पड़ोस की स्त्रियां उसे अपने अपने घर बुलाकर उसका बहुत आदर करती थीं और उसे बहुत कुछ प्रलोभन देकर बांधना चाहती थीं। पर इन बन्धनों को, यहां तक कि स्नेहबन्धन को भी उसने कुछ न समझा। उसके जन्मकाल के नक्षत्रों ने ही उसे गृह-हीन बना दिया था। वह जब देखता था कि विदेशी मल्लाह लोग गून खींचकर नदी में से नावें ले जा रहे हैं, अथवा गांव के बड़े बड़ के वृक्ष के नीचे किसी दूर देश से आकर कोई संन्यासी ठहरा है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
अथवा कछड़ लोग नदी-किनारे के पड़े हुए मैदान में छोटी छोटी झौंपड़ियां बांधकर बांस छील छील कर टोकरियां और डालियां तैयार कर रहे हैं, तब अज्ञात बाहरी पृथ्वी की स्नेहहीन स्वाधीनता के लिए उसका चित्त अशान्त हो उठता था। जब वह लगातार दो तीन बार घर छोड़ छोड़कर भागा, तब उसके घर के लोगों तथा गांव वालों ने उसकी आशा छोड़ दी।

पहले वह रासधारियों के एक दल के साथ गया था। उस दल का प्रधान उसे पुत्र के समान चाहता था और वह दल के सभी छोटे बड़े आदमियों का प्रेमपात्र बन गया था—यहां तक कि जिस घर में रास होती थी, उस घर के मालिक और विशेषतः स्त्रियां भी उसे बहुत मानती थीं इतना सब कुछ होने पर भी वह एक दिन बिना किसी से कुछ भी कहे सुने, न जाने कहां चला गया, और फिर किसी को उसका पता नहीं लगा।

तारापद को बन्धन से उतना ही डर लगता था, जितना हिरण के बच्चे को लगता है, और हिरन के ही समान वह सङ्गीत का भी प्रेमी था। पहले पहल रासधारियों के सङ्गीत ने ही घर से उसका मन उचाट किया था। सङ्गीत का स्वर सुनते ही उसके शरीर की नसें कांपने लगती थीं और गाने की ताल पर उसका सारा शरीर हिलने लगता था। जिस समय वह बहुत छोटा था, उस समय भी सङ्गीत-सभा में, वह इस प्रकार संयत और गम्भीर वयस्क के समान आत्म-विस्मृत होकर बैठा बैठा हिला करता कि उसे देखकर प्रवीण लोगों को अपनी हँसी रोकना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कठिन हो जाता था। केवल सङ्गीत ही क्यों; जिस समय वृक्षों के घने पत्तों पर श्रावण की वृष्टि की धारा पड़ती थी, आकाश में मेघ गरजता था, जंगल में मातृहीन दैन्यशिशु के रोने के समान हवा की सनसनाहट होती थी, उस समय भी उसका चित्त मानों बहुत ही उच्छृङ्खल हो उठता था। जब निस्तब्ध दोपहर के समय आकाश में बहुत दूर पर चील चिल्लाती थी, वर्षाऋतु में संध्या के समय मेंढक बोलते थे, गम्भीर रात्रि में गीदड़ चिल्लाते थे, तब भी वह कानों उतावला-सा होकर बहक उठता था। इसी संगीत के मोह से आकृष्ट होकर वह शीघ्र ही भजनीकों के एक दल में आ कर सम्मिलित हो गया था। भजनीकों के उस दल का अध्यक्ष बहुत ही यत्नपूर्वक उसे गाना सिखलाया करता था और उसे अपने भजन तथा गीत आदि कंठ कराया करता था। वह उसे अपने हृदय रूपी पिंजरे के पक्षी के समान प्रिय समझता था और उस के साथ स्नेह करता था। पक्षी ने कुछ कुछ गाना सीखा और एक दिन प्रातःकाल के समय वहां से उड़ कर चला गया।

अन्तिम बार वह जैम्नास्टिक करने वालों के एक दल में जा मिला था। उस प्रांत में ज्येष्ठ मास के अन्त से ले कर आषाढ़ मास के अन्त तक, एक के बाद एक करके, स्थान स्थान पर अनेक मेले हुआ करते हैं। उन्हीं मेलों में जा कर कमाने खाने के लिये कई रासधारी, गाने बजाने वाले, भजनीक, कवि, नाचने वाली स्त्रियां और तरह तरह की चीजें बेचने वाले दुकानदार आदि नावों पर चढ़ कर छोटी छोटी नदियों और उपनदियों आदि में से होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया करते हैं। पिछले बर्ष से कलकत्ते के जैम्नास्टिक करने वालों का भी एक छोटा सा दल इन मेलों के आमोदचक्र में योग दिया करता था। तारापद ने पहले तो नाव वाले एक दूकानदार के साथ मिल कर पान बीड़े बेचने का भार लिया। इसके उपरान्त अपने स्वाभाविक कौतुहल के कारण, वह जैम्नास्टिक करने वालों का व्यायाम-नैपुण्य देख कर उन की ओर आकृष्ट हुआ और उन्हीं के दल में जा मिला। तारापद ने स्वयं ही अभ्यास कर के बहुत अच्छी तरह बंसी बजाना सीख लिया था। जिस समय जैम्नास्टिक होता था, उस समय वह द्रुत-ताल में बंसी पर लखनऊ की ठुमरी बजाया करता था। बस यही उस का एक काम था।

अब की बार वह इसी दल में से भाग कर आ रहा था। उसने सुना था कि नन्दीग्राम के ज़मींदार लोग मिल कर यात्रा या रास-धारियों की एक बहुत बड़ी मंडली खड़ी कर रहे हैं। यही सुन कर वह अपनी छोटी-सी गठरी ले कर नन्दीग्राम जाने का आयोजन कर रहा था और इसी बीच में मोती बाबू के साथ उसकी भेंट हुई थी।

यद्यपि तारापद कई दलों में रह चुका था, पर अपनी प्रकृति के कारण उस ने किसी दल की कोई विशेषता नहीं प्राप्त की थी। अपने अन्तर में वह सदा पूर्ण रूप से निर्लिप्त और मुक्त रहता था। वह संसार की अनेकों कुत्सित बातें सदा सुना करता था और अनेक कमीने दृश्य उस की आंखों के सामने से गुजरते थे; परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उन सब बातों को उस के मन में सञ्चित होने का तिलमात्र भी अवसर नहीं मिलता था। इस लड़के का उन सब बातों में से किसी पर भी ध्यान नहीं था। जिस प्रकार, और किसी तरह का कोई बन्धन उसे नहीं बांध सकता था, उसी प्रकार अभ्यास बन्धन भी उस के मन को बद्ध नहीं कर सकता था। वह इस संसार के गंदले जल के ऊपर शुभ्र-पक्ष राजहंस की भांति सदा अलग ही घूमा करता था। वह अपने कौतूहल के कारण उस गंदले जल में चाहे जितने बार डुबकी लगाता था, पर फिर भी उस के पंख गीले या मलिन नहीं हो सकते थे। इसी लिए इस गृहत्यागी बालक के मुख पर एक सुन्दर स्वाभाविक तारुण्य स्वच्छ भाव से प्रकाशित हो रहा था। उस के मुख की वही श्री देख कर प्रवीण अनुभवी मोतीलाल बाबू ने, बिना उस से कुछ पूछे ही और उस पर बिना किसी प्रकार का सन्देह किये ही, उसे परम आदर पूर्वक अपने साथ ले लिया था।

२.

जब सब लोग भोजन आदि कर चुके, तब नाव खोल दी गई। अन्नपूर्णा स्नेहपूर्वक इस ब्राह्मण बालक से उस के घर तथा आत्मीय परिजनों आदि की बातें पूछने लगी। तारापद ने उसके सब प्रश्नों का बहुत ही संक्षेप में उत्तर देकर किसी प्रकार अपनी जान छुड़ाई और वह बाहर आकर खड़ा हो गया। बाहर वर्षा की नदी परिपूर्णता की अन्तिम रेखा तक भर उठी थी और उसने अपनी चञ्चलता से प्रकृतिमाता को मानो उद्विग्न कर दिया था। आकाश में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बादल न होने के कारण धूप बहुत तेज़ हो रही थी। उस धूपमें नदी के तट पर कांस तथा दूसरे अनेक प्रकार के तृण आदि आधे पानी में डूबे हुए और आधे बाहर निकले हुए थे। उनके ऊपर सरस सघन ऊख के खेत थे और उनकी दूसरी ओर बहुत दूर दूर तक नीलांजन वर्ण की बन-रेखा थी। मानो ये सब परियोंकी कहानीकी सोने की छड़ी की स्पर्श से, सद्य-साप्रत नवीन सौन्दर्य के समान निर्वाक् नीलाकाश की मुग्ध दृष्टि के सामने प्रस्फुटित हो उठे थे। सभी मानो सजीव, स्पन्दित, प्रगल्भ, आलोक के द्वारा उद्भासित, नवीनता से चिकने, चमकते हुए तथा प्रचुरता से परिपूर्ण थे।

तारापद ने नाव की छतपर पहुँचकर पालकी छायामें आश्रय लिया। धीरे धीरे ढालुए हरे भरे किनारे, पानी से भरे हुए पाट-सनके खेत, गाढ़ श्यामल धानों का लहराना, घाट से गांव की ओर जाने वाली सङ्कीर्ण पगडंडियां, घने वनों से घिरे हुए छायामय ग्राम उसकी आंखोंके सामने आने लगे। यही जल, स्थल और आकाश. यही चारों ओर की सचलता, सजीवता और मुखरता, यही ऊर्ध्व अधोदेशकी व्याप्ति और वैचित्र्य तथा निर्लिप्त सुदूरता, यही सुबृहत् चिरस्थायी निर्निमेष वाक्य-विहीन विश्व जगत् उस तरुण बालक का सब से बड़ा आत्मीय था। फिर भी इस चञ्चल मानव-कटि को एक क्षण के लिये भी स्नेहबाहुसे पकड़ रखने की चेष्टा नहीं करता था। बछड़े अपनी रस्सी तुड़ाकर नदी के तटपर दौड़ रहे थे। गांवोंके टट्टू रस्सी से बँधे हुए अगले दोनों पैरों से उछलते हुए घास खाते फिरते थे। मत्स्यभोजी पक्षी मछुओं के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाल बांधनेके बांसोंके ऊपरसे, बहुत वेगके साथ धपसे जलमें कूद कर मछलियां पकड़ रहे थे। लड़के जल में उतरकर अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ कर रहे थे। स्त्रियां ज़ोर ज़ोर से हँसती हुई आपसमें बातें करती जाती थीं और छाती तक जल में उतर कर अपनी धोतियों के आंचल फैलाकर दोनों हाथों से उन्हें मल मलकर साफ़ कर रही थीं। मछली बेचने वाली स्त्रियां, कमर बांधे हुए, मछुओं से मछलियां खरीद रही थीं। तारापद बैठा बैठा सदा नवीन बने रहने वाले अश्रान्त कौतूहल से यह सब देख रहा था—उस की दृष्टि की प्यास किसी तरह बुझती ही न थी।

नाव की छतपर पहुँचकर तारापद ने पाल की रस्सी थामने वाले मल्लाह से बातें करना आरम्भ कर दिया। बीच बीचमें आवश्यकता पड़ने पर वह मल्लाह के हाथ से लग्गी लेकर आप भी दस पांच हाथ लगा दिया करता था। जब मल्लाह को तमाखू पीने की आवश्यकता हुई, तब उसने उसके हाथ से पतवार ले ली, और जब जिधर पाल घुमाने की आवश्यकता हुई, तब बहुत ही दक्षता-पूर्वक उसे भी उधर घुमा दिया।

जब संध्या होने को आई, तब अन्नपूर्णा ने उसे बुलाकर पूछा—"रात के समय तुम क्या खाया करते हो?"

तारापद ने कहा—"जो कुछ मिल जाय, वही खा लेता हूं। और फिर मैं नित्य तो रात को खाता भी नहीं।"

आतिथ्य ग्रहण में इस सुन्दर बालक की उदासीनता अन्नपूर्णा को कुछ कुछ कष्ट देने लगी। वह बहुत चाहती थी कि मैं अच्छी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
तरह खिला पहनाकर इस गृहच्युत बालक को भली भाति तृप्त कर दूँ। पर उसे किसी प्रकार इस बात का पता ही न चला कि आखिर किस बात से तारापद का परितोष होता है। अन्नपूर्णा ने नौकर को बुलाकर गांव से दूध और मिठाई आदि खरीद लाने के लिये कहा। तारापद ने यथापरिमाण आहार तो कर लिया, परन्तु दूध नहीं पिया। मौनस्वभाव मोतीलाल बाबू ने भी उससे दूध पी लेने के लिये अनुरोध किया, पर उसने संक्षेप में यही कह दिया कि मुझे दूध अच्छा नहीं लगता।

इसी प्रकार नदी में नाव पर ही दो तीन दिन बीत गये। तारापद रसोई बनाने और परोसने तथा बाज़ार से सौदा सुलफ़ लाने से लेकर नाव चलाने तक के सभी कामों में अपनी इच्छा और बहुत ही तत्परता के योग दिया करता था। जो दृश्य उसकी आंखों के सामने आता था, उसी ओर उसकी कौतुहलपूर्ण दृष्टि दौड़ जाती थी। जो काम उसके हाथ के नीचे आ जाता था, उसमें वह आप ही आप आकृष्ट होकर लग जाता था। उसकी दृष्टि, उसके हाथ, उसका मन सभी सदा सचल रहा करते थे और इसीलिये वह नित्य सचला प्रकृति के समान सदा निश्चिन्त, उदासीन और सदा क्रियासक्त रहता था। प्रत्येक मनुष्य की एक निज की स्वतन्त्र अधिष्ठान भूमि हुआ करती है। परन्तु तारापद इस अनन्त नीलाम्बरवाही विश्व-प्रवाह में एक आनन्दोज्ज्वल तरङ्ग के समान था। भूत या भविष्य के साथ उसका किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं था, सामने की ओर बढ़े चलना ही उसका एकमात्र कार्य था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर बहुत दिनों से वह अनेक प्रकार की मंडलियों और सम्प्रदायों आदि के साथ रहता आया था, इसलिये अनेक प्रकार की मनोरंजन करने की विद्याएँ उसे अच्छी तरह आती थीं। कभी किसी प्रकार की चिन्तासे आच्छन्न न रहने के कारण उसके निर्मल स्मृति-पट पर सभी चीजें बहुत ही सहज भाव से मुद्रित हो जाती थीं। अनेक प्रकार के भजन, कीर्तन कथायें और अभिनय आदि कंठ थे। बाबू मोतीलाल अपनी बहुत दिनों की प्रथा के अनुसार एक दिन सन्ध्या समय अपनी स्त्री और कन्या को रामायण पढ़ कर सुना रहे थे। कुश और लव का प्रकरण था। उस समय तारापद अपने उत्साह को न रोक सका और नाव की छत पर से नीचे उतर कर बोला—"आप पुस्तक रख दीजिए। मैं कुश और लव सम्बन्धी कुछ गीत आप लोगों को सुनाता हूं। आप लोग ज़रा ध्यानपूर्वक सुनिये।"

इतना कहकर उसने लव और कुश के सम्बन्ध की कथा के गीत आरम्भ कर दिये। वंशी के समान अपने मीठे स्वर से वह धारा-प्रवाह की भांति अनेक प्रकार के गीत सुनाने लगा। सब मल्लाह आदि भी द्वार के पास गीत सुनने के लिए आ खड़े हुए। उस नदी तट के सन्ध्या समय के आकाश में हास्य, करुणा और सङ्गीत से एक अपूर्व स्रोत प्रवाहित होने लगा दोनों ओर के निस्तब्ध तटों की भूमि कौतूहलपूर्ण हो उठी। वहां पास से होकर जो नावें जारही थीं, उनमें आरोही भी थोड़ी देर के लिये उत्कण्ठित होकर उसी ओर कान लगा कर सुनने लगे। जब गीत और कथा समाप्त हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
गई, तब सब लोग व्यथित चित्त से ठण्डी सांस लेकर सोचने लगे कि यह कथा और यह गीत इतनी जल्दी क्यों समाप्त हो गया।

सजलनयना अन्नपूर्णा की यह इच्छा होने लगी कि इस बालक को मैं अपनी गोद में बैठा कर और कलेजे से लगा कर उसका मस्तक सूँघूँ। बाबू मोतीलाल सोचने लगे कि यदि इस बालक को मैं अपने पास रख सकूँ तो मेरे पुत्र वाले अभाव की पूर्ति हो जाय। केवल छोटी बालिका चारुशशि का अन्तःकरण ईर्ष्या और विद्वेष से परिपूर्ण हो उठा।

३.

चारुशशि अपने माता-पिता की एक मात्र सन्तान और उनके स्नेह की एक मात्र अधिकारिणी थी। उसके हठ और ज़िद आदि का कोई ठिकाना नहीं था। खाने पहिनने और सिर के बाल गूंथने आदि के सम्बन्ध में उसका मत बिल्कुल स्वतन्त्र और निज का था; पर उस मत में कभी किसी प्रकार की स्थिरता नहीं दिखाई देती थी। जिस दिन कहीं किसी प्रकार का निमन्त्रण आदि होता था, उस दिन उसकी माता को इस बात का डर ही लगा रहता था कि कहीं मेरी लड़की अपने बनाव सिंगार के सम्बन्ध में कोई असम्भव ज़िद न ठान बैठे। यदि संयोगवश किसी दिन उसके सिर के बाल उसके मन के मुताबिक नहीं बंधते थे, तो उस दिन फिर उसके बाल चाहे जितनी बार खोलकर क्यों न बांधे जाते, पर वह किसी तरह मानती ही न थी और अन्त में खूब रोना चिल्लाना हुवा करता था। सभी बातों में उसकी यही दशा थी। और जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
किसी समय उसका चित्त प्रसन्न रहता था, तब वह कभी किसी बात पर कोई अपत्ति ही नहीं करती थी। उस समय वह बहुत अधिक प्रेम प्रकट करती हुई, ज़ोर से अपनी मां के गले से लिपट जाती थी। और उसे चूम कर हँसती हँसती लोटपोट हो जाती थी। यह छोटी लड़की एक ऐसी पहेली थी, जो किसी प्रकार समझ में ही नहीं आती थी।

यह बालिका अपने दुर्बाध्य हृदय के सारे वेग का उपयोग कर के मन ही मन तारापद से बहुत अधिक विद्वेष करने लगी। माता पिता को भी उसने पूरी तरह से उद्विग्न कर दिया। भोजन के समय वह रोना-सा मुँह बनाकर थाली अपने आगे से खिसका देती थी। उसे भोजन अच्छा ही नहीं लगता था। कभी कभी वह दासी को भी मार बैठती। तात्पर्य यह कि सभी बातों में वह बिना कारण ही झगड़ा बखेड़ा किया करती थी। तारापद की विद्या आदि, उसका तथा सब लोगों का जितना ही अधिक मनोरञ्जन करने लगी, उसका क्रोध भी उतना ही अधिक बढ़ने लगा। उसका मन यह बात स्वीकृत करने के लिये तैयार ही नहीं था कि तारापद में किसी प्रकार का कोई गुण है। और जब इस बात के अधिकाधिक प्रमाण मिलने लगे कि उसमें कुछ गुण हैं, तब उसके असन्तोष की मात्रा और भी अधिक बढ़ गई। जिस दिन तारापद ने लव और कुश के भजन सुनाये थे, उस दिन अन्नपूर्णा ने मन में सोचा था कि सङ्गीत से वन के पशु भी वश में हो जाते हैं; इसलिये आज कदाचित् मेरी कन्या का मन भी कुछ शांत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
हो गया होगा। इसलिये उसने उससे पूछा भी था—"चारु तुम्हें ये गीत कैसे लगे ?"—पर चारुशशि ने उसके इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया और बहुत ज़ोर से सिर हिला दिया। यदि उसकी इस भाव भङ्गी का भाषा में अनुवाद किया जाय, तो उसका यही अर्थ होगा कि मुझे वह ज़रा भी अच्छा नहीं लगा और न कभी अच्छा लगेगा।

अन्नपूर्णा ने समझ लिया कि चारु के मन में ईर्ष्या का उदय हुआ है, इसलिये उसने चारु के सामने तारापद के प्रति अपना स्नेह प्रकट करना बन्द कर दिया। सन्ध्या के समय जब चारु जल्दी ही भोजन करके सो जाती थी, तब अन्नपूर्णा नाव की कोठरी के दरवाज़े पर आ बैठती थी। मोती बाबू और तारापद दोनों दरवाज़े के बाहर बैठते थे और अन्नपूर्णा के अनुरोध से तारापद गीत और भजन आदि आरम्भ करता था। उसके गीत से जब नदीतट की विश्राम करती हुई ग्रामश्री सन्ध्या के विपुल अन्धकार में मुग्ध तथा निस्तब्ध हो जाती थी और अन्नपूर्णा का कोमल हृदय स्नेह तथा सौन्दर्य रस से परिपूर्ण हो जाता था, उस समय चारु सहसा बिछौने पर से उठ बैठती थी और जल्दी जल्दी वहां पहुंच कर क्रोध पूर्वक रोती हुई कहती थी—"मां, तुम लोगों ने यह क्या बखेड़ा लगा रक्खा है। मुझे नींद नहीं आती।" माता पिता उसे अकेली सोने के लिये भेज देते हैं और तारापद को घेर कर संगीत का आनन्द लेते हैं, यह बात उसे बहुत ही असह्य होती थी। दीप्त कृष्ण नयनों वाली इस बालिका की स्वाभाविक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुतीव्रता तारापद को बहुत ही अधिक कौतुकजनक जान पड़ती थी। उसे ने कथाएँ सुना कर, गीत गा कर, वंसी बजा कर इस बालिका को वश करने की बहुत चेष्टा की, पर वह किसी प्रकार कृतकार्य न हो सका। हां; केवल दोपहर के समय जब तारापद नदी में स्नान करने के लिये उतरता था और परिपूर्ण जल राशि में अपने गौरवर्ण शरीर से तरह तरह से तैरकर तरुण जल देवता के समान शोभा पाता था, उस समय उस बालिका का कौतुहल आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता था। वह सदा उसी समय की प्रतीक्षा किया करती थी पर फिर भी वह अपना यह आन्तरिक आग्रह किसी पर प्रफट नहीं होने देती थी और मन लगा कर ऊनी गुलूबन्द बुनने का अभ्यास करते करते, बीच बीच में मानों बहुत ही उपेक्षापूर्वक तारापद का तैरना देख लिया करती थी।

४.

नन्दीग्राम कब पीछे छूट गया, इस बात की तारापद ने कुछ भी खोज खबर नहीं ली। अत्यन्त मृदु मन्द गति से वह बड़ी नाव कभी पाल उड़ाकर, कभी गून से खिंचकर नदी की शाखा प्रशाखाओं में से होकर चलने लगी। नाव की सवारियों के दिन भी इन सब नदी और उपनदियों के समान शान्ति और सौन्दर्य से पूर्ण वैचित्र्य में से होकर सहज और सौम्य भाव से गमन करते हुए मृदु और मिष्ट कलस्वर से प्रवाहित होने लगे। किसी को कोई जल्दी तो थी ही नहीं। दोपहर के समय स्नान और भोजन आदि में ही बहुत अधिक विलम्ब हो जाया करता था। उधर सन्ध्या होते न होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कोई बड़ा-सा वृक्ष देख कर किसी गांव के किनारे घाट के निकट किसी झिल्लीझंकृत और खद्योतखचित बन के पास नाव बांध दी जाया करती थी।

इस प्रकार कोई दस दिनों में नाव कांठाल पहुँची। जमीदार आ रहे थे, इस लिये घर से पालकी और घोड़ा आया था; और हाथ में बांस की लाठियां लिये हुए बरकन्दाजों के दल ने बन्दूकों की खाली आवाजों से गांव के उत्कण्ठित कौवों को इतना अधिक मुखर बना दिया था, जिस का कोई ठिकाना ही नहीं था।

इस समारोह में कुछ विलम्ब हो रहा था। इस बीच में तारापद नाव पर से जल्दी उतर कर सारे गांव का एक चक्कर लगा आया। उसने किसी को भाई, किसी को चचा किसी को बहिन और किसी को मौसी कह कर दो तीन घंटे के अन्दर ही गांव भर के साथ सौहार्द बन्धन स्थापित कर लिया। उस के लिये कहीं कोई प्रकृत बन्धन तो था ही नहीं, इस लिये वह बहुत ही जल्दी और बहुत ही सहज में सब के साथ परिचय कर लेता था। थोड़े ही दिनों में देखते देखते तारापद ने गांव के सभी लोगों के हृदयों पर अधिकार कर लिया।

इतने सहज में हृदय हरण करने का कारण यही था कि तारापद सब लोगों के साथ बिलकुल आपसदारों की तरह मिलजुल सकता था। वह किसी प्रकार के विशेष संस्कार के द्वारा तो बद्ध था ही नहीं, पर सभी अवस्थाओं में सभी कार्यों के प्रति उस की एक प्रकार की सहज प्रवृत्ति हुआ करती थी। बालकों में वह पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
रूप से स्वाभाविक बालक था; परन्तु उनकी अपेक्षा श्रेष्ठ, और स्वतन्त्र! वृद्धों के निकट वह बालक नहीं था, साथ ही वृद्ध भी नहीं था। ग्वालों के साथ वह ग्वाला, साथ ही ब्राह्मण भी था। सभी लोगों के समस्त कामों में वह पुराने सहयोगी की भाँति अभ्यस्त भाव से हस्तक्षेप किया करता था। जब वह हलवाई की दूकान पर बैठ कर उससे बातें किया करता था, तब हलवाई कहता था—"भइया, ज़रा बैठे रहना अभी आता हूं।" उस समय तारापद भी प्रसन्नतापूर्वक दूकान पर बैठा बैठा एक बड़ा-सा पत्ता लेकर मिठाई पर की मक्खियां उड़ाने लगता था। मिठाई बनाने में भी वह बहुत होशियार था। तांती का काम भी कुछ कुछ जानता था और कुम्हार का चाक चलाने से भी बिलकुल अनभिज्ञ नहीं था।

इस तरह तारापद ने गाँव के सभी लोगों को अपना बना लिया था, केवल ग्रामवासिनि एक बालिका की ईर्ष्या पर वह अब तक भी विजय नहीं प्राप्त कर सका था। जान पड़ता था कि तारापद इस गाँव में केवल इसी लिए इतने दिनों तक रह गया था कि वह जानता था कि यह बालिका मुझे किसी दूर देश में निर्वासित करने की बहुत ही तीव्र भाव से कामना कर रही है।

परन्तु चारुशशि ने इस बातका प्रणाम दे दिया कि बाल्यावस्था में भी नारी के हृदय के अन्दर का रहस्य समझना बहुत ही कठिन है।

सोनामणि नाम की एक ब्राह्मण-कन्या—जो पांच वर्ष की अवस्था में विधवा हो गई थी—चारु की समवयसी सखी थी। उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
समय सोनामणि शरीर से कुछ अस्वस्थ थी, इसलिए जब चारु लौटकर घर आई थी, तब कुछ दिनों तक वह उससे भेंट करने के लिए न आ सकी थी। जब वह अच्छी हो गई और एक दिन उस से भेंट करने के लिये आई, तब उसी दिन प्रायः बिना कारण ही दोनों सखियों में कुछ मनोमालिन्य होने का उपक्रम हो गया।

चारु ने बहुत विस्तार से बातें करना आरम्भ किया। उसने सोचा था कि मैं तारापद नामक अपने नवीन अर्जित किये हुए परम रत्न के आहरण की बातें बहुत ही विस्तारपूर्वक वर्णन करके अपनी सखी का कौतुहल और विस्मय सप्तम पर चढ़ा दूंगी। पर जब उसने सुना कि तारापद सोनामणि के लिए कुछ भी अपरिचित नहीं है; सोना की मां को वह मौसी कहता है और सोनामणि उसे भइया कहती है; जब उसने सुना कि तारापद ने केवल वंशी बजाकर ही माता और कन्या का मनोरंजन नहीं किया है, बल्कि सोनामणि के अनुरोध से उसने अपने हाथ से उसके लिए बांस की वंशी भी बना दी है; उसने कई बार उसके लिए ऊँची शाखाओं से फल और कँटीली शाखाओं से फूल तोड़ दिए हैं, तब चारु के अन्तःकरण में जलता हुआ तीर-सा बिंधने लगा। चारु समझती थी कि तारापद विशेष रूप से मेरा ही तारापद है। वह समझती था कि तारापद बहुत ही गुप्तरूप से संरक्षित रखने की चीज है। दूसरे लोगों को उसका थोड़ा बहुत आभास मात्र मिलेगा--उसके पास तक किसी की पहुंच नहीं होगी। सब लोग दूर से ही उस के रूप और गुण पर मुग्ध होंगे और उसके लिये हम लोगों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
धन्यवाद दिया करेंगे। पर अब वह सोचने लगी कि यह आश्चर्यदुर्लभ दैव-लब्ध ब्राह्मण बालक सोनामणि के लिये क्योंकर सहज-गम्य हो गया? यदि हम लोग उसे इतने यत्न से यहां न लाते, इतने यत्न से उसे अपने यहां न रखते, तो सोनामणि को उसके दर्शन कहां से मिलते? वह सोनामणि का भाई है!—सुन कर सारा शरीर जला जाता है!

चारु जिस तारापद को मन ही मन विद्वेष के शर से जर्जर करने की चेष्टा किया करती थी, उसी के एकाधिकार के लिए उस के मन में इस प्रकार का प्रबल उद्वेग क्यों हुआ?—भला किसकी मजाल है कि यह बात समझ सके!

उसी दिन एक और तुच्छ बात पर सोनामणि और चारुशशि में भीतरी गांठ पड़ गई और उसने तारापद की कोठरी में जाकर उसकी वंशी निकाल कर, उस पर कूद कूदकर निर्दयतापूर्वक उसे तोड़ना शुरू कर दिया।

चारु जिस समय बहुत ही क्रोध में आकर उस वंशी को तोड़ फोड़ रही थी, उसी समय तारापद वहां आ पहुँचा। बालिका की यह प्रलयमूर्ति देखकर वह चकित हो गया। उसने पूछा—"चारु, तुम मेरी वंशी क्यों तोड़ रही हो?" चारु ने लाल आंखें लाल मुंह करके कहा—"मैंने अच्छा किया! बहुत अच्छा किया! इतना कहकर उसने उस टूटी हुई वंशी पर और दो चार बार अनावश्यक पदाघात कर के उसका कचूमर निकाल डाला और तब उच्छ्वसित कण्ठसे रोती हुई वह उस कोठरी से बाहर निकल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
गई। तारापद ने वह वंशी उठाकर उलट पुलट कर देखी; उसमें कुछ भी दम नहीं रह गया था। अकारण अपनी पुरानी निरपराध वंशी की यह आकस्मिक दुर्दशा देखकर वह अपनी हँसी न रोक सका। उसके लिए चारुशशि दिन पर दिन परम औतुहल की चीज होती जाती थी।

उसके लिए कौतुहल का एक और भी क्षेत्र था। मोतीलाल बाबू की लाइब्रेरी में अँगरेज़ी की बहुत सी तसबीरदार किताबें थीं। बाहरी संसार के साथ तो उसका यथेष्ट परिचय हो चुका था, पर इन तसबीरों के जगत में वह किसी प्रकार अच्छी तरह प्रवेश नहीं कर सकता था। वह अपने मन से कल्पना के द्वारा उसकी बहुत कुछ पूर्ति कर लिया करता था, उससे उसके मन की कुछ भी तृप्ति नहीं होती थी।

तसबीरों वाली पुस्तकों के प्रति तारापद का इतना अधिक आग्रह देखकर एक दिन मोतीलाल बाबू ने कहा—"तुम अँगरेजी पढ़ोगे ? यदि पढ़ लोगे तो इन सब चित्रों का मतलब समझने लगोगे।"

तारापद ने तुरन्त उत्तर दिया—"हाँ, मैं अँगरेजी पढ़ूँगा।"

मोतीलाल बाबू ने बहुत प्रसन्नतापूर्वक गांव के स्कूल के हेड-मास्टर बाबू रामरतन को नित्य सन्ध्या समय आकर उस बालक को पढ़ाने के काम पर नियुक्त कर दिया।

५.

तारापद अपनी प्रखर स्मरणशक्ति और अखण्ड मनोयोग से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अँगरेज़ी सीखने लगा। वह मानो एक नवीन दुर्गम राज्यमें भ्रमण करने के लिये बाहर निकल पड़ा। अब उसने पुराने संसार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रक्खा। अब वह गांव के लोगों को पहले की भांति दिखाई नहीं देता था। जब वह सन्ध्या के समय निर्जन नदी तट पर जल्दी जल्दी चलता हुआ अपना पाठ कण्ठ किया करता था, तब उसका उपासक बालक-सम्प्रदाय दूर ही से कुछ दुखी चित्त से आदरपूर्वक उसे देखा करता था; उसके पाठ में बाधा देने का उसे साहस नहीं होता था।

चारु को भी आजकल वह बहुत अधिक नहीं दिखाई देता था। पहले तारापद अन्तःपुर में जाकर अन्नपूर्णा की स्नेहपूर्ण दृष्टि के सामने बैठ कर भोजन किया करता था। पर इसके कारण बीच बीच में उसे कुछ विलम्ब हो जाया करता था; इस लिये उस ने मोतीलाल बाबू से अनुरोध कर के अपने लिए बाहर ही भोजन मंगाने की व्यवस्था कर ली थी। इस पर अन्नपूर्णा ने दुखी हो कर विरोध भी किया था; परन्तु मोतीलाल बाबू पढ़ने लिखने में बालक का उत्साह देख कर बहुत सन्तुष्ट थे; इस लिये उन्हों ने इस व्यवस्था का अनुमोदन कर दिया था।

उसी समय चारु भी सहसा ज़िद कर बैठी कि मैं भी अङ्गरेजी पढ़ूँगी। उस के माता-पिता ने पहले अपनी अल्हड़ लड़की के इस प्रस्ताव को परिहास का विषय समझा और वे स्नेहपूर्वक हंस पड़े; परन्तु कन्या ने उस प्रस्ताव के परिहास्य अंश को प्रचुर अश्रुजल की धारा से बहुत ही जल्दी धो कर दूर कर दिया। अन्त में इन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
स्नेह-दुर्बल निरुपाय अभिभावकों ने बालिका को वह प्रस्ताव गम्भीर भाव से स्वीकार कर लिया। अब चारु भी तारापद के साथ ही मास्टर साहब से अङ्गरेजी पढ़ने लगी।

परन्तु पढ़ना लिखना इस अस्थिरचित्त बालिका के स्वभाव के अनुकूल नहीं था। वह स्वयं तो कुछ भी न सीखती; हां, तारापद के सीखने में बाधा अवश्य डालने लगी। वह पिछड़ जाती थी और अपना पाठ याद नहीं करती थी; पर फिर भी किसी प्रकार तारापद से पीछे नहीं रहना चाहती थी। जब तारापद उस से आगे बढ़ कर नया पाठ सीखने लगता था, तब वह बहुत नाराज होती थी; यहां तक कि रोने धोने से भी बाज़ नहीं आती थी। जब तारापद एक पुरानी पुस्तक समाप्त करके दूसरी नई पुस्तक खरीदने लगता था, तब उस के लिए भी नई पुस्तक खरीदनी पड़ती थी। तारापद फुरसत के समय अपनी कोठरी में बैठकर लिखा करता था और अपना पाठ कण्ठ किया करता था। पर उस ईर्ष्या-परायणा बालिका को यह बात सह्य नहीं होती थी। वह छिप कर उसकी लिखने की कापी पर स्याही गिरा देती थी; कलम कहीं छिपा कर रख दिया करती थी; यहां तक कि पुस्तक का जो पृष्ठ वह पढ़ता था, वह पृष्ठ ही फाड़ दिया करती थी। तारापद बहुत ही कौतुक-पूर्वक इस बालिका का यह सब दौरात्म्य सहन किया करता था। जब उसे बहुत असह्य हो जाता था, तब वह कभी कभी उसे थोड़ा बहुत मार भी बैठता था; पर फिर भी किसी प्रकार उस का शासन नहीं कर सकता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही विरक्त होकर स्याही गिरी हुई अपनी लिखने की कापी फाड़कर बहुत ही दुखी पर गम्भीर भाव से बैठा हुआ था। इतने में चारु दरवाजे पर आ कर खड़ी हो गई। वह मन ही मन सोचती थी कि आज मुझे जरूर मार पड़ेगी। परन्तु उस की वह आशा पूरी नहीं हुई। तारापद ने उस से बात तक न की और वह चुपचाप बैठा रहा। बालिका कभी तो कोठरी के अन्दर आती थी और कभी कोठरी के बाहर जाती थी। वह बार बार उस के बहुत पास पहुँच जाती थी। यदि तारापद चाहता, तो सहज में ही उस की पीठ पर धौल जमा सकता था। परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया और वह चुपचाप गम्भीर भाव धारण किये हुए बैठा रहा। बालिका बहुत मुश्किल में पड़ गई! क्षमाप्रार्थना किस प्रकार की जाती है, इस विद्या का तो उस ने आज तक कभी कोई अभ्यास किया ही नहीं था; परन्तु उस का अनुतप्त क्षुद्र हृदय अपने सहपाठी से क्षमा प्राप्त करने के लिये बहुत अधिक कातर हो रहा था। अन्तमें कोई उपाय न देख कर उस ने उस फटी हुई कापी का एक टुकड़ा उठा लिया और तारापद के पास बैठ कर उस पर बहुत बड़े बड़े अक्षरों में लिखा—"अब मैं कभी कापी पर स्याही नहीं गिराऊँगी।"—जब वह लिख चुकी, तब उस लेख की ओर तारापद का ध्यान आकर्षित करने के लिये वह अनेक प्रकार की चञ्चलताएँ करने लगी। यह देखकर तारापद अपनी हँसी न रोक सका। वह ठठाकर हंस पड़ा। उस समय बालिका लज्जा और क्रोध से पागल होगई और जल्दी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
से दौड़कर कोठरी के बाहर चली गई। उसके हृदय का वह निदारुण क्षोभ तभी मिट सकता था जब कि वह कागज़ के एक टुकड़े को, जिस पर उसने अपने हाथ से लिखकर दीनता प्रकट की थी, अनन्त काल और अनन्त जगत से पूर्णरूप से विनष्ट कर सकती।

इधर संकुचित-चित्त से सोनामणि दो एक दिन आकर उस कमरे में बाहर ही से ताक झांककर चली गई थी, जिस कमरे में तारापद के साथ चारु पढ़ा करती थी। सखी चारुशशि के साथ सभी बातों में उसकी बहुत अधिक घनिष्ठता थी; परन्तु तारापद के सम्बन्ध में वह चारु को बहुत अधिक भय और सन्देह की दृष्टि से देखा करती थी। चारु जिस समय अन्तःपुर में रहती थी, वही समय देख कर सोनामणि संकोचपूर्वक तारापद के दरवाजे के पास आ कर खड़ी होती थी। तारापद पढ़ना छोड़ कर सिर उठा कर स्नेहपूर्वक पूछा करता था—"क्यों सोना! क्या हाल चाल है? मौसी कैसी हैं?"

सोनामणि कहती—"तुम तो इधर बहुत दिनों से आते ही नहीं। मां ने तुम को जरा बुलाया है। मां की कमर में दर्द है; इसी लिये वह तुम्हें देखने के लिये यहां नहीं आ सकीं।"

ऐसे समय में यदि सहसा चारु वहां आ पहुंचती तो सोनामणि हक्की बक्की सी हो कर रह जाती। मानों वह छिप कर अपनी सखी की सम्पत्ति चुराने के लिये आई हो। चारु अपना स्वर सप्तम पर चढ़ा कर कहती—"क्यों सोना, तुम पढ़ने के समय दिक करने के लिये आई हो? मैं अभी जाकर बाबू जी से कह दूंगी!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानों चारु स्वयं ही तारापद की प्रवीण अभिभाविका हो। मानो दिन-रात उसका ध्यान केवल इसी बात पर रहता था कि तारापद के पढ़ने लिखने में लेशमात्र भी बाधा न पड़े। परन्तु वह स्वयं किस अभिप्राय से इस असमय में तारापद के पढ़ने के कमरे में आ पहुँचती थी, यह अन्तर्यामी के लिये अगोचर नहीं था और तारापद भी अच्छी तरह जानता था। परन्तु बेचारी सोनामणि बहुत ही भयभीत हो कर तुरन्त ही एक बिल्कुल झूठी कैफियत गढ़ लेती थी। अन्त में चारु जब घृणापूर्वक उसे मिथ्यावादी ठहराती, तब वह लज्जित, शंकित और पराजित हो कर व्यथित हृदय से चली जाती थी। दयार्द्र तारापद उसे बुलाकर कहा करता—"सोना, आज सन्ध्या समय मैं तुम्हारे घर आऊंगा।" चारु नागिन की तरह फुफकार कर गरज उठती—"हां, हां, जाओगे क्यों नहीं! पढ़ोगे लिखोगे कुछ नहीं न? अच्छा देखो. आज मैं मास्टर साहब से कहूंगी!"

चारु के इस शासन से तारापद कुछ भी भयभीत नहीं होता था और वह दो एक दिन सन्ध्या के समय उस ब्राह्मणी के घर गया भी। तीसरी या चौथी बार, तारापद पर चारु केवल बिगड़ कर ही नहीं रह गई, बल्कि उसने धीरे से तारापद की कोठरी का दरवाजा बाहर से बन्द करके सिकड़ी लगा दी और मां के बक्स में से ताली ताला लाकर उसे बाहर से बन्द कर दिया। सन्ध्या तक तारापद को इस प्रकार ताले में बन्द रख कर भोजन के समय उसने द्वार खोल दिया। तारापद को क्रोध तो आया, पर उसने कुछ कहा नहीं; और वह बिना भोजन किये ही वहां से चलने का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपक्रम करने लगा। उस समय वह अनुतप्त हृदय और व्याकुल बालिका हाथ जोड़ कर बहुत ही विनयपूर्वक बार बार कहने लगी—"मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूं, अब कभी ऐसा काम नहीं करूंगी। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूं, तुम खाकर जाओ।"

लेकिन जब इतने पर भी तारापद ने नहीं माना, तब वह अधीर होकर रोने लगी। लाचार होकर तारापद लौट आया और भोजन करने लगा।

चारु ने कई बार बहुत ही दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा की थी कि मैं अब तारापद के साथ सद्व्यवहार किया करूँगी और कभी क्षणभर के लिये भी उसे दुखी न किया करूँगी। पर जब सोनामणी जैसी और भी दो चार लड़कियां सामने आ जाती थीं, तब उसका मिज़ाज़ न जाने क्यों बिगड़ जाया करता था और वह किसी भी प्रकार से अपने आपको सँभाल न सकती थी। जब वह लगातार कई दिनों तक भलमनसाहत का व्यवहार करती थी, तब तारापद सतर्क हो जाता था और किसी बहुत बड़े उपद्रव की सम्भावना समझकर उसके लिये तैयार हो रहता था। कोई कह नहीं सकता था कि सहसा किस लिये और किस ओर से आक्रमण होगा। इसके उपरांत प्रबल आंधी आती थी; आंधी के उपरांत प्रचुर अश्रुजल की वर्षा होती थी; और उसके उपरांत स्निग्ध शांति आ विराजती थी।

६

इसी प्रकार प्रायः दो वर्ष बीत गए। इतने लम्बे समय तक तारापद को कभी कोई पकड़ कर नहीं रख सका था। जान पड़ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
कि पढ़ने लिखने में उसका मन एक अपूर्व आकर्षण से बद्ध हो चुका था। जान पड़ता है कि अवस्था बढ़ने के साथ ही साथ उसकी प्रकृति में भी परिवर्तन होना आरम्भ हो गया था, स्थायी रूपसे बैठकर संसार की सुख स्वच्छन्दता का भोग करने की ओर उसका मन लग गया था। और जान पड़ता है कि उसकी सह-पाठिका बालिका का नित्य दौरात्म्यचंचल सौन्दर्य अलक्षित भाव से उसके हृदय पर अपना बन्धन दृढ़ कर रहा था!

उधर चारु भी अब ग्यारह बरस से ऊपर की होगई थी। मोती बाबू ने ढूँढ़कर अपनी लड़की के विवाह के लिये दो तीन अच्छे अच्छे वर देखे थे। जब मोती बाबू ने देखा कि कन्या के विवाह का समय समीप आरहा है, तब उन्होंने उसका पढ़ना लिखना और बाहर आना जाना बन्द कर दिया। यह आकस्मिक अवरोध देखकर चारु ने घर में बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा कर दिया।

इस पर एक दिन अन्नपूर्णा ने मोती बाबू को बुलाकर कहा—"तुम वर के लिये इतनी अधिक चिंता और ढूँढ़ खोज क्योंकर रहे हो? तारापद तो बहुत अच्छा लड़का है और तुम्हारी लड़की को भी वह पसन्द है।"

अन्नपूर्णा की यह बात सुनकर मोती बाबू ने बहुत अधिक आश्चर्य प्रकट किया। उन्होंने कहा—"भला यह कैसे हो सकता है? तारापद के कुल-शील का कुछ भी पता नहीं। मेरी एक ही लड़की ठहरी। मैं उसे किसी अच्छे घरमें देना चाहता हूं।"

एक दिन रायडांगा के बाबू के यहां से कुछ लोग लड़की को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
देखने के लिये आए। चारु को कपड़े लत्ते पहिनाकर बाहर लाने की चेष्टा की गई; परन्तु वह जाकर अपने सोने के कमरे में दरवाजा बन्द करके चुपचाप बैठ गई; किसी प्रकार बाहर ही न निकली! मोती बाबू ने कमरे के बाहर से बहुत अनुनय विनय तथा डाँट डपटकर उसे बाहर निकालना चाहा; पर फल कुछ भी न हुआ। अंत में उन्हें बाहर आकर रायडाँगा से आए हुए आदमियों से झूठ बोलना पड़ा। उन्हें कहना पड़ा कि अचानक लड़की की तबीयत बहुत खराब हो गई है, इस लिए आज हम लड़की नहीं दिखला सकते। उन लोगों ने सोचा कि लड़की में शायद कोई दोष है; इसी लिए इन्होंने यह चालाकी खेली है और यह बहाना किया है।

तब मोती बाबू सोचने लगे कि तारापद देखने सुनने में और सभी बातों में बहुत अच्छा लड़का है। इसे मैं अपने घर में भी रख सकूँगा। उस दशा में मुझे अपनी एकमात्र लड़की पराये घर न भेजनी पड़ेगी। उन्होंने यह भी सोचा कि इस अशान्त अबाध्य लड़की की यह उद्दण्डता हमारी स्नेहपूर्ण दृष्टि में चाहे कितनी ही क्षम्य क्यों न जान पड़ती हो, पर ससुराल में उसकी ये सब बातें कोई न सहेगा।

तब पति पत्नी ने बहुत सोच विचार कर तारापद के कुल के सम्बन्ध की सब बातों का पता लगाने के लिए उसके घर एक आदमी भेजा। वहां से समाचार आया कि वंश तो अच्छा है; पर गरीब है। तब मोती बाबू ने लड़के की माँ और भाइयों के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा। उन्होंने बहुत ही प्रसन्न होकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
सम्मति देने में क्षण भर का विलम्ब नहीं किया।

अब मोती बाबू और अन्नपूर्णा दोनों मिलकर यह सोचने लगे कि विवाह कब हो। परन्तु मोती बाबू स्वभाव से ही गोपन-प्रिय और सावधान रहने वाले आदमी थे! उन्होंने सब बातें बहुत ही गुप्त रक्खीं।

चारु किसी प्रकार रोक कर रक्खी नहीं जा सकती थी। वह बीच बीच में मराठों की घुड़सवार सेना की तरह तारापद के पढ़ने के कमरे में जा पहुँचा करती थी। वह कभी राग कभी अनुराग और कभी विराग द्वारा उसकी पाठचर्या की एकान्त शान्ति सहसा भङ्ग कर दिया करती थी। इसी लिए आजकल इस निर्लिप्त और मुक्तस्वभाव ब्राह्मण बालक के चित्त में, बीच बीच में क्षण भर के लिए विद्युत के स्यन्दन की भांति एक अपूर्व चञ्चलता का सञ्चार हो जाया करता था। जिस व्यक्ति का लघुभार चित्त सदा अटूट अव्याहत भाव से काल-स्रोत की तरङ्गों में इतराता हुआ केवल सामने की ओर ही बहा चला जाता था; वह आजकल रह रह कर अन्यमनस्क हो उठता था। और विचित्र दिवा-स्वप्न के जाल में जकड़ जाता था। वह दिन भर पढ़ना लिखना छोड़कर मोती बाबू की लाईब्रेरी में पहुँच कर तसवीरों वाली पुस्तकों के पन्ने उलटा करता था। उन चित्रों के संयोग से जिस कल्पित जगत् की सृष्टि होती थी, वह उसके पहले वाले जगत् से बिल्कुल अलग और रङ्गीन था। चारु का अद्भुत आचरण देखकर अब वह पहले की तरह हँस नहीं सकता था। वह जब कभी किसी प्रकार की दुष्टता करती थी, तब उसे मारने पीटने का विचार अब उसके मन में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उठता ही नहीं था। अपना यह निगूढ़ परिवर्तन और आबद्ध आसक्त भाव उसे एक नवीन स्वप्न के समान जान पड़ने लगा था।

श्रावणमास में विवाह के लिए एक शुभ दिन स्थिर करके बाबू मोतीलाल ने तारापद की माता और भाइयों को लाने के लिए आदमी भेजा, पर तारापद को इस बात की कोई खबर न होने दी। अपने कलकत्ते वाले गुमाश्ते को उन्होंने बढ़िया बाजे आदि का बयाना देने का आदेश लिख भेजा और साथ ही दूसरी अनेक आवश्यक चीज़ों की फ़ेहरिस्त भी तय्यार करके भेज दी।

आकाश में नवीन वर्षा के बादल उठे। गांव की नदी इतने दिनों में प्राय: बिल्कुल सूख गई थी। बीच बीच में कहीं कहीं कुंड या गड्ढे में पानी दिखाई देता था। छोटी छोटी नावें उसी कीचड़ भरे पानीमें पड़ी हुई थीं; और जिस स्थानपर नदीका पाट बिल्कुल सूख गया था, उस स्थान पर बैलगाड़ियों आदि के आनेजाने से पहियों के कारण गहरी गहरी लकीरें पड़ गई थीं। ऐसे समय में एक दिन पितृगृह से लौट कर आने वाली पार्वती के समान कहीं द्रुतगामिनी जलधारा कलकलहास्य करती हुई गांव के शून्य वृक्ष पर आ पहुँची। नंगे बालक और बालिकाएँ नदी तट पर आकर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हुए नाचने लगे। वे सब अतृप्त आनन्द से बार बार जल में कूदकर नदी को मानों आलिंगन करते हुए पकड़ने लगे। कुटीरों में रहने वाली स्त्रियां अपनी परिचित संगिनी को देखने के लिए बाहर निकल आईं। मानों शुष्क और निर्जीव ग्राम में न जाने कहां से प्राण की एक विपुल तरंग ने आकर प्रवेश किया। बोझ से लदी हुई छोटी बड़ी अनेक नावें देश विदेश से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आने लगीं। संध्या समय घाट पर विदेशी मल्लाहों के संगीत की ध्वनि उठने लगी। नदी के दोनों तटों की गांव रूपी कन्यायें साल भर अपने एकान्त कोनों में अपनी छोटी-सी गृहस्थ लेकर अकेली दिन बिताया करती हैं। वर्षा के समय बाहर की विशाल पृथ्वी अनेक प्रकार के विचित्र पण्यरूपी उपहार लेकर और गैरिक रंग के जलरथ पर चढ़ कर इन ग्राम-कन्याओं की खबर लेने के लिए आती है। उस समय जगत् के साथ इनकी जो आत्मीयता हो जाती है, उसके गर्व से कुछ दिनों के लिए इनकी क्षुद्रता मानों नष्ट हो जाती है। सभी मानो सचल, सजग और सजीव हो उठती हैं और मौननिस्तब्ध देश में सुदूर के राज्यों की कलालाप ध्वनि आकर चारों ओर के आकाश को आंदोलित कर देती है।

इसी समय कुड़ुलकांटा के नाग बाबू के इलाके में रथ-यात्रा का प्रसिद्ध मेला था। चांदनीवाली संध्या में तारापद ने घाट पर जाकर देखा कि कोई नाव हिंडोला या चरखी लिए, कोई बिक्री का सौदा सुलुफ़ लिए प्रबल नवीन स्रोतों में होती हुई मेले की ओर जा रही है। कलकत्ते के कन्सर्ट दल ने, जोर जोर से अपने बाजे बजाने आरम्भ कर दिये हैं। रासधारी हारमोनियम और बेला बजाकर गीत गा रहे हैं और सम आने पर हा हा करते हुए चिल्ला उठते हैं। पश्चिम की नावों के मल्लाह केवल ढोल और करताल लेकर ही उन्मत्त उत्साह से बिना किसी संगीत के चिल्ला कर आकाश गुञ्जा रहे हैं। उन के उद्दीपन की कोई सीमा ही नहीं है। देखते देखते पूर्व दिशा से घने बादल काले पाल उड़ाते हुए आकाश के मध्य में आ पहुँचे। चन्द्रमा उन बादलों में छिप गया। पुरवा हवा ज़ोरों से बहने लगी। बादल के पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बादल बढ़ते हुए चलने लगे। नदी तट की हिलती हुई वन-श्रेणी में घोर अन्धकार छा गया। मेंढक बोलने लगे। झिल्लियों की ध्वनि मानों दरांती से उस अंधकार को चीरने लगी। सामने आज मानो सारे जगत की रथयात्रा थी। चक्र घूम रहे थे, ध्वजाएँ उड़ रही थी, पृथ्वी कांप रही थी, बादल मंडला रहे थे, हवा ज़ोरों से चल रही थी, नदी बह रह रही थी, नावें चल रही थीं, संगीत हो रहा था। देखते देखते बादल ज़ोरों से गरजने लगे। बिजली आकाश को काट काट कर चमकने लगी। बहुत दूर से अंधकार में से मूसलाधार वृष्टि होने की सूचना मिलने लगी। केवल नदी के एक तट पर एक कोने में पड़ा हुआ काँठाल गाँव अपनी कुटी का द्वार बन्द करके और दीपक बुझा कर चुपचाप सोने लगा।

दूसरे दिन तारापद की माता और सब भाई आकर काठाल में नाव पर से उतरे। उसके दूसरे दिन अनेक प्रकार की सामग्री से लदी हुई तीन नावें कलकत्ते से आकर काँठाल के ज़मींदार की छावनी के सामने घाट पर आ लगीं। इसके तीसरे दिन बहुत सवेरे सोनामणि एक कागज पर कुछ आम्रसत्त्व (सुखाया हुआ आम का रस) और दोने में थोड़ा-सा अचार लिये हुए डरती २ तारापद के पढ़ने के कमरे के दरवाज़े पर चुपचाप आकर खड़ी हो गई। पर उस दिन तारापद कहीं किसी को दिखलाई नहीं दिया। इससे पहले ही कि स्नेह, प्रेम और बन्धुत्व के षड्यन्त्र का बन्धन उसे चारों ओर से पूरी तरह घेर लेता, समस्त गांव का हृदय चुरा कर, वर्षा ऋतु की अन्धेरी रात में वह ब्राह्मण बालक आसक्ति-विहीन और उदासीन जननी विश्वपृथ्वी के पास चला गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मास्टर साहिब

उस समय रात के दो बजे होंगे। कलकत्ते के निस्तब्ध शब्द-सागर में एक लहर उठाती हुई दो घोड़ों की गाड़ी भवानीपुर की ओर से आकर बिर्जी तालाब के मोड़ के पास ठहर गई। वहाँ एक किराये की गाड़ी को देख कर उस पर जो बाबू सवार थे, उन्होंने गाड़ीवान को अपने पास बुलाया। उन बाबू के पास ही एक कोट-हैट पहने, विलायत से वैसे ही लौट कर आये हुए बंगाली युवक दोनों पैर सामने फैलाये कुछ नशे की हालत में सिर झुकाये ऊँघ रहे थे। ये अभी विलायत से आये हैं। अभ्यर्थना अर्थात् स्वागत का उत्सव करने के लिये इनके दोस्तों ने इनकी दावत की थी। उसी दावत से फिरते समय कुछ दूर तक के लिये एक दोस्त इनको अपनी गाड़ी पर ले आये थे। उक्त युवक को उनके मित्र ने दो तीन बार हिला डुला कर जगा कर कहा—मिस्टर मजूमदार, गाड़ी मिल गई, घर जाओ।

मजूमदार जाग पड़े और उसी किराये की गाड़ी पर जाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
बैठ गये। उस गाड़ीवान को पता ठिकाना बता कर मजूमदार के मित्र अपने घर की ओर चल दिये।

किराये की गाड़ी दूर तक सीधी जाकर पार्क स्ट्रीट के सामने मैदान की राह में मुड़ गई। मजूमदार ने मन में कहा--यह क्या! यह तो मेरी राह नहीं है। उसके बाद नींद की झोंक में कहा--शायद यह सीधी राह हो।

मैदान में पहुँचते ही मजूमदार के रोएँ खड़े हो आए। उन को जान पड़ने लगा कि किसी आदमी के न होने पर भी उनके पास गद्दी पर मानो कोई बैठा है। मानो उस के पास के आसन का शून्य आकाश ठस होकर उनको ठेल रहा है। मजूमदार ने सोचा, यह क्या मामला है! गाड़ीवान! गाड़ीवान ने कुछ जवाब नहीं दिया। पीछे की खड़खड़ी खोल कर साईस का हाथ पकड़ कर मजूमदार ने कहा--तुम भीतर आकर बैठो।

साईस ने डर कर कहा--"नहीं साहब, हम भीतर नहीं जायगा!" सुनकर मजूमदार के मानो रोएँ खड़े हो आए। साईस का हाथ ज़ोर से पकड़ कर मजूमदार ने चिल्ला कर कहा--जल्दी भीतर आओ।

साईस ज़ोर से अपना हाथ छुड़ा कर उतर कर भागा। तब मजूमदार डरते डरते बग़ल की ओर ताकने लगे। कुछ भी न दीख पड़ा। तब भी जान पड़ा, कोई ठोस अटल पदार्थ एकदम उन्हें दबाये बैठा है। किसी तरह बड़ी कठिनाई से गले तक आवाज़ को लाकर मजूमदार ने कहा--"गाड़ीवान, गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
रोना, इन दोनों को दूसरों की असुविधा और खौफ के भय से दबा कर मन मार कर रह जाना ही पड़ता है, उससे बढ़कर करुणा का पात्र कौन होगा ?

पृथ्वी के सब मनुष्यों के नीचे दबे हुए हरलाल खुद भी नहीं जानते थे कि उनके हृदय में इतना स्नेह जमा है। वेणु से खेल कर, उसको पढ़ा कर, उसकी तबीयत न अच्छी होने पर सेवा कर, हरलाल को स्पष्ट जान पड़ने लगा कि अपनी अवस्था की उन्नति करने की अपेक्षा श्रेष्ठ और भी मनुष्य का एक कर्त्तव्य है। उस कर्त्तव्य में जब मनुष्य लग जाता है, तब उसका जी और किसी काम में नहीं लगता।

वेणु भी हरलाल को साथी पाकर बहुत खुश हुआ, क्योंकि घर में और कोई लड़का न था। दो बहिनें थीं। एक छोटी और दूसरी तीन साल की। लेकिन उनके साथ खेलना वेणु को पसन्द न था। मुहल्ले में हमजोली के लड़कों की कमी न थी। किन्तु अधर बाबू अपने को सबसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित समझते थे; इस कारण उनके साथ खेलने की सुविधा न थी। इस कारण हरलाल ही उसके पूरे साथी हो गए। वेणु के जिन उपद्रवों को दिन भर में दस आदमी सहते थे, वे उपद्रव अब अकेले हरलाल को ही सहने पड़ते थे। इन उपद्रवों को नित्य सहते सहते हरलाल का स्नेह और भी दृढ़ हो चला। रतिकान्त कहने लगे कि भैया को मास्टर साहब मिट्टी किए डालते हैं। अधर बाबू को भी बीच बीच में यह जान पड़ता था कि मास्टर के साथ छात्र का सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
यथोचित नहीं है। किन्तु इस समय हरलाल का साथ छुड़ाने की शक्ति किसी में न थी।

(४)

इस समय वेणु की अवस्था ग्यारह वर्ष की है। हरलाल ने एफ० ए० पास करके छात्रवृत्ति पाई है और अब वे थर्ड ईयर में पढ़ते हैं। इधर कालेज में हरलाल को दो एक मित्र भी मिल गये हैं, किन्तु ग्यारह वर्ष का बालक वेणु ही उनका सब से बड़ा मित्र और साथी है। कालेज से लौट कर हरलाल कभी गोलदीघी और कभी ईडन गार्डन में वेणु को साथ लेकर टहलने जाते थे। वेणु को ग्रीक इतिहास के वीर पुरुषों की कथा सुनाते थे, स्काट और विक्टर ह्यूगो की कथाएं सुनाते थे, ऊँचे स्वर से अँगरेज़ी की कविताएँ पढ़ कर मातृ-भाषा में अनुवाद करके समझाते थे और शेक्सपियर कृत 'जूलियस सीजर' का अर्थ पढ़ाकर इसमें एण्टोनी की वक्तृता रटाने की चेष्टा करते थे! बालक वेणु के मानसिक विकास के लिए हरलाल यथाशक्ति भरपूर चेष्टा करते थे। हरलाल जब अकेले बैठ कर पाठ याद करते थे, तब अँगरेज़ी साहित्य को वह इस तरह हृदय से ग्रहण नहीं कर सकते थे। किन्तु इस समय इतिहास, विज्ञान, साहित्य जो कुछ यह पढ़ते हैं, उसमें जो कुछ रस मिलता है, वह रस वेणु को देने के लिये हृदय में एक प्रकार का आग्रह होता है, और उस चेष्टा से ही उनकी समझाने की शक्ति और आनन्द का अधिकार जैसे दूना हो उठता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
वेणु स्कूल से आते ही किसी तरह जल्दी से कुछ जलपान करके हरलाल के पास जाने के लिए व्यग्र हो उठता था। उसकी माँ किसी तरह कोई प्रलोभन दिखा कर उसे अपने पास नहीं रोक सकती थी। कमला को वह अच्छा न लगता था। उसने एक दिन हरलाल को ड्योढ़ी पर बुला कर आड़ से कहा—तुम को यही काम सौंपा गया है कि वेणु को घण्टा भर सवेरे और घण्टा भर तीसरे पहर पढ़ाओ। तुम दिन भर उसके साथ क्यों लगे रहते हो? आजकल वह माँ-बाप किसी से भी नहीं दबता। उसको कैसी शिक्षा दी जा रही है? पहले जो लड़का माँ के पास से दम भर के लिए भी दूर न जाता था, वह आज बुलाने से भी नहीं आता! वेणु से तुम्हारी कैसी सरबरी? तुम उसके साथ इस तरह न रहा करो!

इससे पहले एक दिन रतिकान्त अधर बाबू से हरलाल के सामने ही कह रहे थे कि ऐसे तीन चार आदमियों को मैं जानता हूं जो किसी बड़े आदमी का लड़का पढ़ाने के लिए नौकर रक्खे गये थे! धीरे धीरे उन्होंने लड़के पर अपना इतना अधिकार जमा लिया कि लड़का जब सम्पत्ति का मालिक हुआ, तब वे ही कर्ता-धर्ता बन बैठे और उसे अपने कहे पर चला कर खूब माल मार रहे हैं। हरलाल इस बात को समझ गया था कि बात मुझे लक्ष्य करके ही कही गई है। तथापि उस दिन हरलाल ने चुपचाप सह लिया था। किन्तु आज कमला की बातें सुनकर उनका हृदय जैसे फट गया। उनको यह मालूम हो गया कि बड़े घर के मास्टर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
इज्जत कितनी है। जैसे लड़के को दूध पिलाने के लिए एक माय रक्खी जाती है, वैसे ही उसे विद्या पढ़ाने के लिए एक मास्टर भी रक्खा गया है। छात्र के साथ स्नेहपूर्ण आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित करने की मास्टर की स्पर्धा को घर के नौकर से लेकर मालकिन तक कोई भी सह नहीं सकता और सभी उसे स्वार्थसाधन का एक कौशल समझते हैं।

हरलाल ने काँपते हुए कण्ठ से कहा—नहीं बहू जी, अब मैं वेणु को केवल पढ़ाऊँगा। उसके साथ मेरा और कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा।

उस दिन तीसरे पहर वेणु को साथ लेकर घूमने के समय हरलाल आये ही नहीं। किस तरह इधर उधर घूमकर उन्हों ने अपना वह समय बिताया, यह बात वही जानते हैं। शाम होने पर जब हरलाल पढ़ाने आये, तब वेणु का मुँह लटका हुआ था। हरलाल ने अपनी अनुपस्थिति का कोई कारण न बता कर पढ़ा दिया। किन्तु उस दिन ठीक-ठीक पढ़ना-पढ़ाना नहीं हुआ।

हरलाल नित्य कुछ रात रहते उठकर अपनी कोठरी में बैठ कर अपना पाठ याद करते थे। वेणु सवेरे उठकर हाथ मुँह धोकर उनके पास दौड़ा आता था। बाग में एक पक्के कुण्ड में मछलियां पली हुई थीं; उनको खीलें खिलाना उस समय का दोनों का काम था। बाग के एक कोने में छोटे छोटे पत्थर रखकर छोटी छोटी राहें, छोटा फाटक और छोटा सा घेरा घेर कर दोनों ने एक छोटा सा आश्रम बना लिया था। उस स्थान पर बैठ कर उपयोगी चर्चा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उसकी मरम्मत करते रहना और सँवारना सवेरे का दूसरा काम था। उसके बाद धूप चढ़ने पर घर लौट कर वेणु हरलाल से पढ़ने बैठता था। कल सवेरे जो चर्चा अधूरी रह गई थी, उसी का अंश सुनने के लिए आज सवेरे वेणु दौड़ा आया था। उसने सनझा था कि सवेरे उठने के बारे में उसने मास्टर साहब को जीत लिया। लेकिन कोठरी में देखा, मास्टर साहब नहीं हैं। दरबान से पूछने पर मालूम हुआ कि मास्टर साहब कहीं गये हैं।

उस दिन भी सवेरे पढ़ने से समय व्यथित हृदय वेणु का मुँह लटका रहा। सवेरे हरलाल कहाँ चले गये थे, यह भी उसने नहीं पूछा! हरलाल भी वेणु की ओर न देख कर किताब के ऊपर दृष्टि जमा कर पढ़ा गये। उस दिन वेणु अपनी माँ के आगे जब खाने बैठा, तब कमजा ने कहा—कल तीसरे पहर से तुझको क्या हो गया है! मुँह क्यों लटकाये हुये है—अच्छी तरह खाता क्यों नहीं? मामला क्या है?

वेणु ने कुछ उत्तर नहीं दिया। भोजन के बाद वेणु को गोद में लेकर, उसकी पीठ पर हाथ फेर कर जब कमला बार बार पूछने लगी, तब वेणु से नहीं रहा गया। वह फफक फफक रोने लगा। बोला—मास्टर साहब—

माता ने कहा—मास्टर साहब ने क्या किया?

इसके आगे वेणु से कुछ कहा नहीं गया कि मास्टर साहब ने क्या किया। उसका जो अभियोग था, उसे भाषा में व्यक्त करने डी शक्ति उस बालक में नहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमला ने कहा—मास्र ने शायद कुछ मेरी ओर से लगाया-बुझाया !

इसका कुछ अर्थ न समझ कर वेणु बिना उत्तर दिये ही चल दिया।

(५)

इसी बीच में बैठक से अधर बाबू के कुछ कपड़े चोरी हो गये। पुलिस को खबर दी गई। पुलिस ने खानातलाशी में हरलाल के बक्स को भी नहीं छोड़ा। रतिकान्त ने बहुत ही निरीह भाव से कहा—जो कपड़े चुरावेगा; वह चोरी के माल को बक्स के भीतर रक्खेगा ?

माल का कुछ पता नहीं चला। ऐसा नुक्सान अधरचन्द्र केलिए असह्य था। वे दुनिया भर के लोगों से रूठ गये। रतिकान्त ने कहा घर में अनेक आदमी हैं। किसको कहिएगा, किस पर सन्देह करिएगा ? जिसका जब जी चाहता है, बैठक में घुस आता है।

अधरचन्द्र ने मास्टर हरलाल को बुलाकर कहा—अब तुम लोगों को यहां रखने से सुभीता न होगा। तुम अलग रहने के लिए मकान ले लो, समय पर आकर वेणु को पढ़ा जाया करो। उसके लिए दो रुपये महीने के हिसाब से तुम्हारी तनख्वाह बढ़ा दी जायगी।

रतिकान्त ने तमाखू पीते पीते कहा—यह तो बड़ी अच्छी बात है। इनको भी और आपको भी सुभीता होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
हरलाल सिर झुकाये सुनते रहे। उस समय उनसे कुछ कहा नहीं गया। अपनी कोठरी में आकर एक चिट्ठी लिख कर मेज पर रख दी कि अनेक कारणों से अब वे वेणु को नहीं पढ़ा सकते, इसलिए नौकरी छोड़ने को तैयार हैं।

उस दिन वेणु ने स्कूल से आकर देखा, मास्टर की कोठरी सूनी पड़ी है। उनका वह टूटा हुआ टीन का सन्दूक भी नहीं है। जिस अरगनी पर मास्टर की धोती, अँगौछा और चादर टँगा रहता था; यह अरगनी तो हैं, पर उस पर वे कपड़े नहीं हैं।

वेणु दौड़कर अपने बाप के पास गया और बोला—"बाबू जी, मास्टर साहब कहाँ गये?" बाप ने उसको गोद में लेकर कहा—नौकरी छोड़ कर चले गये।

वेणु बाप की गोद से उठकर कमरे में लोट लोट कर रोने लगा। अधर बाबू कुछ ठीक न कर सके कि अब क्या करना चाहिए।

दूसरे दिन सवेरे हरलाल एक 'मेस' में साढ़े दस बजे तख्त पर अन्यमनस्क भाव से यही सोच रहे थे कि कालेज जायँ या न जायँ। इसी समय पहले अधर बाबू का दरबान और उसके पीछे वेणु दिखाई पड़ा। आते ही वह हरलाल के गले से लिपट गया। हरलाल का गला भर आया, वे कुछ न कह सके। उनकी आँखों से झरझर करके आँसू बह चले। वेणु ने कहा—मास्टर साहब, हमारे घर चलो।

वेणु अपने बुड्ढे दरबान के पीछे पड़ गया था कि चाहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जिस तरह हो; मुझे मास्टर साहब के पास ले चलो। जो कुली हरलाल का असबाब ले गया था, उससे पता चलाकर स्कूल जाते समय आज वह वेणु को हरलाल के पास ले आया है।

क्यों हरलाल वेणु के घर नहीं जा सकते, यह बात भी खुलासा करके हरलाल कह नहीं सके और न वेणु के घर ही जा सके।

(६)

हरलाल बहुत चेष्टा करके भी पढ़ने में उस तरह मन नहीं लगा सके। किसी तरह स्थिर होकर वे अपना पाठ याद न कर सकते थे। थोड़ा सा पढ़ कर ही किताब बन्द कर देते थे और अकारण व्यग्र भाव से इधर उधर टहलने लगते थे। कालेज में भी जी न लगता था।

हरलाल ने सोचा, यह अच्छे लक्षण नहीं हैं। परीक्षा में अगर वे पास भी हो गये, तो वृत्ति मिलने की कोई सम्भावना नहीं। वृत्ति मिले बिना एक दिन भी कलकत्ते में गुज़र नहीं हो सकती। उधर माँ को भी हर महीने दो चार रुपये भेजने चाहिएँ। बहुत सोच विचार कर वे नौकरी की तलाश में निकले। नौकरी मिलना कठिन था, किन्तु न मिलना उससे भी कठिन था इसलिए निराश होकर भी उस आशा को छोड़ न सके।

हरलाल एक बड़े अँगरेज़ सौदागर के दफ्तर में उम्मेदवारी करने के लिए गये। साहब का सामना हुआ। साहब को विश्वास था कि वे चेहरा देखकर ही आदमी को पहचान लेते हैं। हरलाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
को रोको !" जान पड़ा, गाड़ीवान ने कुछ खड़े होकर दोनों हाथों से रास खींच कर घोड़ों को रोकने की चेष्टा की, पर घोड़े किसी तरह नहीं रुके। घोड़े न रुक कर रेड रोड की राह से फिर दक्षिण की ओर मुड़ चले। मजूमदार ने घबरा कर कहा—"अरे कहाँ जाता है !" कुछ भी उत्तर न मिला। पास की गद्दी की शून्यता की ओर रह रह कर कनखियों से देखते देखते मजूमदार के शरीर से पसीना बह चला। जहाँ तक सिकुड़ना संभव था, वहाँ तक मजूमदार ने अपने शरीर को सिकोड़ा। किन्तु जितना वे सिकुड़े—जितनी जगह उन्होंने छोड़ दी—उतनी जगह भी किसी ठोस चीज ने छेक ली।

मजूमदार मन ही मन तर्क करने लगे कि किसी प्राचीन युरोपियन ज्ञानी ने कहा है—Nature abhors a vacuum. वही तो देख रहा हूँ ! किन्तु यह क्या है ! यह क्या Nature है ? यदि वह वस्तु मुझसे कुछ न कहेगी, तो मैं अभी इसके लिये जगह छोड़ कर कूद पड़ूँगा। किन्तु कूद पड़ने का साहस न हुआ। सोचने लगे-पीछे कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय। पहरे वाले को पुकारने की चेष्टा की। किन्तु उनके मुँह से बड़े कष्ट से ऐसी जरा सी अद्भुत क्षीण आवाज़ निकली कि अत्यन्त डर के बीच में भी मजूमदार को हँसी आ गई। मैदान में, अँधेरे में, बड़े बड़े पेड़ भूतों की निस्तब्ध पार्लिमेंट में आमने सामने मुँह किये खड़े थे। जैसे सब जानती हैं, कुछ बतावेंगी नहीं—इस भाव से टिमटिमाती हुई गैस की रोशनियाँ मानों आँख मारने लगीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
मजूमदार ने सोचा कि चट उचक कर सामने की गद्दी पर जा बैठे। यों सोचते ही उन्हें जान पड़ा कि सामने गद्दी से एक टकटकी उन्हीं की ओर लगी हुई है। न आँख है, न कुछ है, तथापि वह एक टकटकी है। वह टकटकी परिचित सी है, पर यह याद नहीं पड़ता कि किसकी है। मजूमदार ने डर के मारे ज़ोर देकर आँखों को बन्द करना चाहा, पर किसी तरह बन्द नहीं कर सके। उसी अनिर्देश्य टकटकी की ओर आंखें फाड़ फाड़ कर देखते रहे।

इधर गाड़ी केवल मैदान की राह में उत्तर से दक्षिण और दक्षिण से उत्तर को चक्कर लगाने लगी। दोनों घोड़े धीरे धीरे पागल से हो उठे—उनकी गति का वेग बढ़ चला। गाड़ी की खिड़कियों की खड़खड़ियाँ तक हिल उठीं।

इसी समय गाड़ी मानों किसी चीज़ से धक्का खाकर एकाएक रुक गई। मजूमदार ने चौंक कर देखा, उनके घर की राह के सामने ही गाड़ी खड़ी हुई है और गाड़ीवान उन्हें हिलाकर पूछ रहा है कि साहब, बताइए कहाँ चलना होगा?

मजूमदार ने खफा होकर पूछा—अब तक तूने मुझको मैदान में इतना घुमाया क्यों?

गाड़ीवान ने अचरज के साथ कहा—कहाँ, मैदान में तो मैंने गाड़ी नहीं घुमाई।

मजूमदार ने उसकी बात पर विश्वास न करके कहा—तो क्या मैं सपना देख रहा था?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गाड़ीवान ने कुछ सोचकर भीत भाव से कहा—बाबू साहब, शायद आप खाली सपना नहीं देख रहे थे । आज तीन बरस हुए मेरी इसी गाड़ी में एक दुर्घटना हो गई थी।

उस समय मजूमदार को नशे और नींद की खुमारी बिलकुल न थी; इसी से वे गाड़ीवान की इस बात पर ध्यान न देकर किराया चुका कर चले गये। किन्तु रात भर उन्हें अच्छी तरह नींद नहीं आई। वे केवल यही सोचते रहे कि वह अलक्ष्य चितवन किस की थी।

(१)

अधरचन्द्र मजूमदार के बाप साधारण दुकान की क्लर्की से शुरु करके एक बड़े कारखाने की मैनेजरी तक करके परलोक सिधारे। अधर बाबू बाप के पैदा किये धन को मजे में सूद पर चला रहे हैं। धन प्राप्ति के लिए उनको खुद कुछ काम या मेहनत नहीं करनी पड़ती। उनके बाप सफेद साफा बाँधकर पालकी में बैठकर दफ्तर जाते थे—बहुत ही सादी चाल से रहते थे। पूजा-पाठ, उत्सव, दान-पुण्य भी खूब करते थे। वे इसी को गर्व और गौरव की बात समझते थे कि आपत्ति-विपत्ति के समय सभी श्रेणी के लोग उनके पास आकर सहायता की प्रार्थना करते थे। किन्तु अधर बाबू ने कई घोड़े-गाड़ियाँ और एक दो मोटरें भी खरीद ली हैं—मगर सर्वसाधारण के साथ उनका कुछ सम्बन्ध नहीं है। केवल रुपये उधार दिलाने वाले दलाल आकर उनके हुक्के से दो एक कश खुशबूदार तमाखू पी जाते हैं और एटार्नी आफिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के बाबुओं के साथ तमस्सुक, रैहननामे आदि की शर्तों के बारे में छानबीन हुआ करती है। अधर बाबू के यहां खर्च का हिसाब इतना नियमित और परिमित है कि बड़े बड़े पीछे पड़ने वाले सभा-समितियों के सेक्रेटरी भी कभी एक कौड़ी चन्दा उनसे नहीं लिखा सके।

इसी समय अधर बाबू के एक लड़का पैदा हुआ। लड़के का चेहरा उसकी मां के चेहरे से बहुत मिलता था। बड़ी बड़ी आंखें, नुकीली नाक और रंग साँवला था। जिसने देखा, उसी ने कहा—लड़का बहुत ही सुन्दर है। अधर बाबू के अनुगत अनुचर रतिकांत ने कहा—बड़े घर के लड़के को जैसा होना चाहिए, यह वैसा ही है।

लड़के का नाम रक्खा गया वेणुगोपाल। इससे पहले अधर बाबू की स्त्री कमला ने कभी गृहस्थी के खर्च के बारे में स्वामी के मत के विरुद्ध ज़ोर देकर कुछ भी नहीं कहा था। दो एक शौक़ के खर्चों या लौकिकता की अति आवश्यक तैयारी के लिए कभी कभी स्त्री पुरुष में चख़चख़ हो जाती थी। किन्तु अन्त को कमला स्वामी की कृपणता को अनादर और घृणा की दृष्टि से देखकर चुप-चाप हार मान लेती थी।

किन्तु इस बार कमला को अधर बाबू परास्त नहीं कर सके। वेणुगोपाल के जन्म के उपरान्त कमला ने जो जो खर्च करने के लिए कहा, उसे करके ही छोड़ा। कभी चुपचाप आंसू बहाकर और कभी लड़ झगड़ कर कमला ने स्वामी को जीत लिया। वेणुगोपाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
के लिए जो चाहिए और जो न चाहिए, वह सभी अधर बाबू को सम्पन्न ही करना पड़ा। तहवील में रुपये न होने का बहाना नहीं चला।

(२)

वेणुगोपाल धीरे धीरे बड़ा होने लगा। उसके लिए खर्च करने का अधर बाबू को अभ्यास सा हो गया। उसे पढ़ाने के लिए अधर बाबू ने अधिक तनख्वाह पर बी० ए० एम० ए० पास एक बड़े-बूढ़े मास्टर को नौकर रक्खा। मास्टर ने मीठी बोली और शिष्टाचार से वेणुगोपाल को वश करने की बहुत चेष्टा की। किन्तु उन्होंने अब तक बराबर छात्रों को कड़े शासन से योग्य बना कर मास्टरी की मर्यादा को अक्षुण्ण बना रक्खा था, इसी से उनकी मीठी बोली और शिष्टाचार बेसुरा सा जान पड़ता था। इसी कारण उन्हें अपनी सूखी चेष्टा में सफलता भी नहीं प्राप्त हुई। कमला ने अधर बाबू से कहा—यह तुमने कैसा मास्टर रक्खा है। उसे देखते ही लड़का व्याकुल हो उठता है। उसे हटा दो!

बूढ़े मास्टर हटा दिये गये। पूर्व समय में लड़कियां जैसे स्वयंबर में अपने मन का वर चुन लेती थीं, वैसे ही वेणुगोपाल से भी खुद मास्टर पसन्द करने के लिए कहा गया। जिसे वह न पसन्द करे, उसका बी० ए०, एम० ए० पास करना और सार्टीफ़िकेट दिखाना सब व्यर्थ था।

इसी समय मैली चादर डाले और फटा जूता पहने हरताल मास्टरी की उम्मेदवारी में अधर बाबू के यहां उपस्थित हुए। उनको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवा मां ने दूसरे के घर में नौकरी करके, धान कूट कर, उन्हें किसी तरह एंट्रेन्स पास करा दिया है। इस समय कलकत्ते के कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रतिज्ञा करके हरलाल यहां आये हैं। पेट भर भोजन न मिलने के कारण उनके चेहरे का निचला अंश भारत वर्ष के कन्याकुमार नामक स्थान की तरह तंग हो आया है, केवल भारी मस्तक हिमालय की तरह चौड़ा होकर दूर ही से दिखाई पड़ रहा है। मरु-भूमि का बालू जैसे सूर्य का प्रकाश पाकर चमकता है, वैसे ही उनकी आंखों से ग़रीबी की अस्वाभाविक दीप्ति निकल रही थी।

द्वार पर नौकर ने पूछा—"तुम क्या चाहते हो? किससे मिलना चाहते हो?" हरलाल ने डरते डरते कहा—"मालिक से मुलाक़ात करना चाहता हूं।" दरबान ने कहा—"मुलाक़ात नहीं हो सकती।" इस उत्तर से हताश हरलाल यही सोच रहे थे कि क्या करना चाहिए। इसी समय सात बरस का लड़का वेणुगोपाल बाग़ में खेल कर ड्योढ़ी पर पहुँचा। दरबान ने हरलाल को चुप देख कर कहा—बाबू, चले जाओ।

वेणुगोपाल को एकाएक ज़िद हो आई। "नहीं जाएँगे!" कह कर और हरलाल को, हाथ पकड़ कर, वेणुगोपाल दुमंजिले के बरामदे पर अपने बाप के पास ले गया।

अधरचन्द्र मजूमदार उस समय नींद से उठ कर बरामदे में बेंत के मोढ़े पर चुपके बैठे पैर हिला रहे थे; और उनके मुसाहब बुड्ढे रतिकान्त बाबू तख्त पर पाल्थी मारे बैठे तमाखू पी रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
उस दिन, उसी समय, उसी अवस्था में, दैव संयोग से हरलाल को मास्टरी की नौकरी मिल गई।

रतिकान्त ने पूछा—आपने कहां तक पढ़ा है?

हरलाल ने ज़रा सिर झुका कर कहा—एन्ट्रेंस पास हूं।

रतिकान्त ने भौंहें टेढ़ी करके कहा—बस एण्ट्रेन्स पास! मैं कहता हूं, आपने कालेज में नहीं पढ़ा? आपकी अवस्था भी तो कम नहीं जान पड़ती।

हरलाल चुप रह गए। आश्रित और आश्रय की प्रत्याशा रखने वाले लोगों को सब तरह सताने में ही रतिकान्त को बड़ा आनन्द मिलता था।

रतिकान्त ने वेणुगोपाल को दुलरा कर अपनी गोद में ले लेने की चेष्टा करते हुए कहा—कितने बी० ए०, एम० ए० आये और चले गये—कोई भी पसन्द न आया। अन्त को क्या हमारा भैया एण्ट्रेन्स पास मास्टर से पढ़ेगा?

वेणुगोपाल ने रतिकान्त से दुलार के बन्धन से बलपूर्वक अपने को छुड़ा कर कहा—"जाओ!" रतिकान्त को वेणुगोपाल कुछ भी न समझता था; किन्तु रतिकान्त उसके इस भाव को उसके लडकपन के माधुर्य का एक लक्षण कह कर खूब खुश होने की चेष्टा दिखाते थे और उसे भैया, बच्चा, लाल कह कर चिढ़ाकर जाने से बाहरकर देते थे।

हरलाल की नौकरी मिलना कठिन हो गया था; और वे भी यही सोच रहे थे कि किसी तरह यहां से उठकर भाग सकूं तो

139
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जान बचे। इसी समय अधरचन्द्र को सहसा यह बात सूझी कि यह कमसिन मास्टर थोड़ी तनख्वाह में ठीक हो जायगा। अन्त को तै हुआ कि हरलाल अधरबाबू के ही यहां रहेंगे, खाना और पांच रुपये महीना पावेंगे!

(३)

अब की मास्टर दिक गए। पहले ही से वेणुगोपाल से हरलाल की ऐसी पट गई जैसे दोनों भाई भाई हों। कलकत्ते में हरलाल का कोई नातेदार या मुलाकाती मित्र न था। इस सुन्दर छोटे से लड़के ने ही पहले अभागे हरलाल के हृदय पर पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमा लिया। इससे पहले अभागे हरलाल को किसी से स्नेह करने का सुयोग ही प्राप्त नहीं हुआ था। किस तरह अवस्था अच्छी होगी, इसी ख्याल से बड़े कष्ट से इतना जीवन उन्हों ने केवल पढ़ने लिखने में ही बिताया था। माता पराधीन थी, इसी कारण हरलाल की बाल्यावस्था संकोच और कुण्ठित भाव में ही कटी है। उनको निषेध की रेखा लांघ कर ऊधम के द्वारा अपने बाल्य-प्रताप को जयशाली करने का सुख किसी दिन नहीं मिला! वे किसी के दल में नहीं थे, अपनी फटी किताब और टूटी स्लेट के बीच अकेले ही थे। जगत् में जन्म लेकर जिसे लड़कपन में ही चुप्पी साधने वाला आदमी बनना पड़ता है—उसी समय से माता के दुःख और अपनी अवस्था को समझ कर सावधानी से चलना पड़ता है—जिसको संपूर्ण रूप से अविवेचक बन कर स्वाधीनता प्राप्त करना नसीब नहीं होता, खुशी के लिए चंचलता दिखाना या दुःख पाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
को बुलाकर उनसे दो चार बात करते ही साहब ने अपने मन में कहा—यह आदमी काम के लायक़ है। पूछा—"काम जानते हो ?" हरलाल ने कहा—"नहीं।" साहब ने कहा—"किसी बड़े आदमी का सार्टीफ़िकेट ला सकते हो ?" हरलाल ने कहा—मैं किसी बड़े आदमी को नहीं जानता।

सुनकर साहब और भी खुश हुए। साहब ने कहा—"अच्छी बात है। पहले तुमको पचीस रुपये मिलेंगे। काम सीख लेने पर तरक्की होगी।" इसके बाद साहब ने पहनावे पोशाक की ओर देखकर कहा—पन्द्रह रुपये पेशगी ले जाओ; आफ़िस के लायक़ कपड़े बनवा लेना।

कपड़े बन गये। हरलाल दफ़्तर जाने लगे। बड़े साहब उन से भूत की तरह काम लेने लगे। जब अन्य क्लर्क घर चले जाते थे, उस समय भी हरलाल को छुट्टी न मिलती थी। कभी कभी उन्हें साहब के साथ उनके बँगले पर भी जाना पड़ता था।

इस तरह काम सीख लेने में हरलाल को देर नहीं लगी। हरलाल के साथी क्लर्कों ने हरलाल को बहकाने की बहुत चेष्टा की—हरलाल के विरुद्ध अफ़सरों के कान भी भरे, लेकिन निःशब्द निरीह हरलाल का कुछ अपकार नहीं कर सके।

जब हरलाल को चालीस रुपये मिलने लगे, तब हरलाल ने अपनी माँ को भी बुला लिया और एक गली में छोटा सा घर किराये पर लेकर रहने लगे।

माता अपने पुत्र से ब्याह करने के लिए अक्सर कहा करती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
थी, किन्तु हरलाल हाथ जोड़ कर कहते थे कि बस, इसके लिए न कहो।

इसके सिवा माता का एक और अनुरोध यह था कि तू दिन-रात जिस वेणुगोपाल की चर्चा किया करता है उसको ज़रा मैं देखना चाहती हूँ।

हरलाल कहते थे—इस गंदे तंग घर में उस बड़े घर के लड़के को कहां बैठाऊँगा? ठहरो, एक बड़ा घर लेने दो, तब उसकी दावत करूँगा।

(७)

हरलाल की तनख्वाह बढ़ने के साथ ही वह छोटी गली से बड़ी गली में और छोटे घर से बड़े घर में जाकर रहने लगे। तो भी न जाने क्यों उन्होंने अधरचन्द्र बाबू के घर जाने या वेणु को अपने घर लाने का कुछ उद्योग नहीं किया।

शायद कभी हरलाल का संकोच दूर न होता। इसी समय खबर मिली कि वेणु की माँ मर गई। सुनकर वह उसी दम अधरचन्द्र के घर पहुँचे।

दोनों छोटी बड़ी अवस्था के मित्र फिर मिले। सूतक के समय भी वेणु के पास हरलाल का आना जाना बना रहा। किन्तु हरलाल ने देखा कि वेणु में अब पहले की बात कुछ नहीं है। वह इस समय बड़ा हो आया है। मसें भीग रही हैं और हर घड़ी वह उन पर हाथ फेरा करता है। चाल-चलन भी रईसों का सा हो गया है। इस समय उसके समकक्ष मित्रों की भी कमी नहीं है। फोनो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
आफ में वेश्याओं के गान सुना सुनाकर इस समय वह इष्ट मित्रों में आमोद-प्रमोद करता है। वेणु इस समय कालेज में पढ़ता है। लेकिन सैकेण्ड ईयर से आगे पढ़ने के लिए उसका कुछ आग्रह नहीं देखा जाता। बाप ने ठीक कर रक्खा है कि ब्याह के बाज़ार में लड़के को खूब चढ़े दामों में बेचेंगे। किन्तु लड़के की माँ जानती और कहती थी कि मेरे लड़के को साधारण लोगों के लड़कों की तरह अपना गौरव प्रमाणित करने के लिए बी० ए०, एम० ए० पास होने का हिसाब न देना होगा—लोहे के सन्दूक में प्रामिसरी नोट क्षय रहें। लड़के ने भी माँ की इस बात को मन ही मन समझ लिया था।

जो हो, हरलाल को यह स्पष्ट मालूम हो गया कि इस समय के वेणु के लिए वह बिलकुल अनावश्यक वस्तु है। रह रह कर उस दिन की बात उनको याद आने लगी जिस दिन मेस में आकर वेणु उनके गले से लिपट गया था और कहने लगा था कि मास्टर साहब, हमारे घर चलो। अब वह वेणु नहीं है, वह घर नहीं है। इस समय मास्टर साहब को उस तरह कौन पुकारता।

हरलाल ने सोचा था कि अब वेणु को कभी कभी अपने घर बुलाकर भोजन करायेगा। किन्तु वेणु को निमन्त्रण करने का साहस नहीं हुआ। एक बार सोचा कि उससे अपने घर आने के लिए कहे। फिर सोचा कि उससे लाभ क्या—शायद वेणु चला भी आवे; किन्तु रहने दो।

लेकिन हरलाल की माँ ने नहीं माना। वे बार बार कहने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
लगी—उस बेचारे की माँ मर गई है। मैं उसे अपने हाथ से पकाकर भोजन कराऊँगी।

अन्त को एक दिन हरलाल अपने विद्यार्थी को निमन्त्रण देने गये। वेणु से कहा—"मैं अधर बाबू से आज्ञा ले आऊँ।" वेणु ने कहा—आज्ञा लेने की कोई ज़रूरत नहीं है, आप क्या अभी तक मुझे वैसा ही बच्चा समझते हैं?

हरलाल के घर वेणु भोजन करने आया। हरलाल की माँ ने स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखकर आशीर्वाद देकर वेणु को भोजन कराया।

भोजन के उपरान्त वेणु ने कहा—"मास्टर साहब, मैं अब जाना चाहता हूँ। दो एक दोस्त घर पर आने वाले हैं।" इतना कह कर जेब से सोने की घड़ी निकाल कर समय देखा और उसके बाद संक्षेप में शिष्टाचार करके बाहर आकर वह अपनी गाड़ी पर सवार हो गया। गाड़ी चल दी।

माता ने कहा—हरलाल, इस लड़के को कभी कभी बुला लाया कर। मुझे वह बहुत प्यारा लगता है। उसकी माँ मर गई है, इससे उस पर दया भी लगती है।

हरलाल चुप रहे। उस मातृहीन लड़के को सान्त्वना देने की उन्हें कुछ ज़रूरत नहीं जान पड़ी। लम्बी साँस लेकर हरलाल ने अपने मन में कहा—बस, अब उसे नहीं बुलाऊँगा। यद्यपि एक समय मैं उसका मास्टर था—किन्तु तो भी पाँच रुपये महीने का एक मामूली नौकर ही था!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक दिन सन्ध्या के समय हरलाल ने दफ्तर से लौट आकर देखा, उसके घर के नीचे के खण्ड में, अन्धकार में कोई बैठा हुआ है। शायद हरलाल को यह मालूम भी न होता कि नीचे कोई बैठा हुआ है, और वे सीधे ऊपर चले जाते, किन्तु दरवाज़े के भीतर पैर रखते ही अतर की सुगन्ध उसकी नाक में भर गई। हरलाल ने पूछा—"कौन है ?" वेणु ने कहा—मास्टर साहब, मैं हूँ।

हरलाल ने व्यग्र होकर कहा—यह क्या मामला है ? यहाँ क्यों बैठे हो कब आये ?

वेणु ने कहा—मुझे आये देर हुई। मुझे मालूम नहीं था कि आप इतनी देर करके दफ्तर से आते हैं।

इस प्रकार अचानक कुसमय में वेणु के आने से हरलाल को कुछ सन्देह भी हुआ। हरलाल ने ऊपर जाकर चिराग़ जला कर कमरे में वेणु को बैठाया और उसके बाद पूछा—सब कुशल तो है ? पढ़ने लिखने की क्या ख़बर है। वेणु के उत्तर से मालूम हुआ कि पढ़ने लिखने में अब उसका जी नहीं लगता। वह कहाँ तक सैकेण्ड ईयर में पड़ा रहेगा। अपने से छोटे लड़कों के साथ पढ़ने में अब उसे लज्जा लगती है। किन्तु अधर बाबू कुछ समझते ही नहीं !

हरलाल ने पूछा—तुम्हारी क्या इच्छा है ?

वेणु ने कहा—मेरी इच्छा विलायत जाकर बैरिस्टरी पास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करने की है। उसके साथ पढ़ने वाला यहाँ तक कि उससे कम तेज़ एक लड़का विलायत जाने के लिये तैयार है।

हरलाल ने कहा—तुमने पिता को अपनी इच्छा जताई है?

वेणु ने कहा—जताई थी। पिता जी कहते हैं कि जब तक तुम बी० ए० पास न कर लोगे, तब तक तुम्हारे विलायत जाने के प्रस्ताव पर मैं ध्यान न दूँगा। किन्तु मेरा मन खराब हो रहा है—यहाँ रहने से मैं किसी तरह आगे पास न कर सकूँगा।

हरलाल चुपचाप सुनते और सोचते रहे। वेणु ने कहा—आज इसी बात पर बाबू जी ने मुझे बहुत बका-झका है। इसी से मैं घर छोड़ कर चला आया हूँ। अगर माँ होती तो कभी यह बात न होती।

यह कहते कहते वेणु की आँखों में आँसू भर आये।

हरलाल ने कहा—चलो, मैं भी बाबू जी के पास चलता हूँ। वहाँ सलाह करके जो ठीक होगा, वह किया जायगा।

वेणु ने कहा—नहीं, मैं वहाँ न जाऊँगा।

हरलाल को यह बात अच्छी नहीं लगी कि बाप से लड़ झगड़ कर वेणु उनके पास रहे लेकिन यह कहना भी कठिन और मनुष्यत्व के विरुद्ध था कि मैं तुमको अपने घर में न रक्खूँगा। हरलाल ने सोचा कि और थोड़ी देर बाद क्रोध शान्त होने पर इसे बहला कर घर पहुँचा दूँगा। हरलाल ने पूछा—तुम भोजन कर आये हो? वेणु ने कहा—मुझे भूख नहीं है; आज मैं न खाऊँगा। हरलाल ने कहा—नहीं, यह भी कहीं हो सकता है!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरलाल ने जल्दी से माता के पास जाकर कहा—वेणु आया है। उसके लिए कुछ खाने को बनाओ।

यह सुन कर हरलाल की माँ बहुत प्रसन्न हुई और जल्दी से रसोई बनाने की तैयारी करने लगी। हरलाल दफ्तर के कपड़े उतार कर हाथ मुँह धोकर वेणु के पास बैठे। जरा खाँस कर कुछ इधर उधर करके वेणु के कन्धे पर हाथ रख कर हरलाल ने कहा—वेणु, यह तुम्हारा काम अच्छा नहीं है। बाप से लड़ कर घर से चले आना तुम्हारे योग्य काम नहीं है।

सुनते ही वेणु खड़ा हुआ और बोला—अगर आपको मुझे रखने में असुविधा हो तो मैं सतीश के घर जाता हूं। इतना कह कर वह जाने के लिये तैयार हो गया।

हरलाल ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—ठहरो, जरा कुछ खा लो, तब जाना।

वेणु ने नाराज होकर कहा—नहीं, मैं न खाऊँगा। यह कहकर हाथ छुड़ाकर वह उस कोठरी से बाहर निकल आया। इसी समय हरलाल के लिये जलपान का सामान, थाली में लिये उधर से हरलाल की माँ आ रही थी। उन्होंने वेणु से कहा—कहाँ जाते हो बेटा? वेणु ने कहा—मुझ को कहा है, मैं जाता हूं।

हरलाल की माँ ने कहा—बेटा, यह भी कहीं हो सकता है! कुछ बिना खाये न जा सकोगे। इतने कहकर उसी बरामदे में हाथ पकड़ कर वेणु को उन्होंने भोजन करने के लिए बैठाया।

वेणु क्रोध के मारे कुछ खाता न था, मिठाई की डली लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
इधर उधर कर रहा था। उसी समय दरवाजे के पास आकर एक गाड़ी रुक गई। पहले एक नौकर और उसके पीछे खुद अधर बाबू बूट मचमच करते हुए सीढ़ी चढ़कर ऊपर पहुँचे। देखते ही वेणु का चेहरा उतर गया।

हरलाल की माँ हट गई। अधर बाबू ने लड़के के सामने आकर क्रोध से काँपते हुए स्वर में हरलाल की ओर देखकर कहा—ठीक है। रतिकान्त ने मुझ से पहले ही कहा था, मगर मैंने उसके कहने पर विश्वास नहीं किया। तुम समझते हो कि वेणु को अपनी मुट्ठी में करके स्वार्थसाधन करूँगा! किन्तु स्मरण रक्खो, मैं तुम्हारी चाल चलने न दूँगा! लड़के को बहला फुसला कर रक्खोगे तो तुमको पुलीस में दे दूँगा और जेल भेजे बिना न छोड़ूँगा। इसके उपरान्त वेणु की ओर देख कर कहा—चल! उठ!

वेणु कुछ उत्तर न देकर उठकर चुपचाप अपने बाप के पीछे चल दिया। उस दिन केवल हरलाल से भी कुछ खाया न गया।

(६)

इसी बीच में हरलाल के दफ्तर के मालिक ने न जाने किस लिए आस पास के देहात से बहुत सा चावल खरीदना शुरू कर दिया। इस काम के लिए हर सप्ताह के शनिवार को सवेरे ही से सात आठ हजार रुपये लेकर हरलाल को बाहर जाना पड़ता था। पैकारों से माल लेकर उसी समय दाम चुका देनेके लिए मुफस्सिल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में, एक खास जगह पर, हरलाल के साहब ने जो एक दफ्तर खोला था वहीं दस और पाँच रुपये के नोट लेकर हरलाल जाते थे। वहाँ रसीद और रजिस्टर देखकर हिसाब मिला कर अगले सप्ताह का काम चलाने भर की रक़म वह छोड़ आते थे। हरलाल के साथ दफ्तर के दो चपरासी भी जाते थे। हरलाल की जमानत नहीं ली गई थी। इसकी चर्चा भी आफिस में चलाई गई थी। किन्तु बड़े साहब ने कहा—हरलाल की जमानत लेने की कोई जरूरत नहीं।

माघ के महीने से इसी तरह काम चल रहा था और चैत तक चलने की संभावना थी। इस काम में हरलाल विशेष व्यग्र थे। अक़सर वे अधिक रात बीतने पर दफ्तर से घर आते थे।

एक दिन इसी तरह अधिक रात बीते लौट कर हरलाल ने सुना कि वेणु आया था। उनकी माँ ने बड़े आदर और यत्न से उसे भोजन कराया। उस दिन बातचीत करने से हरलाल की माँ को वेणु पर और ममता हो गई।

इसी तरह और भी एक दो दिन वेणु आया। हरलाल की माँ हरलाल से यह कह कर आँचल से अपने आंसू पोंछने लगीं कि घर में मां नहीं है, इसी से वहाँ उसका मन नहीं लगता। मैं वेणु को तेरे छोटे भाई के समान—अपने लड़के के बराबर—समझती हूं। उसी स्नेह को पाकर मुझे माँ कहने के लिए यहां आता जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक दिन और वेणु से हरलाल की मुलाकात हुई। उस दिन वह हरलाल से मिलने के लिये बैठा रहा था। बहुत रात गये तक बातचीत होती रही। वेणु ने कहा—बाबू जी का निजाम आजकल ऐसा गया है कि मुझे घड़ी भर भी घर में शान्ति नहीं मिलती। सुन पड़ता है कि अब वे और ब्याह करने की तैयारी में लगे हुए हैं। रतिकान्त बाबू कई जगह से बातचीत लाये हैं उसी बारे में उनसे दिन रात सलाह हुआ करती है। पहले मैं कहीं जाता था और वहाँ देर हो जाती थी, तो बाबू जी व्याकुल हो उठते थे। लेकिन अब अगर मैं दो चार दिन घर न जाऊँ तो उन्हें कुछ भी बेचैनी न होगी। मैं जब घर में रहता हूं, तब ब्याह के बारे में उन्हें सावधान रह कर सलाह करनी पड़ती है; इस से वे घर में मेरा रहना पसंद नहीं करते। यह ब्याह अगर होगा तो मैं फिर घर में नहीं रह सकूँगा। मुझको आप कोई उद्धार की राह बता दीजिये। मैं स्वतन्त्र होना चाहता हूं।

स्नेह और व्यथा से हरलाल का हृदय भर आया। संकट के समय और सब को छोड़ कर वेणु अपने मास्टर ही के पास दौड़ा आया था। यही सोचकर हरलाल को कष्ट के साथ ही आनन्द भी हुआ। किन्तु मास्टर की इतनी हैसियत और शक्ति नहीं कि वह उसका उद्धार करे।

वेणु ने कहा—चाहे जिस तरह हो, अगर मैं विलायत जाकर बैरिस्टरी पास कर आऊँ तो इस विपत्ति से छुटकारा हो जाए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरलाल ने कहा—अधर बाबू जाने भी देंगे ?

वेणु ने कहा—मैं तो कह चुका हूं कि मेरा घर में न रहना ही उन्हें पसन्द है। किन्तु वह लोभी ऐसे हैं कि सहज में विलायत जाने का खर्च न देंगे। कौशल करना पड़ेगा।

हरलाल ने वेणु की विज्ञता देख हँसकर कहा—क्या कौशल ?

वेणु ने कहा—मैं 'प्रोनोट' लिखकर रुपये उधार लूँगा। महाजन जब मेरे ऊपर नालिश करेगा, तब बाबू जी आप मुश्किल में पड़ कर रुपये अदा कर देंगे। उसी रक़म को लेकर विलायत भाग जाऊँगा। वहाँ पहुँच जाने पर लाचार होकर खर्च भी भेजा ही जायगा।

हरलाल ने कहा—तुमको रुपये कौन उधार देगा ?

वेणु ने कहा—आप नहीं दे सकते ?

हरलाल ने विस्मय के साथ कहा—मैं ! इसके सिवा हरलाल के मुँह से और कोई बात नहीं निकली।

वेणु—आप का चपरासी तो थैलियों में बहुत से रुपये और नोट लाया है।

हरलाल ने हँस कर कहा—वह चपरासी जैसा मेरा है, वैसे ही रुपये भी मेरे हैं।

यह कह कर हरलाल ने उन रुपयों का सब हाल कह सुनाया ? बतलाया कि ये रुपये केवल एक रात के लिए मुझ ग़रीब के घर डेरा डालते हैं, सवेरा होते ही जहाँ के तहाँ पहुँच जाते हैं।

वेणु ने कहा—आप के साहब क्या मुझको रुपये उधार नहीं दे सकते ? न होगा, मैं कुछ अधिक सूद दे दूँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरलाल ने कहा—तुम्हारे बाबू जी अगर जमानत दें तो शायद मेरे अनुरोध से भी दे सकते हैं।

वेणु ने कहा—बाबू जी अगर जमानत ही करते तो रुपये क्यों न दे देते?

तर्क यहीं पर समाप्त हो गया। हरलाल अपने मन में सोचने लगे, मेरे पास अगर कुछ सम्पत्ति होती तो मैं सब बेच कर वेणु को रुपये देता।

(१०)

एक दिन शुक्रवार की रात को हरलाल के घर के सामने दो घोड़ों की गाड़ी आकर ठहरी। गाड़ी से वेणु के उतरते ही हरलाल के आफ़िस का चपरासी वेणु को एक लंबा सलाम करके झटपट ऊपर हरलाल को ख़बर देने गया। हरलाल उस समय सोने के कमरे में बैठे हुए रुपयों की विध मिला रहे थे। वेणु सीधा वहीं पहुँचा। आज उसका वेश दूसरे ही ढंग का था। धोती-चादर के बदले पारसी कोट और पतलून और सिर पर कैप थी। दोनों हाथों की उँगलियों में हीरा मोती की अंगूठियाँ चमक रही थीं। एक मोटी सी सोने की जंजीर में पड़ी हुई घड़ी जेब में थी। कमीज़ की कफ़ों में हीरे के बटन भी थे।

हरलाल ने रुपये गिनना बंद करके आश्चर्य के साथ कहा—यह क्या मामला है? इतनी रात को इस वेश में कहाँ?

वेणु ने कहा—परसों बाबू जी का ब्याह है। उन्होंने मुझ से अभी तक छिपा रक्खा है; पर मुझको ख़बर लग गई है। मैंने उन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
से कहा, बाबूजी कुछ दिनों के लिए मैं बारकपुर के बाग में जाकर रहना चाहता हूँ। सुनकर वह खुशी से राजी हो गये। बाग जा रहा हूं अब वहाँ से घर लौट जाने की इच्छा नहीं है। अगर साहस होता तो मैं गंगा डूब मरता।

यह कहते कहते वेणु रो दिया। हरलाल के हृदय में जैसे कोई छुरियाँ भोंकने लगा। एक अपरिचित स्त्री आकर माता के घर, माता के पलँग और माता के स्थान पर जब अधिकार कर लेगी, तब वेणु का स्नेह-स्मृति-मण्डित घर वेणु के लिये कैसा कण्टकमय हो जायगा, यह बात हरलाल को प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगी। वेणु को क्या कह कर धीरज दिया जाय, यही सोचते सोचते हरलाल ने वेणु का हाथ अपने हाथ में लिया। उसी समय हरलाल के मन में यह तर्क उठा कि ऐसे कष्ट के समय वेणु को सजधज करने की कैसी सूझी।

हरलाल को अपनी अंगूठी की ओर ताकते देख कर वेणु ने जैसे उनका भाव समझ लिया। उसने कहा—ये अँगूठियाँ मेरी माँ की हैं! हरलाल की आँखों में आँसू भर गये।

इसके बाद हरलाल ने वेणु से भोजन करने के लिए पूछा। वेणु ने कहा—मैं भोजन कर आया हूँ, आपने क्या भोजन नहीं किया?

हरलाल ने कहा—इन रुपयों को गिनकर आयरनचेस्ट में रक्खे बिना मैं कहीं नहीं जा सकता।

वेणु ने कहा—आप भोजन कर आइए, आप से मुझे बहुत कुछ बात-चीत करनी है। मैं तब तक यहां बैठा हूं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
हरलाल ने कुछ आनाकानी करके कहा मैं अभी भोजन करके आता हूं।

हरलाल चटपट भोजन करके माता को साथ लिये वेणु के पास आए। वेणु ने माता को प्रणाम किया और उन्होंने भी स्नेह-पूर्वक आशीर्वाद दिया। हरलाल से वह सब हाल सुन चुकी थी।

चारों ओर फैले हुए रुपयों के बीच बैठ कर तीनों जने देर तक तरह तरह की बातें करते रहे। एकाएक घड़ी खोल कर समय देख कर वेणु ने कहा—बस अब चलता हूं। नहीं तो रेल छूट जायगी।

हरलाल की माँ ने रात को वहीं रह जाने के लिए बहुत कहा, मगर वेणु न माना। कहा—इसके लिये अनुरोध न कीजिये। आज रात को, चाहे जिस तरह हो, मैं चला ही जाऊँगा। इसके बाद हरलाल से कहा—मास्टर साहब, अँगूठी-घड़ी-चैन वगैरह लेकर बाग़ में जाना ठीक नहीं। आप ही अपने पास ही अपने पास इन चीज़ों को रहने दीजिए, मैं लौट कर ले लूँगा। अपने चपरासी से कहिए; गाड़ी पर से मेरा हैंड बैग ले आवे; उसी में रख दूँ।

चपरासी गाड़ी पर से बैग ले आया। वेणु ने सब चीज़ें उतार उतार कर उसी में रख दीं। हरलाल ने बड़ी सावधानी से उसे आयरन सेफ़ के भीतर रख दिया।

वेणु ने हरलाल की माँ के पैर छूए। उन्होंने स्नेहगद्गद् स्वर से आशीर्वाद दिया। इसके बाद वेणु ने हरलाल के पैर छूए। और किसी दिन उसने इस तरह हरलाल को प्रणाम नहीं किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
था। हरलाल चुपचाप उसकी पीठ ठोंक कर उसके साथ साथ नीचे आये। गाड़ीवान ने लालटैन जलाई। दोनों घोड़े चलने के लिए अधीर हो उठे। कलकत्ते की गैस की रोशनी में आधी रात के समय वेणु को लेकर गाड़ी अदृश्य हो गई!

हरलाल अपने कमरे में आकर बहुत देर तक चुपके बैठे रहे। इसके बाद एक लम्बी साँस लेकर रुपयों को उठा उठा कर थैली में भरने लगे। नोट पहले ही गिन कर थैली बन्द कर सन्दूक के भीतर रख दिये थे।

(११)

आयरन चेस्ट की चाबी सिरहाने तकिये के नीचे रखकर उसी कमरे में हरलाल सो रहे। अच्छी तरह नींद नहीं आई। उसी अवस्था में स्वप्न देखने लगे कि वेणु की माँ परदे की आड़ से तिरस्कार कर रही है। बात कुछ स्पष्ट सुन नहीं पड़ती। हरलाल वेणु को पुकारना चाहते हैं, पर गले से आवाज़ ही नहीं निकलती। इसी समय किवाड़ के फट से खुलने की आवाज़ हुई। चौंक कर हरलाल उठ बैठे। देखा, अन्धकार पड़ा हुआ है। हवा के एक झोंके ने किवाड़ खोल कर लैंप बुझा दिया था। हरलाल के शरीर से पसीना निकल आया। उन्होंने जल्दी से उठ कर दियासलाई खींचकर लैंप जलाया। घड़ी में देखा, चार बजे थे। अब सोने का समय न था। सवेरे ही रुपये लेकर बाहर जाना है।

हरलाल ने उठकर मुँह धोया। माता ने पूछा—क्या बेटा, समय हो गया?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

हरलाल सवेरे माता का मंगल-मुख देखने के लिए उनके पास गये। माता ने आशीर्वाद देकर कहा बेटा, मैं अभी सपना देख रही थी कि तू बहू लाने गया है। सवेरे का सपना क्या झूठ होगा।

हरलाल हँसकर अपने कमरे में चले गये। रुपयों और नोटों की थैलियाँ निकाल कर दूसरे बक्स में रखने का उद्योग करने लगे। एकाएक उनका कलेजा धक सा हो गया। दो तीन नोटों की थैलियाँ खाली थीं! जान पड़ा, सपना देख रहे हैं। थैलियों को सन्दूक पर पटका, उससे थैलियों का शून्य होना अप्रमाणित नहीं हुआ। तब भी वृथा आशा से थैलियों के बन्धन खोल खोल कर उन्हें झाड़ने लगे। एक थैली के भीतर से दो चिट्ठियाँ निकलीं। एक चिट्ठी वेणु के बाप के नाम की थी और दूसरी हरलाल के नाम।

जल्दी से उन्हें खोलकर हरलाल पढ़ने लगे। आँखों के आगे जैसे अँधेरा छा गया। जान पड़ा, रोशनी कम है। वह बार बार लैम्प की रोशनी बढ़ाने लगे। जो पढ़ते थे, वह अच्छी तरह समझ में न आता था। अपनी मातृ-भाषा को जैसे भूल ही गये हों।

चिट्ठी का मतलब यह था कि वेणु तीन हज़ार रुपये के लगभग दस दस रुपये के नोट लेकर विलायत जा रहा है। सवेरे ही जहाज़ छूट जायगा। हरलाल जिस समय भोजन करने गये, उसी समय वेणु ने यह काम किया। उसने लिखा था—"बाबूजी के नाम एक चिट्ठी लिखकर रक्खे जाता हूं। वे मेरा यह ऋण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

चुका देंगे। इसके सिवा बैग खोल कर देखिए गा। उसमें मेरी माँ के जितने गहने हैं, उनका मूल्य तो मुझे ठीक ठीक मालूम नहीं किन्तु यह आवश्यक है कि वे तीन हज़ार रुपये से अधिक क़ीमत के होंगे। माता अगर जीती होतीं, तो बाबूजी चाहे मुझे विलायत जाने के लिए रुपये न देते, पर मेरी माता इन्हीं गहनों को रहेन रख कर मुझको रुपये देतीं। यह मैं सह नहीं सकता कि बाबू जी मेरी माँ के गहने दूसरी स्त्री को दें। इस लिये जिस तरह हो सका, मैं उन्हें ले आया। बाबूजी अगर रुपये देने में देर करें तो इन गहनों को बेच कर या रेहन रख कर आप अपने रुपये ले सकते हैं। यह मेरी माता की चीज़ है इस लिए मेरी ही चीज़ है।" इसके सिवा और भी बहुत सी बातें थीं, पर वे काम की नहीं थीं।

हरलाल कमरे में ताला बन्द करके जल्दी से एक गाड़ी करके गङ्गा के घाट की ओर दौड़ गये। जिस जहाज में वेणु गया है, उसका नाम भी हरलाल को नहीं मालूम। मटिया बुर्ज तक जाने पर हरलाल को मालूम हुआ कि दोनों जहाज़ सवेरे रवाना हो गये हैं। दोनों ही इंगलैंड जाएँगे। किस जहाज़ में वेणु गया है, इसका भी अनुमान करना कठिन है। और उस जहाज़ तक पहुँचने का क्या उपाय है, सो भी हरलाल को नहीं सूझ पड़ता।

मटिया बुर्ज से जब हरलाल के घर की ओर ग :
तब सवेरे का प्रकाश कलकत्ते में फैल चुका था। हरलाल का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
किंकर्त्तव्यविमूढ़ अन्तःकरण एक कलेवरहीन दारुण प्रतिकूलता को प्राणपण से ठेलने की चेष्टा कर रहा था। पर वह तिल भर भी हटाये नहीं हटती थी। घर के सामने आकर गाड़ी ठहर गई। गाड़ीवान को किराया देकर हरलाल अपरिमित निराशा और भय को लेकर घर के भीतर गये।

उनकी माँ घबराई हुई बरामदे में खड़ी थीं। उन्होंने पूछा—बेटा कहाँ गये थे?

हरलाल बोला—माँ, तुम्हारे लिए बहू ढूँढने गया था।

सूखे गले से इतना कह कर हरलाल वहीं मूर्छित होकर गिर पड़े। "अरे क्या हो गया!" कह कर हरलाल की माँ लपक कर पानी का घड़ा उठा लाई और उनके मुँह पर पानी छोड़ने लगी।

कुछ देर बाद हरलाल ने आँखें खोल कर शून्य दृष्टि से चारों ओर देखा, और उठ खड़े हुए। हरलाल ने कहा—माँ तुम घबराना नहीं। मुझे ज़रा अकेले रहने दो। इतना कहकर कमरे के भीतर जाकर हरलाल ने किवाड़ बन्द कर लिये। माता द्वार पर ज़मीन के ऊपर बैठ गईं।

माँ के कई बार पुकारने पर हरलाल ने कहा—माँ, मैं अभी थोड़ी देर में निकलता हूँ—अभी तुम जाओ।

माता वहीं धूप में बैठकर जप करने लगीं।

आफ़िस के चपरासी ने आकर किवाड़ों को धक्का दिया। उसके बाद कहा—चलिए, नहीं तो फिर गाड़ी नहीं मिलेगी।

हरलाल ने भीतर से कहा—आज सात बजे सवेरे की गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
से जाना न होगा।

चपरासी ने कहा—तो कब जाइएगा?

हरलाल ने कहा—सो पीछे बतलाऊँगा।

चपरासी सिर हिलाता हुआ चला गया।

हरलाल सोचने लगे—यह बात किससे कहूँ? यह तो चोरी है। वेणु को क्या जेल भेजूँगा?

एकाएक हरलाल को उस जेवर की बात याद आ गई। अब तक हरलाल को उसका खयाल ही न आया था। जान पड़ा, जैसे एक उपाय निकल आया। बैग खोल कर देखा, उसमें केवल अँगूठियाँ, घड़ी, चैन और बटन ही न थे। ब्रैसलेट, कंठसिरी, मोतियों की माला आदि और कीमती चीजें भी थीं। उनका मूल्य तीन हज़ार रुपये से अधिक होगा। किन्तु यह भी तो चोरी है। यह सामान भी तो वेणु का नहीं है। यह बैग जब तक हरलाल के घर में रहेगा, तब तक उनके लिए विपत्ति का सामना है।

उसी समय वेणु की लिखी चिट्ठियाँ और वही बैग लेकर हरलाल अधर बाबू के घर चले। माँ ने पूछा—कहाँ जाते हो? हरलाल ने कहा—अधर बाबू के घर। फिर माँ ने पूछा—आज बाहर न जाओगे? हरलाल ने कहा—नहीं।

अधर बाबू के घर पहुँचने के पहले ही हरलाल को रोशन चौकी का स्वर सुन पड़ा। किन्तु द्वार के भीतर घुसते ही हरलाल को वहाँ विवाहोत्सव के बीच एक प्रकार की अशान्ति का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
लक्षण दिखाई पड़ा। द्वार पर चपरासी का कड़ा पहरा है। घर के बाहर कोई नौकर चाकर नहीं जाने पाता। सभी के मुख पर भय और चिन्ता का भाव झलक रहा है। हरलाल को खबर मिली कि कल रात को बहुत क़ीमती गहनों की चोरी हो गई है। दो तीन नौकरों पर सन्देह होने के कारण उन्हें पुलिस में देने का उद्योग हो रहा है।

हरलाल ने भीतर दो मंज़िले के बरामदे में पहुँच कर देखा—अधर बाबू आगभभूका बने बैठे हैं और पास ही रतिकान्त बाबू तमाखू पी रहे हैं। हरलाल ने कहा—आपसे मुझे एकान्त में कुछ कहना है।

अधर बाबू ने रोष के स्वर में कहा—तुम्हारे साथ एकान्त में बातचीत करने की फ़ुरसत इस समय मुझे नहीं है। जो कहना हो, यहीं कह डालो।

उन्होंने सोचा कि हरलाल शायद इस समय उनसे सहायता माँगने या कुछ उधार माँगने आये हैं। रतिकान्त ने कहा—अगर मेरे सामने कहने में लज्जा मालूम पड़ती हो तो मैं उठ जाऊँ।

अधर बाबू ने खीझ कर कहा—आ बैठो न!

हरलाल ने कहा—कल रात को वेणु मेरे यहाँ यह बैग रख आये थे।

अधर ने कहा—बैग में क्या है?

हरलाल ने बैग खोलकर अधर बाबू के हाथ में दिया। अधर बाबू ने उसे देखकर कहा—मास्टर और विद्यार्थी दोनों ने मिलकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
खूब कार-बार शुरू किया है ! जानते ही थे कि चोरी का माल बेचने से पकड़े जायँगे, इसी से ले आये हो ? समझते होगे कि ईमानदारी का इनाम पाऊँगा !

तब हरलाल ने वेणु की चिट्ठी निकाल कर अधर बाबू को दी। पढ़ते ही वह आग हो उठे कहा—मैं पुलीस में खबर दूँगा। मेरा लड़का अभी तक बालिग़ नहीं हुआ—तुमने उसे बहका कर विलायत भेज दिया है ! शायद तीन सौ रुपये देकर तीन हज़ार का प्रोनोट लिखा लिया है ! मैं इस ऋण का देनदार नहीं !

हरलाल ने कहा—मैंने उधार नहीं दिया।

अधर ने कहा—तो फिर उसने रुपये कहाँ से पाये ! तुम्हारा ताला तोड़कर चोरी की है ?

हरलाल ने इस प्रश्न का कुछ उत्तर नहीं दिया। रतिकान्त ने कहा—इनसे पूछिए न कि तीन हज़ार रुपये तो बहुत हुए, पाँच सौ रुपये भी कभी आँखों से देखे हैं ?

जो हो, गहनों की चोरी का पता चल जाने के बाद वेणु के विलायत जाने की बात लेकर घर में हलचल मच गई। हरलाल सारे अपराध का बोझ अपने सिर लेकर चुपचाप अधर बाबू के घर से बाहर निकल आये।

जब सड़क पर आये, तब उनका मन जैसे मुर्दा हो गया था। डरने और सोचने की शक्ति उस समय उनमें बिलकुल न थी। इस घटना का परिणाम क्या होगा, इस पर कुछ सोचना भी हरलाल को असह्य हो गया !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
गली में घुसकर हरलाल ने देखा, उनके दरवाजे पर एक गाड़ी खड़ी हुई है। उसे देखते ही हरलाल जैसे चौंक उठे। एकाएक उन्हें आशा हुई कि वेणु लौट आया है। अवश्य वेणु ही है! हरलाल इस बात पर किस तरह विश्वास न कर सके कि इस घटना से उनका सर्वनाश ही हो जायगा।

जल्दी से गाड़ी के पास आकर देखा, गाड़ी के भीतर उनके दफ्तर का कर्मचारी एक साहब बैठा हुआ है! साहब ने हरलाल को देखते ही गाड़ी से उतर कर उनका हाथ पकड़ कर घर के भीतर प्रवेश किया। पूछा—आज बाहर क्यों नहीं गये?

अफिस के चपरासी ने सन्देह करके बड़े साहब से जाकर खबर की थी। बड़े साहब ने इन साहब को भेजा।

हरलाल ने कहा—तीन हजार रुपये के नोट नहीं मिलते।

साहब—क्या हुए?

हरलाल 'नहीं जानता' भी नहीं कह सके। चुप रह गये।

साहब—रुपये कहां रखे हैं, चलो दिखलाओ।

हरलाल उन्हें ऊपर के कमरे में ले गये। साहब ने सब गिन कर इधर उधर हटा कर संदूक के भीतर देखा भाला। इसके बाद वह घर के और और स्थानों में खोज करने लगा। यह सब देख कर हरलाल की माता से नहीं रहा गया। उन्होंने साहब के सामने ही बाहर निकल कर व्याकुलता के साथ पूछा—अरे क्या हुआ हरलाल?

हरलाल—रुपयों की चोरी हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
माता—चोरी कैसे हो गई ? ऐसी घात किसने की ?

हरलाल ने कहा—अम्माँ चुप रहो।

जाँच खतम होने पर साहब ने पूछा—कल रात को इस कमरे में कौन था ? हरलाल ने कहा—कोई नहीं, किवाड़ बन्द करके मैं अकेला सोया था।

साहब ने रुपयों की थैलियाँ गाड़ी पर रखवा कर हरलाल से कहा—अच्छा, बड़े साहब के पास चलो।

हरलाल को साहब के साथ जाते देखकर माता ने सामने खड़े होकर राह रोक ली और कहा—साहब, लड़के को कहाँ ले जाओगे ? मैंने आप भर पेट न खा कर इस लड़के को पाला पोसा और पढ़ाया है। मेरा लड़का करोड़ रुपये की पराई चीज पर भी नीयत नहीं डुला सकता !

साहब कुछ समझ नहीं सके। तो भी बोले, अच्छा, अच्छा।

हरलाल ने कहा—अम्माँ, तुम क्यों घबराई जाती हो ? बड़े साहब से मुलाकात करके मैं अभी आता हूं।

माँ ने उद्विग्न होकर कहा—तूने सवेरे से कुछ खाया पिया भी नहीं। इसका कुछ उत्तर न देकर हरलाल उस गाड़ी पर चढ़ कर साहब के साथ चल दिये।

बड़े साहब ने हरलाल से कहा—सच बताओ, मामला क्या है ?

हरलाल ने कहा—रुपये मैंने नहीं लिये।

बड़े साहब ने कहा—इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। किन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
यह तुमको निश्चत रूप से मालूम है कि रुपये किसने लिये हैं।

हरलाल ने कुछ उत्तर न देकर सिर नीचा कर लिया। साहब ने फिर पूछा—तुम्हारे विचार में किसने ये रुपये लिये हैं?

हरलाल ने कहा—मेरे विचार में मेरे जीते रहते तो कोई उन रुपयों को ले न सकता था।

बड़े साहब ने कहा—देखो, मैं भी इस दुकान का पूरा मालिक नहीं, हिस्सेदार हूं। मैंने तुम पर विश्वास करके जमानत लिये बिना ही अपनी जिम्मेदारी पर यह काम तुम को सौंपा था। दफ्तर के सभी आदमी मेरे इस कार्य के विरोधी थे। तीन हजार रुपये कुछ बहुत अधिक नहीं हैं। किन्तु तुम्हारे कारण मुझे बहुत लज्जित होना पड़ेगा। आज दिन भर का तुमको समय देता हूं। जिस तरह हो सके, रुपये ले आओ! मैं इस मामले को न उठाऊँगा और तुम जैसे काम करते थे वैसे ही करते रहोगे।

यह कहकर साहब चले गये। उस समय ग्यारह बज गये थे। हरलाल जब सिर झुकाकर दफ्दर से बाहर निकले, तब और क्लर्क वगैरह मन में बहुत खुश होकर हरलाल के पतन की आलोचना करने लगे।

हरलाल को एक दिन का समय मिला। लेकिन उससे फल क्या, रुपयों का तो कहीं सुभीता नहीं है। उपाय क्या है, यही सोचते सोचते हरलाल सड़क पर इधर उधर घूमने लगे। अन्त को उपाय की चिन्ता तो बन्द हो गई लेकिन वह बे-मतलब सड़क पर घूमना न बन्द हुआ। जिस कलकत्ते में आकर लोग सुख से रहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं वही कलकत्ता दम भर में हरलाल को एक बड़ी भारी फँसाने वाली कल जान पड़ने लगा। उससे बाहर निकल कर जाने के लिए जैसे कोई राह ही नहीं है। सारा जनसमाज क्षुद्र हरलाल को चारों ओर से जैसे घेरे हुए है। कोई हरलाल को जानता नहीं और किसी को उनसे द्वेष भाव भी नहीं है, तो भी हर एक आदमी उनका शत्रु है। हरलाल ने देखा, लोग पास से निकल निकल कर इधर उधर जा रहे हैं, बाबू लोग दफ्तरों के बाहर निकल कर जल पान कर रहे हैं—किन्तु हरलाल की ओर कोई नहीं देखता। मैदान के किनारे अलसाया हुआ पथिक वृक्ष के नीचे हाथ का तकिया लगाये एक पैर पर दूसरा पैर रक्खे हुआ है। इसी बीच में एक चपरासी एक चिट्ठी हरलाल के सामने करके कहने लगा— बाबू जी, जरा इसका पता पढ़ दीजिए। मानों आज भी हरलाल और अन्य साधारण राह चलने वाले आदमी में कुछ अन्तर ही नहीं। हरलाल ने भी पढ़कर उसे ठिकाना बता दिया।

धीरे धीरे दफ्तरों के बन्द होने का समय हो आया। दफ्तरों से गाड़ियां बड़ी तनख्वाह वालों को ले लेकर उनके घर की ओर जाने लगीं। क्लर्क लोग ट्राम गाड़ियों पर चढ़कर उसके भीतर चिपके हुए थियेटर के विज्ञापनों को पढ़ते पढ़ते डेरों और मकानों को लौटे। किन्तु हरलाल के लिये न आज दफ्तर है, न दफ्तर की छुट्टी है। और न ट्राम गाड़ी पर सवार होकर घर जाने की कोई जल्दी है। शहर का सब काम-काज, घर-मकान, गाड़ी-जोड़ी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
आमोद-प्रमोद आदि कभी हरलाल को उत्कट सत्य के समान और कभी एक दम असार स्वप्न की छाया के समान दिखाई पड़ते हैं। आहार नहीं विश्राम नहीं आश्रय नहीं, तथापि किस तरह वह दिन बीत गया सो हरलाल की समझ में नहीं आया।

हर एक स्थान पर गैस की रोशनी हो गई। मालूम पड़ा, जैसे अन्धकार की ओर अपने सहस्रों क्रूर नेत्र गड़ा कर कोई सतर्क शिकारी दानव चुपचाप बैठा हो। हरलाल ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया कि रात कितनी हो गई है। उनके माथे की नस दुपदुप कर रही थीं, सिर जैसे फटा जा रहा था; देह भर में जैसे आग जल रही थी और पैर आगे नहीं पड़ता था।

दिन भर उत्तेजना, वेदना, और विषाद की अवस्था में हरलाल को माता की सुध नहीं भूली। वह बारंबार मन में अपनी माता को ही पुकारते थे। अन्त को उन्होंने यही निश्चय किया था कि जब रात पड़ जायगी—जब कोई आदमी सामान्य हरलाल को बिना अपराध के अपमानित करने के लिए न जानता रहेगा, तब वह चुपके से माँ की गोद में सिर रखकर सो रहेंगे। उसके बाद हे ईश्वर, नींद खुले ही नहीं! माता के सामने पुलीस के सिपाही या और कोई उनका अपमान करने न आवे इसी भय से वह घर लौट कर न जा सकते थे। जब अपने शरीर का बोझ भी भारी हो गया, तब हरलाल ने एक किराये की गाड़ी बुलाई। गाड़ीवान ने पूछा—कहाँ जाइएगा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
हरलाल ने कहा—कहाँ नहीं। यहीं मैदान में ज़रा देर हवा खानी है।

गाड़ी वान सन्देह करके जाने लगा। हरलाल ने एक रुपया निकाल कर गाड़ीवान के हाथ में रख दिया। वह गाड़ी हरलाल को लेकर इधर उधर घुमाने लगी।

तब थके हुए शिथिल हरलाल ने अपना गर्म सिर खिड़की पर रखकर आँखें बंद कर लीं। धीरे धीरे जैसे हृदय की सारी यन्त्रणा दूर हो चली। शरीर ठंडा हुआ। मन में भी एक गहरी आनन्दपूर्ण शान्ति की झलक पाई जाने लगी। जैसे एक परम मुक्ति ने उनको अपनी गोद में ले लिया। हरलाल दिन भर यहीं सोचते रहे थे कि कोई राह नहीं है, सहायक नहीं है, छुटकारा नहीं है, अपमान का अन्त नहीं है, दुःख की अवधि नहीं है। उनका वह ख़याल जैसे घड़ी भर में ही झूठ ठहर गया। जान पड़ा वह उन का भ्रम मात्र था। उनके जीवन को मिट्टी में मिलाने वाली जो दुर्घटना हो गई थी उसे वह जैसे भूल ही गये। हरलाल को जान पड़ने लगा, मुक्ति अनन्त आकाश में परिपूर्ण है शान्ति की भी कहीं सीमा नहीं है। विश्व ब्रह्माण्ड के किसी राजा महाराजा में भी ऐसी शक्ति नहीं है कि वह हरलाल को वेदना, अपमान और अन्याय में क़ैद करके रख सके। जिस आतंक से उन्होंने अपने को जकड़ रक्खा था, उसका बंधन दम भर में खुल गया।

तब हरलाल अपने बन्धन-मुक्त हृदय के चारों ओर अनन्त आकाश में अनुभव करने लगे कि जैसे उनकी ग़रीब माता देखते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो देखते सर्वत्र अन्धकारमय विराट रूप से बिराजमान हो गई। उनके उस उस उत्तरोत्तर बढ़ते हुए विराट् रूप में कलकत्ते के घर, दुकानें आदि सब लीन हो गईं। उस रूप से आकाश पूर्ण हो गया हवा भर गई। एक एक करके नक्षत्र भी उसी में लीन हो गये। हरलाल के शरीर और मन की सब वेदना, सब चिन्ता, सब चेतन भी धीरे धीरे उसी में लीन हो गई, वह लीन हो गई, गर्म भाफ का बुल्ला एक-दम फट गया। अब न अन्धकार है, न प्रकाश है, केवल एक गहरी परिपूर्णता है।

गिर्जे की घड़ी में टन से एक बजा। अंधेरे मैदान में गाड़ी घुमाते घुमाते खीझकर गाड़ीवान ने कहा—बाबू, घोड़े तो अब चल नहीं सकते—कहाँ जाना होगा, बताइए!

कुछ भी उत्तर नहीं मिला। कोचबक्स से उतर कर हरलाल की दशा देखकर वह समझा सो गये! उसने पहले पुकारा, फिर हाथ पकड़ कर हिलाया। तब भी हरलाल न जागे और न कुछ उत्तर ही दिया। गाड़ीवान ने ध्यान देकर देखा, उनकी साँस बंद थी और हाथ-पैर ऐंठे हुए थे।

"कहां जाना होगा!" उसका उत्तर नहीं मिला।

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

॥ समाप्त ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७. परित्यक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परित्यक्त

धीरे २ सायं हुई और तूफान का वेग भी बढ़ने लगा। मूसलाधार वर्षा हो रही थी। बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक से ऐसा प्रतीत होता था मानो आकाश में देवासुर संग्राम हो रहा हो। काले बादल प्रलयकाल के समान मंडरा रहे थे। गंगा की लहरें क्रोध से उन्मत्त हो रही थीं। नदी के दोनों किनारों पर वृक्ष सांय सांय करते हुए इधर उधर लहरा रहे थे।

नदी के किनारे चन्द्रनगर के एक मकान के बन्द कमरे में, एक पति और पत्नी बातचीत कर रहे थे। बातचीत किसी गम्भीर विषय पर थी। पास ही एक तेल का दिया जल रहा था। शरत नवयुवक था। उसने कहा, "तुम कुछ दिन और ठहर जाती। तब तुम पूर्ण स्वस्थ हो कर वापस घर जा सकोगी।"

किरण बोली, "मैं बिलकुल ठीक हो गई हूं। मुझे विश्वास है मुझे घर जाने में कोई कष्ट न होगा।"

कोई भी विवाहित पुरुष यह समझ सकता है कि यह बातचीत इतनी संक्षिप्त न हुई होगी। समस्या कोई कठिन न थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
लेकिन तर्क वितर्क के कारण कोई निश्चय न हो सका। पतवार-रहित नौका की तरह विवाद इधर उधर चक्कर खाने लगा और अन्त में किरण के आंसुओं में डूबने की नौबत आ गई।

शरत ने कहा, "डाक्टर का कहना है कि तुम्हें कुछ दिन और यहां ठहरना चाहिए।"

किरण बोली, "क्या तुम्हारा डाक्टर सब कुछ जानता है?"

शरत, "हां! तुम जानती हो चारों तरफ बीमारी फैली है। तुम्हारे लिए यहां एक दो महीने और ठहरना लाभकर होगा।"

किरण, "लेकिन यहां पर ही क्या सब कोई ठीक हैं!"

बात कुछ ऐसे थी। किरण को उसके बन्धु-बान्धव, अड़ोसी-पड़ोसी सब प्रेम की दृष्टि से देखते थे। इसलिए जब वह बीमार पड़ी तो सब को अधिक चिन्ता हुई। गांव के बड़े बूढ़ों ने यह निन्दाजनक समझा कि शरत अपनी पत्नी की बीमारी के बारे में इतना शोर गुल मचावे और उसके वायु-परिवर्त्तन के बारे में सोचे। उन्होंने शरत से पूछा कि क्या उसके विचार में आगे कभी कोई स्त्री बीमार ही नहीं हुई और जहां वह अपनी पत्नी को ले जा रहा है वहां के लोग क्या अमर हैं? क्या भाग्य का विधान वहां नहीं चल सकता? किन्तु शरत और उसकी माता ने इन बातों पर कान न धरा। उन्हें उनके प्रिय बन्धु की जान गांव के सारे तर्क और बुद्धिमत्ता से अधिक प्यारी थी। जब किसी निकट बन्धु की जान पर आ बनी हो तो मनुष्य को तर्क नहीं सूझता। सो शरत चन्द्रनगर चला आया। यहाँ किरण ठीक तो हो गई पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
अभी तक [illegible] पीड़ित सा भाव था जिसे देख कर उस पर दया आती थी। और शरत को यह ख्याल कर बहुत रंज हुआ कि कितनी मुश्किल से उसकी जान बच सकी है।

किरण भीड़-भाड़ और आनन्द पसन्द करती थी। नदी के किनारे का यह शान्त और सुनसान भवन उसे पसन्द न आया। यहां कुछ करने को न था और न ही कोई पड़ौसी थे। उसे सारा दिन दवा पीने तथा अपने भोजन की व्यवस्था में लगे रहना, न सोहता था। इस विषय पर, उस भयंकर तूफान वाली शाम को बात चीत चल रही थी।

जब तक तो किरण तर्क करती रही तब तक वाद-विवाद की सम्भावना थी लेकिन जब उसने उत्तर देना बन्द कर दिया और सिर हिला कर दूसरी ओर देखने लगी तब उसके पति को हार माननी पड़ी। इसी समय एक नौकर ने बन्द दरवाजे में से कोई समाचार दिया।

शरत ने उठ कर दरवाजा खोला तो मालूम हुआ कि इस तूफान में एक नौका उलट गई है और उसका यात्री एक ब्राह्मण बालक तैरता हुआ उनके बगीचे किनारे आ लगा है।

किरण एक दम पहले के समान आनन्द पूर्वक काम में जुट गई। उसने उस लड़के के लिए सूखे कपड़े ढूंढ़े, उसे गर्म दूध पिलाया और अपने कमरे ले गई।

उस लड़के के लम्बे घुंघराले बाल थे और बड़ी भाव-पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

आंख थी। [illegible] कोई निशान न था। किरण उसे दूध पिलाने के बाद उससे उसके बारे में सब हाल पूछने लगी।

उसने बताया कि उसका नाम नीलकान्त है और वह एक नाटक कम्पनी में काम करता है। वे एक साथ वाले बंगले में नाटक करने आ रहे थे जब कि उसकी नौका उलट गई। उसे अपने साथियों की हालत के बारे में कुछ पता न था। वह स्वयं एक अच्छा तैराक होने के कारण किनारे तक आ पहुँचा था।

वह बालक उसके साथ रहने लगा। उसके एक भयङ्कर मृत्यु से बचने के कारण किरण को उससे गहरी सहानुभूति हो गई। शरत ने इस बालक के आगमन को अच्छा ही समझा क्योंकि उसकी पत्नी का दिल अब उस बालक में लगा रहेगा और इस प्रकार शायद वह यहां कुछ और ठहर सके। शरत की माता भी एक ब्राह्मण बालक का भला करने का अवसर पाकर प्रसन्न हो उठी। नीलकान्त भी अपने स्वामी तथा मृत्यु से बचने से आनन्दित हो उठा और इस धनवान परिवार में रहने लगा।

किन्तु शीघ्र ही शरत और उसकी माता ने अपनी राय बदल ली और उसके जाने की प्रतीक्षा करने लगे। बालक लुक छिपकर शरत का हुक्का पिया करता था। वह शरत का सबसे अच्छा रेशमी छाता लेकर मूसलाधार वर्षा में गांव में सैर करने निकल जाता और सब किसी से दोस्ती करने लगता। उस ने एक गंदा कुत्ता भी रख लिया था जो शरत के सफेद बिछौने पर गन्दे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
पड़ लगा जाता। उसने अपने भक्त लड़कों का एक खासा बड़ा समूह एकत्रित कर लिया था जिनके कारण उस काल आसपास का एक भी आम पकने न पाया।

इसमें सन्देह नहीं कि बालक को बिगाड़ने में किरण का हाथ था। शरत ने कई बार किरण को चेतावनी दी लेकिन उसने एक न सुनी। वह बालक को शरत के कपड़ों से सजाती और नए कपड़े भी उसे ले देती। और क्योंकि वह उसके बारे में और हाल जानना चाहती थी। वह उसे अपने कमरे में प्राय: बुलाती। नहाने और खाने के बाद किरण दोपहर को अपने बिस्तर पर बैठ जाती और अपने पास पान का डिब्बा रख लेती। जब तक उसकी दासी उसके बालों को सुखाती और कङ्घी लगाती, नीलकान्त उसके सामने खड़ा होकर अपने नाटक के कुछ भाग उसे सुनाता। सुनाते हुए वह आवश्यकतानुसार हाथ आदि हिलाता और उसके घुंघराले बाल इधर उधर खूब लहराते, इस प्रकार दोपहर का लम्बा समय आनन्द पूर्वक बीत जाता। किरण प्राय: शरत को भी पास बैठने को मनाती लेकिन वह न मानता था क्योंकि अब वह नीलकान्त से काफी घृणा करने लगा था। उसकी माता कई बार नीलकान्त से पवित्र पूर्वजों की कथा सुनने के विचार से बैठ जाती लेकिन शीघ्र ही दोपहर की निद्रा उसके धार्मिक प्रेम को आ दबोचती।

शरत कई बार बालक को पीटता और उसके कान ऐंठता परन्तु बालक नाटक कम्पनी में इस से अधिक मार खाने का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदी था अत: उस पर कोई विशेष असर न होता था। बालक ने अपने छोटे से जीवन का यह परिणाम निकाला था कि जिस प्रकार संसार पृथ्वी और जल से बना हुआ है उस ही प्रकार जीवन भी खाना खाने और मार खाने में है और दोनों में से मार अधिक खानी पड़ती है।

नीलकान्त की आयु बताना कठिन था। यदि उसकी आयु चौदह या पन्द्रह वर्ष मानी जाए तो उसके मुख से प्रतीत होता था कि वह अधिक बड़ा है और यदि सत्तारह या अठारह मानी जाय तो ऐसे लगता कि वह इससे छोटा है या उसने यौवन में पदार्पण अति शीघ्र कर लिया था या वह लड़कपन में अधिक देर रहा था। वास्तव में बात यह थी कि जब उसने नाटक कम्पनी में काम करना आरम्भ किया वह बहुत छोटा था। उसे राधा, दमयन्ती और सीता आदि का काम करना पड़ता था इसलिए विधाता ने उसे कुछ ऐसा रचा कि उसका कछ आदि इतना ही बड़ा जितना कि कम्पनी का मैनेजर चाहता था। उसके बाद उसका विकास रुक गया।

क्यों कि हर एक देखता कि नील कान्त कितना छोटा है और क्यों कि वह स्वयं भी अनुभव करता कि वह छोटा है इसलिए उसे अपनी आयु के अनुसार मान न प्राप्त होता। कुछ प्राकृतिक का तथा कृत्रिम कारणों से कई बार तो वह सत्तरह वर्षों से कुछ कम प्रतीत होता और कई बार चौदह वर्षों का छोकरा ही जान पड़ता। और जब उसके मुख पर कोई दाढ़ी मूछ न आई तो यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
गड़बड़ झाला और भी बढ़ गया। हुक्का पीने के कारण या कुछ बड़ों ऐसी भाषा बोलने के कारण उसके मुख पर बड़ों जैसे चिन्ह आ गए थे। किन्तु उसकी बड़ी बड़ी आंखों में अब भी सादगी और बचपन भरा हुआ था। मेरे विचार में उसका हृदय तो अब भी बचपन में ही था किन्तु लोगों की दृष्टि के कारण उसकी बाह्य प्रकृति असमय में ही विकसित हो गई थी।

शरत के शान्त भवन में और चन्द्रनगर के उस बगीचे में प्रकृति ने बेरोक अपना कार्य आरम्भ किया। नीलकान्त एक प्रकार के अप्राकृतिक यौवन में अब तक था। अब उसका विकास शीघ्रता से और चुपचाप उस अवस्था से आगे आरम्भ हुआ। उसके सत्तारह या अठारह वर्ष अब पूर्णतया प्रत्यक्ष हुए। इस परिवर्त्तन पर किसी ने ध्यान न दिया। इसका पता पहले पहल तब लगा जब कि वह बालक समझे जाने में लज्जा अनुभव करने लगा जब एक दिन किरण ने उसे स्त्री का वेष बना कर खेलने को कहा तो न जाने क्यों उसके हृदय को चोट सी पहुँची। सो अब अगर उसे कुछ सुनाने के लिए बुलाया जाता तो वह कहीं जा कर छुप जाता।

नीलकान्त को यह कभी न सूझा कि अब भी वह एक नाटक कंपनी का बालक सा ही है। उसने शरत के मुंशी से कुछ पढ़ना लिखना सीखने का भी विचार किया। किन्तु मुंशी उसे पसन्द नहीं करता था क्यों कि वह किरण का कृपा पात्र था। उसकी दौड़ धूप की आदत भी उसे एक काम पर अधिक देर न टिकने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देती। कुछ ही समय में वर्णमाला के अक्षर धुन्धले पड़ने लगते। वह घण्टों गंगा के किनारे किसी चंपक वृक्ष के सहारे पुस्तक पास रख कर बैठा रहता। नीचे लहरें सांय सांय करतीं, नोकाएं पास से बह जातीं ऊपर पक्षी कलरव करते रहते। जब वह किताब पर देखता तो न जाने क्या भाव उसके हृदय में आते—जिन्हें शायद वही जानता हो। वह कभी भी एक अक्षर से आगे न बढ़ पाता किन्तु इस विचार मात्र से कि वह एक पुस्तक पढ़ रहा है उसे अत्यन्त प्रसन्नता होती। जैसे ही कोई नौका पास से गुज़रती वह पुस्तक उठा कर ज़ोर से पढ़ने लगता। किन्तु श्रोताओं के जाते ही वह भी चुप हो जाता। पहले वह अनायास ही गाने लगा करता था, अब वह गाने उसके हृदय को कभी कभी आन्दोलित करते। गानों के शब्द अलंकारपूर्ण थे किन्तु उनका कुछ विशेष अर्थ न था और जो कुछ थोड़ा बहुत था वह उसे समझ न आता था। किन्तु फिर भी जब कभी वह गाता तो अपने आप को इस संसार से बहुत दूर अनुभव करता। तब उसके इस संसारिक जीवन में से एक प्रकार की लय सी उठती। हंस और राजकुमारी की कथा उसके हृदय पर अत्यन्त मनोहर प्रतिविम्ब डालती। यह कहना कठिन है कि तब वह अपने आप को क्या समझता किन्तु वह नाटक में काम करने वाले निर्धन बालक के अस्तित्त्व को अवश्य ही भूल जाता।

भूखा और गन्दा निर्धन बालक जब शाम को अपने घर में बैठ कर राजाओं और राजकुमारियों की कथाएं सुनता है, तो वही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वस्तुएं उसके प्रत्यक्ष स्वप्नलोक में आ जाती हैं। वह गन्दी तथा अन्धकारमय कोठरी के टिमटिमाते प्रकाश में ही, सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा सौंदर्य देखता है।

इस ही प्रकार घर बार रहित यह नाटक कंपनी का दास अपनी कविताओं द्वारा एक और ही दुनियां में जा पहुँचता। कल कल करती हुई नदी; सांय सांय करते हुए वृक्ष; कलरव करते हुए पक्षी; वह देवी जिसने उसे अनाथ अवस्था में आश्रय दिया; उसका सौंदर्य; उसकी आभूषणों वाली सुडौल बाहें; उसके कमल जैसे चरण—यह सब वस्तुएं मानों जादू से उसके हृदय में एक संगीत भर देतीं। किन्तु जब वह गाना बन्द करता तो यह स्वप्न-लोक समाप्त हो जाता और फिर नाटक कंपनी वाला नीलकान्त और उसके घुंघराले बाल रह जाते। तब शरत बाहर से लोगों कि उसके विरुद्ध शिकायतें सुन कर आता और उसे पीटता। और नीलकान्त फिर अपने अनुयायियों के साथ जल और थल में शरारतें करने निकल पड़ता।

नीलकान्त के आने के कुछ समय बाद ही शरत का छोटा भाई सतीश कालिज की छुट्टियां बिताने यहां आ गया। किरण एक नया संगी पाकर बहुत प्रसन्न हुई। उसकी और सतीश की आयु लगभग एक सी ही थी। उनका समय खेलने, झगड़ने और एक दूसरे को मनाने में बड़े आनन्द पूर्वक बीतता। वह अचानक पीछे से आकर अपने मंहदी रंगे हाथों से उसकी आंखें दबा लेती, या उसकी पीठ पर बन्दर लिख देती, या बाहर से कुंडी लगा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे कमरे में बन्द कर देती और हँसती। सतीश भी यह सब चुपचाप न सहता। वह उसकी चाबिएं या अगूंठिएं चुरा लेता, उसके पानों में मिर्च डाल देता, या छुपकर उसे उसके पलंग के साथ बांध देता।

किन्तु इतने में न जाने बेचारे नीलकान्त को क्या हो गया। वह एक प्रकार का कड़ुआपन अनुभव करने लगा और किसी न किसी पर बदला निकालने कि उसे इच्छा होती। वह अपने अनुयायी दोस्तों को बिना कसूर के पीटता और उन्हें रुला कर भगा देता। अपने पालतू कुत्ते को भी इतना पीटता कि वह चिल्ला चिल्ला कर घर भर देता। जब वह घूमने जाता तो मार्ग भर में किनारे की झाड़ियों के पत्तों तथा टहनियों को अपनी छड़ी से तोड़ता जाता।

किरण हर एक को प्रसन्न देखना चाहती थी। नीलकान्त खाने पीने में बड़ा तेज था और कोई भी अच्छी वस्तु लेने से इन्कार न करता था। सो किरण उसे अपने सामने बैठा कर खिलाती और अच्छे अच्छे व्यञ्जनों से उसे खूब लादती। उसे इस ब्राह्मण बालक को भरपेट खाते देखकर बहुत प्रसन्नता होती। किन्तु जब से सतीश आया था उसके पास पहले जितना समय न था और अब वह बहुत कम बार खिलाने के समय उसके पास बैठती। पहले उसकी अनुपस्थिति का नीलकान्त को कोई फरक न पड़ता था और वह गिलास भर दूध पूर्णतया पीकर ही उठता था।

किन्तु अब यदि किरण उसके पास बैठ कर उसे भिन्न भिन्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
वस्तुएँ खाने का अनुरोध न करती तो उसे बहुत दुःख होता और किसी भी वस्तु का उसे स्वाद न आता। वह थोड़ा खाकर ही उठ बैठता और भरी हुई आवाज़ से नौकर को कह देता कि मुझे भूख नहीं है। वह सोचता कि यह खबर किरण को पहुँचेगी और वह कल्पना करता कि किस प्रकार वह चिन्तित होकर आएगी और उसे खाने को कहेगी। लेकिन ऐसा कुछ भी न हुआ। न तो किरण को यह ज्ञात हुआ और न ही उसने उसे कभी बुलाया। तब वह अपने कमरे में आकर लैम्प बुझा कर अपने बिस्त पर जा गिरता और तकिए में मुंह छिपा कर रोने लगता उसे क्या दुःख था? और किस के विरुद्ध था? किससे वह सहानुभूति की आशा करता था। अन्त में जब और कोई न आता तो निद्रा उस मातृहीन बालक के दुखी हृदय को सहलाती।

नीलकान्त इस दृढ़ निश्चय पर पहुंचा कि सतीश उसके विरुद्ध किरण के कान भरता है। यदि किरण सदा की तरह मुस्करा न रही होती तो वह झट समझ लेता कि सतीश ने किसी चालाकी से उसे गुस्से कर दिया है। पूर्ण हृदय से देवी देवताओं से प्रार्थना करने लगा कि अगले जन्म में वे उसे सतीश बनाएं और सतीश को उसका स्थान दें। वह उस का विचार था कि ब्राह्मण का क्रोध कभी खाली नहीं जाता। जितना अधिक वह उस पर क्रोध करता उतना ही उसका अपना हृदय और जलता। और ऊपर उसे सतीश अपनी भाबी के साथ हंसता सुनाई देता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीलकान्त सतीश से अपना पैर खुल्लमखुल्ला दिखाने का साहस कभी न करता। किन्तु वह छोटे छोटे तरीकों से उसे तंग करता रहता। जब सतीश नदी में तैरने जाता तो आकर अपना किनारे पर रखा हुआ साबुन गायब पाता। एक बार उसने अपनी सब से बढ़िया धारी-दार कमीज को नदी में बहते पाया किन्तु उसने सोचा शायद हवा से उड़ गई होगी।

एक दिन किरण ने सतीश को प्रसन्न करने के लिए, नीलकांत को गाना सुनाने बुलाया। किन्तु वह आकर चुपचाप शोक मग्न सा खड़ा रहा। जब किरण ने आश्चर्यान्वियत होकर पूछा कि क्या बात है तो उसने कोई उत्तर न दिया। किरण ने जब फिर उस पर अपनी कोई प्रिय कविता सुनाने को दबाव डाला तो यह कह कर चला गया कि मुझे याद नहीं है।

अन्त में उनके घर वापस जाने का समय आ गया। हर एक सामान आदि बान्धने में लगा हुआ था। सतीश भी उनके साथ जा रहा था। किन्तु नीलकान्त को किसी ने एक शब्द भी न कहा। उसके जाने या न जाने की किरण को चिन्ता न थी।

वास्तव में किरण ने उसे साथ ले जाने का प्रश्न उठाया था। किन्तु उसके पति, सास और सतीश ने इस बात का इतना विरोध किया कि अन्त में उसे यह विचार छोड़ना पड़ा। जाने से कुछ दिन पूर्व उसने नीलकान्त को बुला भेजा और मीठे शब्दों में उसे अपने घर वापस चले जाने की सलाह दी। इतने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन तक किसी ने उसकी कदर न की थी इसलिये वह आज की यह दया और प्रेम न सह सका और फूट फूट कर रोने लगा। किरण की आंखों में भी आंसू भर आए। किरण को दुख हुआ कि उसने प्रेम का ऐसा नाता स्थापित किया है जो उसे अब तोड़ना पड़ेगा।

किन्तु सतीश इस बड़े से लड़के को देख कर खिजला सा गया और बोला—यह मूर्ख वहां खड़ा क्या चिल्ला रहा है। बोलता क्यों नहीं। जब किरण ने सतीश को उसकी निष्ठुरता के लिए फटकारा तो वह बोला—भाबी, तुम नहीं जानती। तुम अत्याधिक दयालु और अच्छी हो और झट हर किसी का विश्वास कर लेती हो। न जाने यह कहां से आया है और यहां ज्ञाताओं के सामान इसका आदर किया जा रहा है। चूहा कभी शेर नहीं बन सकता और यह भी इसे मालूम है कि एक दो आंसू बहाने से तुम्हारा हृदय पिघल जाता है।

नीलकांत शीघ्रता से वहां से चल दिया। उसको इच्छा हुई कि वह एक तलवार बन कर सतीश के टुकड़े कर डाले या सुई बन कर उसके हृदय में जा चुभे, या आग बन कर उसे जला डाले। किन्तु सतीश पर कुछ भी प्रभाव न था। नीलकांत का अपना हृदय ही जार जार रोता रहा।

सतीश कलकत्ता से एक सुन्दर कलमदान लाया था। कलमदान एक सीपी के रथ में बना हुआ था। जिसके आगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक चांदी का हंस लगा हुआ था। सतीश को यह बहुत प्यारा लगता था और वह रोज उसे रुमाल से साफ करता। किरण हंसा करती और उस चांदी के हंस के साथ खेलती हुई गाती। और इस विषय को लेकर फिर दोनों में बहस छिड़ जाती।

उनके जाने से एक दिन पूर्व वह कलमदान गायब हो गया और कहीं उसका पता न चला। किरण ने हंस कर कहा कि वह हंस राजकुमारी दमयन्ती के पास उड़ गया है।

किन्तु सतीश अत्यन्त क्रुद्ध था उसे निश्चय था कि नीलकांत ने ही उसे चुराया है। क्योंकि कइयों ने कहा था कि उन्होंने नीलकांत को रात उसके कमरे के पास घूमते देखा था। उसने अपराधी को किरण के सन्मुख बुला भेजा। उसने गुस्से से कहा—तुमने मेरा कलमदान चुराया। एकदम उसे वापस करो। नीलकांत को जब भी कभी मारता पीटता तो वह मार चुपचाप खा लेता था लेकिन सतीश ने उसे चोर कहा तो क्रोध से उसकी आंखें जलने लगीं। उसकी छाती फूल उठी और गला भर आया। यदि सतीश एक शब्द भी और कहता तो नीलकांत उस पर जङ्गली जानवर की तरह टूट पड़ता।

किरण को यह देख कर बहुत दुख हुआ और वह नीलकांत को एक दूसरे कमरे में ले जाकर कहने लगी—देखो नीलू यदि तुमने सचमुच ही कलमदान लिया है तो चुपचाप मुझे दे दो और कोई भी तुम्हें कुछ न कहेगा। नीलकांत की आंखों से बड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust
बड़े आंसू गिरने लगे और वह दोनों हाथों में मुंह छिपा फूट फूट कर रोने लगा। किरण कमरे से बाहर आ गई और बोली—मुझे निश्चय है कि नीलकांत ने कलमदान नहीं चुराया। किन्तु शरत और सतीश को भी यह विश्वास था कि यह काम उस ही का है।

किरण ने उनकी बात न मानी।

शरत नीलकांत को स्वयं पूछना चाहता था किन्तु किरण न मानी।

तब सतीश ने कहा कि उसके कमरे और ट्रंक की तलाशी लेनी चाहिए। किन्तु किरण बोली—यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें कभी माफ़ न करूंगी। बेचारे निर्दोष बालक की तुम्हें कदापी तलाशी न लेने दूंगी। कहते कहते उसकी बड़ी बड़ी आंखें आंसुओं से भर उठीं। इसके बाद नीलकांत को किसी ने और कुछ न कहा।

इस घम्बार रहित बालक पर अत्याचार के विचार से किरण का हृदय दया से भर आया। उसने उसके लिए दो नए सूट बनवाए, एक जूता खरीदा और एक नोट लेकर उसके कमरे में गई। वह यह सब वस्तुएं उसके ट्रंक में रख कर उसे आश्चर्यन्वित करना चाहती थी। वह ट्रंक भी उसका ही उपहार था।

अपने चाबियों के गुच्छे से उसने चुपचाप ट्रंक खोला। ट्रंक में चीजें इतनी बिखरी पड़ी थीं कि नए कपड़े समाते न थे। उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

सोचा कि सब वस्तुएँ ठीक प्रकार से रख दे। उसने सब वस्तुएँ निकालीं चाकू, लट्टू, पतंग उड़ाने की डोर, बांस की टहनियाँ, टूटे हुए गिलासों की तहें और इस प्रकार की वस्तुएँ, जो एक बालक को भाती हैं। उसके नीचे कुछ कपड़े थे और सब से नीचे खोया हुआ हंस वाला कलमदान पड़ा था।

किरण कलमदान हाथ में लेकर किं कर्त्तव्य विमूढ़ होकर बैठ गई।

इतने में नीलकान्त चुपचाप कमरे में किरण को बिना ज्ञात हुए आया। उसने सब देखा और समझा कि किरण उसकी चोरी पकड़ने आई है और उसकी चोरी पकड़ी गई है। वह किरण को कैसे समझाए कि वह चोर नहीं है। उसने केवल बदला लेने के विचार से ऐसा किया था और मौका पाते ही वह कलमदान को नदी में फैंक देना चाहता था। क्षणिक कमजोरी में उसने उसे ट्रंक में रख लिया था। उसका हृदय रोकर चिल्ला रहा था—मैं चोर नहीं हूं। लेकिन फिर वह क्या था? वह क्या कह सकता था? कि उसने चोरी की है लेकिन फिर भी चोर नहीं? वह किरण को समझा न सकता था कि वह उसे गलत समझ रही है और फिर वह यह कैसे सहन करता कि वह उस की चोरी देखने आई है।

अन्त में किरण ने ठण्डी सांस ली और कलमदान को वहीं ट्रंक में रख दिया जैसे वह स्वयं ही चोर हो और ऊपर से उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
रुपयों का नोट और बाकी चीज़ रख दी।

दूसरे दिन बालक का कुछ पता न चला। गांव वालों ने उसे कहीं न देखा था और पोलीस भी कुछ पता न लगा सकी। शरत ने कहा कि अब पता लगाने के लिए उसका ट्रंक देखा जाए। लेकिन किरण अब भी न मानी।

उसने वह ट्रंक अपने कमरे में मंगवा लिया और कलमदान बाहर निकाल कर नदी में फैंक दिया।

सारा परिवार घर वापस चला गया। एक ही दिन में वह बाग और भवन उजाड़ हो गए। केवल नीलकान्त का वह मरियल कुत्ता वहां बाकी रह गया। वह नदी के किनारे घूमता रहता और दर्द भरी आवाज से भौंकता मानो उसका दिल टूट गया हो।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

SPS
891.433 R 20 R
15907

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

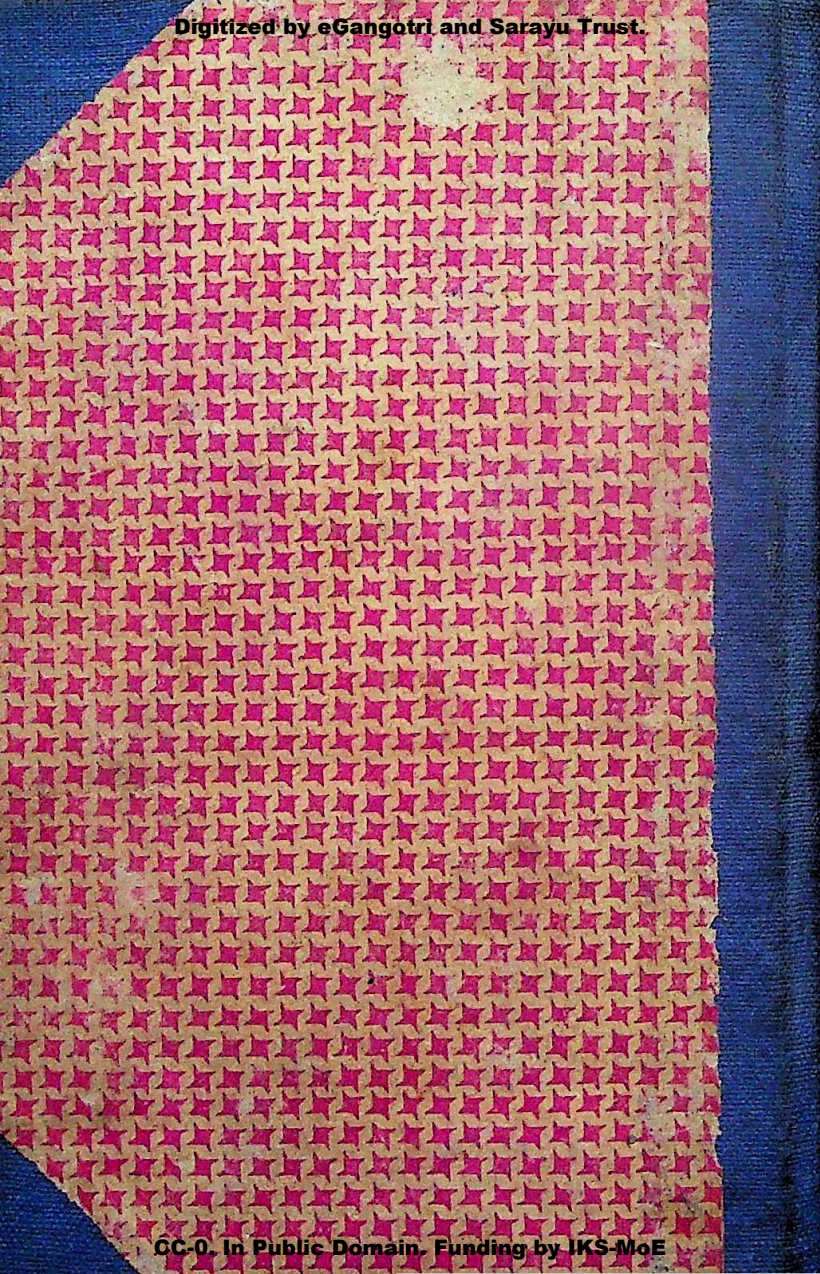

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE